

विजयमुक्तावली

जिसमें

दोहा चौपाई आदि छन्दों में सम्पूर्ण महाभारत का संक्षेप अति उत्तमता से वर्णित है

जिसको

श्रीकविकुलाग्रगण्य श्रीछत्रकविजी ने विज्ञपुरुषों के मनोरञ्जनार्थ अतीव परिश्रमसे निर्मितकिया

प्रथमवार

कानपुर

मुन्शी भगवानदयाल एजन्ट के प्रबन्ध से

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छापीगई ॥

सितम्बर सन् १९१३ ई० ॥

इस मतबे में जितने तरह की क़िस्से की किताबें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं ॥

सहस्त्ररजनीचरित्र ३) पु०

अर्थात् अलिफलैला जिसका उर्दू से पण्डित प्यारेलाल ने नागरी भाषा में उल्था किया—इसमें तसवीरें भी शामिलहैं इस पुस्तकमें एक हज़ार रात्रि का वृत्तान्तहै एक वज़ीरकी बुद्धिमान् लड़की ने मनोहर कहानियाँ बादशाहसे कहकर हज़ार दिनतक अपनी जान बचाई ॥

पद्मावतभाषा ≡)

यह प्रसिद्ध कहानी राजा रत्नसेन और पद्मावतकी है जिसको मलिक मुहम्मद जायसी ने देशभाषा में शेरशाह देहली के वक्त में बनाकर संसार को असत्य और परमेश्वर को सत्य लखाया है कहने को कहानी है परन्तु महासुखदानी है इसका उल्था उर्दू से हिन्दी में लालारघुबरदयाल ने कियाहै ॥

शाहनामा ॥=)

इसका उर्दूसे लालास्वामीदयालने हिन्दी में उल्था कियाहै ॥

राजाभोजकास्वप्न -)

राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द कृत भाषावार्तिक—जिसमें राजा भोजके दान पुण्यादि सत्कर्मों का हाल और उनसे स्वप्न में सत्य से वार्त्तालाप इत्यादि कथा वर्णितहैं ॥



विजयमुक्तावली ।

दो० ॥ विघनहरणतुमहौसदा गणपतिहोउसहाइ ॥ बिनतीकरजोरेकरौं दीजैग्रन्थबनाइ १ ज्यहिकीनोपरपंच सब अपनीइच्छापाइ ॥ ताकोहौंबन्दनकरौं हाथजोरि शिरनाइ २ करुणाकरपोषतसदा सकलसृष्टिके प्रान ॥ ऐसेईश्वरकोहिये रहैरैनिदिनध्यान ३ मेरेमनमें तुमबसौ ऐसेक्योंकहिजाइ ॥ ताते यह मन आपसों लीजै क्यों न लगाइ ४ जागुरुगिरिधरदेवकी सुन्दरदयादेरर ॥ गुंगसकलपिंगलपढ़ैं पंगुचढ़ैंगिरिमेर ५ ब्रजरक्षणभक्षणअनल रक्षणगोधनग्वाल ॥ भुजवरकरवरसुभुजपर गिरिवरधरन गोपाल ६ हरिदीपकमनसदनधरि कपट कपाटउघारि ॥ नशैसकलअघकालिमा छत्रसुदेखिबिचारि ७ ॥ दंडकछन्द ॥ भूमिभूमिआयेकोपिबासवपठाये नभधायेदिशिदिशिनतेबासवतरजपर । मेघकीमरोर महापवनझकोरजोरनीरद निपटघोरघोषसो गरजपर ॥ ऐसेलखिकृष्णनेउठायोगिरिगोबर्द्धन ब्रजकी सहाइकरी करकीकरजपर । राखेसुरपालकेकरालक्रोधतेगुपाल छत्र

हैदयालगोपीग्वालकीलरजपर ८ ॥ सवैया ॥ आनन एककहैनरको चतुराननचारिहुवेदबतावैं । जे ऋषिवृद्ध प्रसिद्धहैंसिद्ध सदामनबांछितसिद्धिजोपावैं ॥ नारद शारद जोवतहैं सनकादिशुकादिसबैगुणगावैं । बंदत ये सबशेशसुरेश दिनेशधनेशगणेशहुध्यावैं ९ ॥ दोहा ॥ जगजननीजगबंदनी जगपावनिसुखकारि ॥ गिराथिरा मतिदीजिये वरणौंग्रन्थबिचारि १० मथुरामंडलमेंबसै देशसदावरग्राम ॥ ऊखलतहांप्रासिद्धमहि क्षेत्रबटेश्वर नाम ११ तामगजनकेपगपरत अघकोलेशरहै न ॥ बिकटजटेसंकटतड़ित डरतसदाशिवनैन १२ सूक्ष्मस्थूल समूलअघ जरेजातदुखशूल ॥ फूलहोतउरमेंतहीं निरखिकलिंदीकूल १३ ॥ सवैया ॥ चंगउपंगमृदंगकहूं सुकहूंध्वनिशंखनकीसुनिये । कहूंऋषिबृद्धप्रसिद्धकहूं कहुँ सोहत साधुमहामुनिये ॥ वेदनिवेदतभेदनिसों कहुँ नृत्यतगावतहैंगुनिये । शूलीबटेश्वरकेत्तणबंदत देतहैं मुक्तिसदादुनिये १४ ॥ दोहा ॥ सुयशसुबसता निकटही पुरअटेरइहिनाम ॥ यज्ञयजनहोमादिव्रत रचतधामप्रतिधाम १५ नगरमनहुँअमरावती बासीविबुधसमान ॥ आखण्डलसोलसततहँ भूपतिसिंहकल्यान १६ कीरति दानकृपाणकी कोबरणैबिस्तार ॥ जययुतसुयशप्रताप सेछायरहीदिशिचार १७ ॥ दण्डकछन्द ॥ बदरबदकलानबंगसोतिलंगछाई छायरहीबंदर में बारिधिकेघाट लौं । मांडूकरकामरूफिरंगरोहीरीहतास छाईहै कमाऊं विधिबंधवकुहाटलौं ॥ गौड़वानौमारवाड़मालवाउड़ीसा छाई छाईहैसुदेशदेश देशहूबिराटलौं । छाईधराकेहरी

कल्यानसिंहकीरतिसो काबिलकलिंगकाशमीरकरनाट-
लौं १८ ॥ दोहा ॥ श्रीबास्तवकायस्थ है छत्रसिंहयह
नाम ॥ बसतभदावरदेशमें गृहअटेरसुखधाम १९ कौरव
पांडवकीकथा तिनसबसुन्योपुरान ॥ ताते भाषाग्रन्थको
कीनोछत्रबखान २० संवतसत्रहसैबरष सप्तबाढ़पंचा
स ॥ शुक्लपक्षएकादशी रच्योंग्रन्थनभभास २१ नाम
विजयमुक्तावली हितकरिसुनैजोकोइ ॥ अष्टादशौपुरा
णको ताहिमहाफलहोइ २२ लसतहस्तिनापुर अवनि
अमरावतीसमान ॥ सुरपतिसोशंतनुतहां चहूंचक्रमें आ
न २३ सायरऋषिकेशापते शंतनुभयोनरेश ॥ भुजवर
करवरस्वर्गवर जीतिलियोबहुदेश २४ ताघरतरुणीसु
रसरी पतिव्रतासुखकारि ॥ प्रजासकलआनंदसोंनिशि
बासरनरनारि २५ बचनसुरसरीयोंलयो शंतनुपैसुखपा
इ ॥ पुत्रहोतमोपूरमें दीजोभूपबहाइ २६ जब यह विधि
करिहौनहीं तबहिं तजौं यहगेह ॥ जौलौंबचननदृढ़रहौ
तौलौंतजौंननेह २७ सप्तपुत्रनृपकेभये दीनोंगंगबहाइ ॥
अष्टमभेगांगेयतब भूतलजनमेआइ २८ ॥ दोधकछंद ॥
भूपतियोंमनमाहिंबिचारी । कौनलहैनृपताअधिकारी ॥
पुत्रभयेसबगंगबहाये । मंत्रीसबनृपशोधिबुलाये ॥ बात
सबैभुवभूपबखानी । मंत्रकहाकरियेसुखदानी ॥ जोबर
जौंगृहगंगनरैहैं।पुत्रहिराखतपूरसमैहैं २९ (मंत्र्युवाच)
राखियपुत्ररहैनृपताई । गंगरहैनृपकेगृहजाई ॥ मंत्रसु
नोयहभूपतिभायो । सोचलिकैत्रियपैतबआयो ३० (श
न्तनुरुवाच) दैसुतगंगअबैइकमोहीं । मांगतहौंहितसों
यहतोहीं ॥ लैत्रियपुत्रतबैकरदीनो । चंद्रसोआननरूपन

वीनो ३१ ॥ दोहा ॥ पतिसोंकहिपूरबकथा रहीसमाय
प्रवाह ॥ महादुःखनृपकोभयो चकितचित्तनरनाह ३२॥
नगस्वरूपिणीछन्द ॥ भयोनरेशकोमहा । सोदुःखहौंकहौं
कहा ॥ महीपदेखियेइसों । निशाबिनाशशीजिसों ३३
(मंत्र्युवाच) नभूपशोककीजिये । सोपुत्र देखिजीजिये॥
अनेकभांतिपारिये । सोईशतासुधारिये ३४॥ दोहा ॥
बीतेबासरजबघने तबगांगेयकुमार ॥ अस्त्रशस्त्रविद्या
पढ़ी सीखेमन्त्रअपार ३५ भूपतिशंतनुएकदिन गयोअ
खेटकेकाज ॥ सघनबिपिनसरितानिकट लैप्रियलोगस
माज ३६ केवटतनयाशशिबदनि योजनगंधानाम ॥ नि
रखिरूपमोहितभयो बिज्जुलतासीबाम ३७ अतिआस
क्तभयोनृपति केवटलियोबुलाइ ॥ देहुमोहिंअपनीसुता
मनवचक्रमसुखपाइ३८(केवटउवाच)तुमपृथ्वीपति भूप
हौं नीचजातिमल्लाह ॥ आपहिकहौंविचारिकै केहिंविधि
होइबिवाह ३९ तौबिवाहतुमकोकरौं जो यह मांगेदेहु ॥
नृपतायाकोसुतलहै करौंआपकरिनेहु ४० ॥ चौ० ॥ यह
सुनिराजामनबिलखानो । गृहतनकोतबकियोपयानो ॥
अबसोईहौंकहौंबिचार । योजनगंधाकोअवतार ४१ पारा
शरमुनिबनपगुधस्यो । तरुणीवचनप्रकटयोंकस्यो ॥ किती
बरषबनजैहैबीती । कहुसंतानिहोइकिहिरीती ४२ (पा
राशरउवाच) चौ० ॥ ऋतुवंतीह्वै जबहींन्हाई । शुकदी
जैमोपासपठाई ॥ ध्यानउमँगिकंद्रपढरकाऊं । शुककर
दैतुवपासपठाऊं ४३ तुमजलमेलिकीजियोपान । इहि
संयोगहोइअवधान ॥ यहकहिकैमुनि विपिनसिधाये ।
तपहितमहाबिपिनमेंआये ४४॥ दोहा॥ ऋतुवंतीमज्जन

कियो शुकपठयोपतिपास ॥ पहुँच्योपाराशरनिकट तब हीं छाँड़ि अवास ४५ ॥ चौ० ॥ देखतध्यानऋषीश्वरध र्यो । मनमथिमदनतबैजलढर्यो ॥ धर्योपत्रमेंशुककर दयो । ऋषिनीहितसोंलीनेगयो ४६ आयोसरितानि कटसुकीर । गिर्योमदनजलअँचवतनीर ॥ एकमीनसो कीनोपान । ताकोप्रकटभयोअवधान ४७ शेषरह्योसो तबहींलयो । ऋषिनीपासकीरलैगयो ॥ जाबिधिसोंकहि गयेमुनीश्वर । सोबिधिकीनीत्रियतिहिअवसर ४८ दोहा॥ बीतेपूरणमासतब गर्भमुच्योत्यहिकाल ॥ भयोपुत्रकबि छत्रकहि उरआनंदतिबाल ४९ ॥ त्रोटकछंद ॥ उतमी नहिंपूरणगर्भभयो । चलिकेवटतासुशिकारगयो ॥ लहि मीनसुगेहगयोजबहीं । निकसीतनयातेहिगर्भतहीं ५० चपलाजनुसोहतदेहधरे । रतिमानहुँ अद्भुतरूपकरे ॥ दिनकोटिकताकहँबीतिगये । कुलधर्मसबैहितकैसिखये ५१ ॥ दोहा ॥ नामसुतामत्स्योदरी करति आप कुल धर्म्म ॥ पथिकउतारतिआपगा करिमलाहके कर्म्म ५२ कीनो द्वादशवर्षतप पाराशरमुनिआइ ॥ निरखिरूपम- त्स्योदरी गिर्योपुहुमिअकुलाइ ५३ निरखिनिरखिआस क्तह्वै कहीबात मुनिराय ॥ मोहिंतोहिं मृगलोचनी सुरति होइसुखपाय ५४ (मत्स्योदरी उवाच) सुंदरीछंद ॥ बातअबूझितस्योकहिआवहि ॥ क्योंकहिआप कलङ्क ल- गावहि ५५ (ऋषिरुवाच) दैरतिकैलहिशापअबै त्रिय। नाहिंरह्योकछुधीरजमोहिय ॥ त्रासभयोसुनिताडरमें अ- ति। जानिनजायकछूविधिकी गति ॥ आतुरह्वैऋषिराज दईरति । ताहिप्रसन्नभयोसुमहामति ५६ ॥ दोहा ॥ तुव

तनकीदुरगन्धता नशिजैहै सुनुबाल ॥ होइसुगंधशरीर को योजनलौं सबकाल ५७ लखैनकोऊगर्भतुव जाहु अनंदितधाम ॥ होइहैपुत्रप्रसिद्धमहि तीनभुवन ज्यहि नाम ५८ ॥ चौ० ॥ यहकहिकैऋषिगृहकोगयो । प्रकट गर्भतात्रियकोभयो ॥ लखैनकोऊताहिअवास । लीनो जन्ममहाऋषिव्यास ५९ बनउठिचल्यो जनमिऋषि राई । अतिहितबचनकह्यो सुनुमाई ॥ जहँसुधिकरै तहां चलिआऊँ । तेरोकठिनकलेशमिटाऊँ ६० लख्यो न काहूसोब्योहार । ज्यहिविधिलीनो ऋषिअवतार ॥ योजन गन्धाइहि बिधिभई । परमरूप बिधनानिरमई ६१ ॥ दोहा ॥ ताकोशंतनुदेखिकै गृहआयेनरनाथ ॥ कुम्हिलानोआननमहाधीरजरह्योनहाथ६२ (गांगेयउवाच) कौन हेतनृपमलिनहौ कहौपितासोकाज ॥ पाऊंआज्ञारावरी कहौसोसारौंकाज ६३ (राजोवाच) जबतेसुतगङ्गागई बीतींबर्षैंसात ॥ छिनछिनबीततबर्षसम युगभरियामबिहात ६४ ॥ चौ० ॥ त्रियबिनधर्मकर्मनहिंहोई । नहिंनर लहैबड़ाईकोई ॥ धनसम्पति लागै नहिंनीकी । ताबिन सकलबस्तुहैंफीकी ६५ ॥ दोहा ॥ योजनगन्धाकीनृपति सबबिधिकहीबखानि ॥ देतनहींअपनीसुता करै न केवट कानि ६६ चलिगांगेयगयेतहां ताकेवटके पास ॥ देहु सुताभूपालको कीनोवचनप्रकास ६७ (केवट उवाच) होइराजयापुत्रको तौहौंकरौंबिवाह ॥ मनसाबाचाकर्म्मना बचन देहिं नरनाह ६८ ॥ चौ० ॥ तबगांगेय बचन योंकहै । तुवतनयासुतनृपतालहै ॥ करौंबिवाहनत्रिय संग्रहौं । सत्यबचनहौं तोसोंकहौं ६९ मेटहि बचन सु

नरकहिजाई । करौंसेवहौंजानौंमाई ॥ साधुजानितबयह
पितुमानी । आयेब्याहननृपबरदानी ७० करिबिवाह
लैत्रियहिसिधाये । तबहीं भीषमनिकटबोलाये ॥ तैंअ
तिसुखदीनोहैमोहीं । हौंप्रसन्नदीनोंबरतोहीं ७१ ॥
सवैया ॥ मीचबोलायेबिनानहिंआयहै चाहेबिनामरिहै
नहिंमाख्यो । तेरेननिष्फलजाहिंगेबाण टरैगोनहींरणका
हूकोटाख्यो ॥ तोसोंतुहीसरिऔरनहीं उरअंतरकोसब
शोचनिवाख्यो । धन्यघरीजिहिजन्मलियो भुवधन्यतु
पुत्रपितापनपाख्यो ७२ ॥ दोहा ॥ सुनिशंतनुकेबचनये
भीषमजीसुखपाय ॥ मातुपिताकीभक्तिअति करिली
नीमनलाय ७३ ॥

इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्र
विरचितायांव्यासावतारवर्णनोनाम
प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

त्रोटकछन्द ॥ नृपशंतनुकेसुतदोयभये । शुभनाम
सुचित्रबिचित्रठये ॥ गुणज्ञानकृपानसबैसिखये । दिन
सीखतकर्म्मसुधर्म्मनये १ बहुभूपतिकेमनमोदभयो ।
छितिमेंयशभूपतिभूपलयो ॥ इहिभांतिकितेदिनबीतिग
ये । सबबासरआनँदमेंबितये २ ॥ दोहा ॥ आयुभु
गुतिनरनाहतब बासलयोहरिलोक ॥ पुत्रकलत्रकुटुंब
को उरबाढ्योबहुशोक ३ सुरसरिसुतसमभायशवाक्रिया
कर्मसबकीन्ह ॥ जेठसुततबचित्रको राज्यभारशिरदी
न्ह ४ बहुऋषिराजनबोलिकै कस्योराजअभिषेक ॥ स
बपरिवारप्रजानको आनँदबढ्योअनेक ५ ॥ सोरठा ॥
काशिराजकेगेह हुतींसुतादुइइन्दुमुखि ॥ इकअंबाअंबे

हमृगनयनीचम्पकबरणि६॥ दोहा ॥ अंबादीन्हीचित्रको करिबिवाहकोचार ॥ अरुअंबेहविचित्रगृह भईसकलसु खसार७॥ सोरठा॥ बाढ्योगर्ब्बअपार अपनीनृपसंपति निरखि। सकलसहजभंडार बरणिकहांलौकविकहै ८ ॥ चौ० ॥ निशिदिनराजनीतिबिसराई। रचेकुकर्मनिके सबभाई ॥ कुलकोसकलधर्मनशिगयो। बहुसंदेहमात उरभयो ॥ जान्योजबहिंराजकोनास। योजनगंधासुमि रैव्यास ९ आइगयेतबहींऋषिराई। धाइजननिकेबन्देपा ई १० (योजनगंधाउवाच) यद्यपिमोसुतपायोराज। करै नराजनीतिकेकाज ॥ ऐसोकछुकीजैउपदेश। राजनीति मतचलैनरेश ११ (व्यासउवाच) दोहा॥ सुनुमातातो सोंकहौंराजनीतिसमुझाय॥ सोशिषदीजैसुतनकोसुयश रहैघरछाय १२ दिनप्रतिव्यासकहैंकथा राजनीतिसब धर्म॥ चित्रनृपतियहबातसुनि मनमेंबस्योकुकर्म १३॥ को यहद्विजमातानिकट बैठतनिशिदिनआइ ॥ ताकोह तनबिचारिकै गुप्तभयोतहँजाइ १४॥ गीतिकाछन्द॥ आ यकैऋषिव्यास मातानिकटबैठिकथाकहै। सुनतपाराशर सुतासुतवचनदीरघदुखदहै ॥ मायकहिकहिराजनीतिहि सकलविधिसोंउच्चरै। पुत्रकहिबूझैजननिइहिभांतिश्रवण कथाकरै १५॥ अर्द्धनिशिबीतीजहांऋषिव्यासपगगृहको धस्यो। निरखियहविधिचित्रनृपतबबचनतिनसोंउच्चस्यो॥ हेमहाऋषिरायतुमसब भांतिबुद्धिप्रवीनहौ। लोककीपर लोककीसबवेदविधिसोंलीनहौ १६॥ भयोमनसापाप जा कहँसोकहौक्योंउद्धरै। देहुबुद्धिनिधानशिक्षाकाजकैसेकै सरै॥ व्याससाधअगाधमतितबबचनतिनसोंभाखियो।

कहौंतोसोंबिधिसबै मनमाहिंहितकरिराखियो १७॥ दोहा॥ चन्नदल्लद्रुमकोखंडिकै तामेंअग्निप्रजारि॥ धूम घूटिप्राणनतजे सबअघडारैबारि १८ सीखलईसोपैसोई सोईकियोउपाय॥ धूमघूटितिहिभांतिही गयेदेवपुरराय १९॥ त्रोटकछंद॥ यहिभांतिनरेशबिलोकितबै। बहुदीन भयेनरनारिसबै॥ तबमातमहाउरदुःखभयो। उड़िमानहुं भीषमप्राणगयो २० तवभूपतिभूमिबिचित्रकर्यो। बिधि सोंशिरऊपरछत्रधर्यो॥ बरणोंनृपके सबकर्म्मकहा। सु अखेटकसोहितआहिमहा २१ यकद्योसगयोअतिहीबन में। भयनाहिंकछूनृपकेमनमें॥ उठिसिंहतहांनरनाहह यो। प्रियलोगनिकेअतिदुःखभयो २२॥ दोहा॥ सबसाथिनपुरमेंकही बनमेंबीतीबात॥ शोकयुक्तमाता भई अतिभीषमपछितात २३ तबहींमाताचित्रकी सु तहितबहुदुखपाय॥ हितकै अरु अतिमोहकै भीषमलये बुलाय २४ (रानीउवाच) चौ०॥ नृपबिनपुरबासि नकेशंका। ज्योंदशशिरबिनसूनीलंका॥ अबस्वइका जकरौंजगदीश। राजभारसुततेरेशीश २५ प्रजापा लियेसुतज्योंमात। राखौराजजोबूड़ेउजात॥ नामनृ पतिशंतनुकोरहै। भीषमसोंयोंमाताकहै २६ (भीष मउवाच) मातासत्यहियेमेंराखौ। सत्यहिछांड़िअ सत्यनभाखौ॥ नृपताकरौंनतरुणीकरौं। तुवसेवानि शिदिनउरधरौं २७ (रानीउवाच) दोहा॥ भयो राजसंदेहउर कीजैकहाउपाय॥ प्रकटीभीषमसोंकथा लज्जायुतअकुलाय २८ पाराशरसंयोगते भयेब्यासअ वतार॥ बरणिसुनायोभीषमहिं बिधिसोंसबब्योहार २९

जन्मतकाननको गयो ब्यासमहाऋषिराय ॥ ताही
क्षणमोसनकह्यो वचनपरमसुखपाय ३० जहांकछू
संकटपरै कष्टहोइकछुआय ॥ सुमिरतहीतहँप्रकट ह्वै डा
रोंसकलनशाय ३१ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ भीषमयों सुनि
सुक्खभयोमन । बैनकहेउहितवन्ततत्तक्षन ॥ मातुबुला
वहुताऋषिराजहि । दुःखदहैसबकारजसाजहि ३२
भीषमकोअनुरागरहेउचित । ब्यासतहांसुमिरेकरिकै
हित ॥ शोभितआपकियोऋषिसोंबल । जटाकसे
करदण्डकमण्डल ३३ बन्दतुहैंपगमातुमहामति ।
भीषमकेउरसुक्खभयोअति ॥ बातबिचारिकहीसगरी
गुनि । राजचलैक्यहिभांतिमहामुनि ३४ (श्रीब्यासउ
वाच) चौ० ॥ एकउपायकरौंजोमाई । तौसंतानप्रकट
होआई ॥ चित्रबिचित्रनृपतिकीनारी । होइँनगनसब
बस्तरडारी ३५ मोआगेआवैंतजिलाज । देहुँअशीश
होइसबकाज ॥ हौंतपसीनहिंचित्तबिकार । तातेजनि
कछुकरौबिचार ३६ रानीगईमहलमेंधाय । पुत्रबधुनसों
बिनयोजाय ॥ उनसुनिबातअचंभवकियो । कैसोहैमा
तासवहियो ३७ ॥ दोहा ॥ इहिबिधिआगेजेठकेकाढ़ैकुल
कीबाल ॥ ऐसीकौननिलज्जत्रियकरैजुकर्मकराल ३८ ॥
चौ० ॥ रानीकहिसमुझाईबाला । भईनगनवहताही
काला ॥ चहुंधाकेशदेहपरढारि । नैनमूंदिकैअंबानारि
३९ आईसोसामुहेऋषीश । ह्वैप्रसन्नऋषिदईअशी
श ॥ यहिविधिकेऋषिबोलेबैन । होइअन्धसुतलहैनैन
४० फिरिरानीअंबैपैजाई । लैआईताकोसमुझाई ॥ ति
नहूँबसनदियेसबडारि । अंगमृत्तिकालाईनारि ४१

(ब्यासउवाच) दोहा॥ पांडुपुत्रयागर्भते ह्वैहैबहुसुख
कार॥ सूतिकालाईअंगइनि भेदकह्योनिरधार ४२
बांछितफलमातहिंदयो गेहगयोऋषिराइ॥ चित्रबिचि
त्रत्रियानके गर्भभयेसुखदाइ ४३॥ सुंदरीछंद॥ पूरण
मासभयेतिनकेजब। मातनिकेउरसुक्खबढ़्योतब॥ अंध
भयेसुतचित्रकिनारिहि। पांडुबिचित्रबधूसुखकारिहि
४४ तापरहूनिशिदुंदुभिबाजत। धुनिसुनिकेमघवाज
नुलाजत॥ मंगलचारसखीसबगावहिं। भांतिनभांतिअ
नन्दबढ़ावहिं ४५ भीषमकर्म्मबिचारकियेसब। दीनगु
नीकहँदानदियेतब॥ बीतिगयेयहिभांतिकछूदिन। बा
ढ़तआनँदहैछिनहूँछिन ४६ भाटतहांबिरदावलि गाव
त। वारनअश्वसमूहनपावत॥ पण्डितआयतहांगुन
सागर। नृत्यतहैंबहुधानटनागर॥ प्रमुदितनगरनारि
नरभारी। सुखभुजतननिसकलसुखकारी ४७॥ दोहा॥
कोबरणैआनन्दको सुक्खसमूहाबिलास॥ जबहींफिरिसु
मिरेजननिआयगयेऋषिब्यास ४८ (योजनगन्धाउवा
च) तुमप्रसादतेपुत्रद्वै प्रकटभयेयहिगेह॥ आशिषदेहु
उदारह्वै मोमांगेसुतदेह ४९ (श्रीब्यासउवाच) बिना
बसनयहिभांतिही आवैमोतटबाल॥ आशिषदेहुँउदारह्वै
ताकोतेहीकाल ५० आनीदासीनगनकरि योजनगन्धा
माइ॥ करतिकटाक्षनलाजउर मन्दमन्दमुसकाइ ५१॥
चौपाई॥काशिराजकीसुतानहोई। यहमातादासीहैकोई॥
याकेगर्भहोयसुतएक। बिष्णुभक्तअरुज्ञानअनेक ५२
दैआशिषतबहीं ऋषिगयो। प्रकटगर्भदासीकेभयो॥ पु
त्रस्वरूपतबैअवतर्‍यो। नामबिदुरऋषियोंउच्चर्‍यो ५३

तीनोंशिशखेलैंइकसङ्ग। लखिसुखउपजतमातनिअङ्ग॥ लरैंभिरैंखेलैंयहिरीति। केतेबर्षदिवसगेबीति५४॥सो०॥ भीषमसकलसमाज बोलेबुधजनज्योतिषी॥ दयोअन्ध कोराज तिलकशीशाशिरछत्रधरि॥ ५५॥ दोहा॥ राजनी तिमारगुथप्यो भीषमबुद्धिनिधान॥ सुबसबासचारोंब रण आपधर्म्मयुतज्ञान॥ ५६॥ विजयकरनकोतबसज्यो भीषमदलचतुरङ्ग॥ जीतेअरिपुरजायकै लखिसुखउप ज्योअङ्ग॥ ५७॥ चौपाई॥ एकनृपतिपैलीनोदण्ड। पा टननगरजीतिबहुखण्ड॥ एकनृपतिअपनेकरथापै। ब हुतनरेशमहाभयकांपै॥ ५८॥ दोहा॥ भीषमकरिकैंदि गबिजय आयेअपनेगेह॥ पांडुअन्धधृतराष्ट्रसों दिनदि नबढ्योसनेह ५९॥ चौपाई॥ अंधरायकीचलैदोहाई। सबबिधिकरैपांडुनृपताई॥ यहिबिधिसुखबीतेबहुकाला। रहतयथाक्रमतहँभूपाला ६०॥

इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्र
विरचितायांधृतराष्ट्रपांडुविदुरजन्मवर्णनो
नामद्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

दोहा॥ सुबसभूमिकनवजपुरी चारिबरणकीभीर॥ गन्ध्रबरायमहीपतहँ परमशीलगम्भीर॥ १॥ सोरठा॥ सुरपतिगन्ध्रबराज अमरपुरीकनवजनगर॥ पुरजनवि बुधसमाज दूजोसरिदीजैकहा॥ २॥ दोहा॥ ताकेदुहि ताशशिमुखी गन्धारीयहनाम॥ शचीकिधौंहैइंदिरा कैम नसिजकीबाम॥३॥ अन्धरायकोथापिकै दीनीलगनपठा य॥ करिबिवाहकोचारुसब मङ्गलचारकराय॥ ४॥ पुनि भीषमआनन्दयुत आयेसाजिबरात॥ अन्धरायदूलह

बने सुखसमूहसरसात ५ बिनलोचनकोपतिसुन्यो गंधा
रीदुखपाय ॥ सखीआपनीसोंकही यहसबबिधिसमुझाय
६ कोमेटैबिधिकोलिख्यो पायोपतिबिननैन ॥ सोईप्र
भुहैंप्राणपति सत्यकहौंसुनुबैन ७ ॥ चौपाई ॥ तबहीं
योंगन्धारीकहै । परमपतिव्रतमोउररहै ॥ कैसीतरुणी
वेजगमाहीं । पतिकेदुःख आपदुखनाहीं ८ गुरुदेवता
आपपतिजानैं । ताकीआज्ञानिशिदिनमानैं ॥ पगनदे
हिंपतिशासनभंग । रचैंपतिव्रतकेजोरंग ९ शुभगति
तिनकीकरताकरै । तबगन्धारी योंअनुसरै ॥ अन्धरा
यपतिकेदृगहैन । लैपट्टीतिनबांधेनैन १० ॥ दोहा ॥
जोबिधिदोऊकुलनकी ब्याहभयोतिहिरीति ॥ कन्यादै
दासीदई भूषणबसनसमीति ११ ॥ नाराचछन्द ॥
मतंगऔरतुरंगशूर साजिसाजिसाजियो । अनेकभांति
दायजो अशेषबस्तुकोदियो ॥ श्यामश्वेतनीलपीत आ
सनेबिछावने । दयेसुवर्णमालमुक्त राजतेघनेघने १२
बिवाहकैनरेशआप गेहकोसिधारियो । दरिद्रहीनदी
नके सबैनशाइडारियो ॥ गीतनादठौरठौर सुक्खसोंघने
घने । उपंगचंगदुन्दुभीनि भेरिबृन्दकोगने १३ ॥
दोहा ॥ कहीनृपतिधृतराष्ट्रयह भीषमसोंसमुझाइ ॥
करोंपांडुकोब्याहअब उत्तमठौरशुधाइ १४ (भीषमउवा
च) नगरनिरखिनावलिबनी मधिनायककुतवार ॥ कुं
तलराजबखानिये तहांभूमिभरतार १५ शूरसेननृपकी
सुता हितकैआनीगेह ॥ जन्मकालकेकर्मसब कीनेस
हितसनेह १६ नामधर्योकुन्तीतहां सकलबुधीशबुला
य। दिनदिनदुहिताइन्दुमुखि अतिद्युतिसोंसरसाय १७

द्वादशबीतेंबर्षतब करिकुन्तीचितज्ञान ॥ सेयोऋषि
दुर्वासतब मनक्रमबचनसुजान १८ ॥ तोटकछन्द ॥
ऋषिराज प्रसन्नभयेजबहीं । अतिनिश्चलध्यानधस्यो
तबहीं ॥ सिखयोआकर्षणमंत्रतबै । हितकैतिहिसीखिल
येसुसबै १९ ॥ दोहा ॥ सूरजकोइकधर्मकोतीजोपवनब
खान ॥ चौथेसिखयोइन्द्रको सबगुणज्ञाननिधान २० ॥
चौपाई ॥ पंचमतहँअश्विनीकुमारा । दीनोऋषिसोपर
मउदारा ॥ जाकोमंत्रजपौसुखपाई । सोईदेवप्रकटह्वै
आई २१ ॥ तोटकछंद ॥ उनसूरजमंत्रजप्योजबहीं ।
प्रकटेसविताघरआइतहीं ॥ सकुचीडरपीअतिभीतिप
गै । नरमोजगमोहिंकलंकलगै २२ (सूर्य्यउवाच) बि
नयोजबतैंबहुजापकस्यो । अतिभक्तिकरीपगभूमिधस्यो ॥
तबदृष्टिसँयोगअधानरह्यो । त्रियसोंतबहींयहबैनकह्यो
२३ सुतहोयबलीतुवगर्भमहा ॥ बहुधाबर्णोंगुणतासुक
हा ॥ प्रकटेतनवर्मअभेदधरै । धरबारिधिलौंअतिकीर्ति
करै २४॥ चौपाई ॥ लखैनकोऊतुव अवधानु। योंकहिबैन
सिधायेभानु ॥ आईकुंतीअपनेगेह । धायबुलाईपरमस
नेह २५ रबिकोरमिबोसबबिधिकह्यो ॥ तबउनमरमस
कलबिधिलह्यो ॥ जबदशमासगयेतहँबीति । कहीधा
यसोंतबयहरीति २६ आजुमुचैगोमम अवधानु । ह्वै
है पुत्रकहिगयेभानु ॥ लाउमँजूषातुरतगढ़ाय । तामेंसु
तधरिदेहुँबहाय २७ ॥ दोहा ॥ आन्योधायमँजूषतब
करिमनमाहँबिचार ॥ अर्द्धनिशाबीतीजबहिंलयोपुत्र
अवतार २८ पहिरेकवचअभेदतनुकुण्डलझलकतका
न ॥ सोकमारभनिचन्द्रसोंषोडशकलानिधान २९ धरि

मँजूषमेंधायतबदीनेसहितबहाय ॥ दृष्टिपर्योश्रुतिधारकी
हितकरिलियोउठाय ३०॥नाराचछन्द॥लसैमहास्वरूप
पुत्रसूरसोउदयकियो। गयोसुभौनआपनेहुलाससोंमहा
हियो॥ दयोत्रियाद्विजातकर्म आदिकर्मतेकरे। अनन्द
भौमहाघनोअशेषदुःखतेटरे ॥ ३१ ॥ धर्योबिचारिनाम
कर्णपुत्रयोंसिखावही। नित्यनित्यअङ्क२मेंसुज्योतिआव
ही ॥ भयोप्रवीणअस्त्रशस्त्रसीखबोहियेधरे। सहस्रबाहु
जीतियेगयोबिचारियोंकरे ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ आराधेतब
कमलपद परशुरामकेजाय ॥ द्विजसुतह्वैविद्यापढ़ी म
नवचक्रमचितलाय ॥३३॥ यहिविधिबहुविद्यापढ़ी।सिख
दैसोऋषिराज ॥ अस्त्रशस्त्रसीखेतहां करणातजेमुखरा
ज ३४ परशुरामऋषिराजतब आलससोंअलसाइ ॥ क
रणजन्घपरशीशधरि सोयरहेसुखपाइ ३५॥ चौ० ॥ की
टरूपनारायणआये। भृगुनन्दनतहँसोवतपाये ॥ करण
जन्घतरपहुँचेजाई । काटतरहेरुधिरधरछाई ३६ त्वचा
काटिबहुआभिषफोर्यो । करणसुभटअँगनेकुनमोर्यो ॥
सोवततेतबभृगुपतिजागे । देखिरुधिरतबपूंछनलागे ॥
॥३७॥ (परशुरामउवाच) सुतयहरुधिरकहांतेआ
यो । तबरविनन्दनभेदबतायो ॥ जान्योकरणबिप्र
नहिंहोई । यहछत्रीबालकहैकोई ॥ ३८॥ दोहा॥ य
द्यपिछत्रीबंशसों हैबिरोधअतिमोहिं । कपटरूपविद्याप
ढ़ी अन्तफुरोनहिंतोहिं ॥३९॥ ओढ़िशापआयेसदन रवि
नन्दनअकुलाय। उतकुन्तीगृहकोगई तनकेचिह्नमिटाय
४० तबहींकुन्तीरायपै नेगीदयेपठाय ॥ भीषमइतनीक
थाकहि सबनिसुनीसुखपाय ॥४१॥ सोरठा ॥ कुन्तलनृप

पैजाय कहीबातसमुझायसब ॥ तबभूपतिसुखपाय पठयेनेगीलगनदै ४२ ॥ सुनतसुखदयहबात शुभघटिका बीन्हींलगन ॥ भीषमसजीबरात हयगयन्दपरिबहुघने ४३ ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ चलेमत्तमातङ्गऐसे बिराजैं। मनोश्यामभारेमहामेघगाजैं ॥ चलेतेजसोंतेजतातेतुरङ्गा। मनोलेतभाजेकुरङ्गीकुरङ्गा ॥ ४४ ॥ चलेबाजिसाजेरथीशूरसेना। चलेबीरबंकाकहूँशङ्कहैना ॥ चलेदुंदुभीआदिदैसर्वबाजे। चलेनृत्यकारीमृदङ्गीबिराजे ४५ ॥ दोहा ॥ नियरानेकुन्तलनगर अद्भुतगईबरात ॥ निरखिसकलबिधिनगरके आनँदउरनसमात ॥ ४६ ॥ दुहूँकुलनिकीरीतिजो तिहिबिधिकियोबिवाह ॥ दैकन्याबहुधनदयो समदेसबनरनाह ४७ करिबिवाहनृपपांडुको भीषमपहुँचेधाम ॥ भयेशकुनपैठतनगर होयसकलमनकाम ॥ ४८ ॥ दंडकछन्द ॥ शकुनकोसोसारदेख्योदाहिनोकुरङ्गदौरभारदमयूरचारुदर्शनदेखायोहै। दाहिनोईजंबुकउलूकश्वानदाहिनोईनीलदनब्रातशुभशकुनजनायोहै ॥ दाहिनोईशब्दखरशूकरभयो दाहिनोईउज्ज्वलबसनलैकैरजकघरआयोहै। अन्नपकवानदूबमृत्तिकासुगन्धपान फूलनकीमालकोबिलोकिसुखपायोहै ॥ ४९ ॥ चौपाई ॥ कुन्तीगृहभीतरपगुधारी। देखनमुखआईगन्धारी ॥ सबगुणशुभलक्षणलखिनैना। मनमेंबिलखीकहैनबैना ५० बूझीसबगुनकीबिधिसबै। सकलशकुनियांबरणततबै ॥ पैठतनगरशकुनशुभभये। नितनितआनँददेखैंनये ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ धर्मधुरन्धरहोयसुतकुन्तीगर्भप्रबीन ॥ एकछत्रमहिभोगवै करिसमूहअरिहीन ॥ ५२ ॥ त्रिभंगीछन्द ॥

सज्जनमनरञ्जैदुर्जनगञ्जै भञ्जैजगदारिद्रघनैं । सत्यक
हैमुखसत्यलहैसुख दुःखदहै कविछत्रभने ॥ धर्मनिधारैं
असुरनमारैं जारैरोगकितेजगके । भारीभयमानैंनिर्भय
ठानै जानैंगुणयशकेमगके ५३ ॥ दोहा ॥ भुकिगन्धा
रीशकुनियादीनीतुरतनिकारि ॥ लोभग्रसितलोभीकहै
बातनएकबिचारि ५४ बढ़योपांडुनृपतरुणिसों दिनदिन
प्रेमअपार ॥ क्रीडानिशिबासररची सुयशसकलसंसा
र ५५ दूजोकरयोबिवाहतब आनीतरुणीधाम ॥ नाम
माद्रीलसतसो बिज्जुलतासीबाम ५६ गयोविपिनको
पांडुनृप आखेटककेकाज ॥ तहांहतेतपयुक्तद्विज ऋषिः
नीअरुऋषिराज ५७ तबहींमनमथमनमथ्योकामातुर
ऋषिराय ॥ रतिमांगीत्रियपैतहां अङ्गअङ्गअकुलाय ५८
(ऋषिनीउवाच) पतिरतिनिशिमेंउचितहै बासरयुक्ति
न आहि ॥ कितीबिनयतरुणीकरीधीरजहोइनताहि ५९
(ऋषिरुवाच) चौपाई ॥ पशुपक्षीदिनमेंरतिकरैं । हमतु
मरूपमृगनिकोधरैं ॥ ऋषिनीमृगीआपमृगभयो ॥ याबि
धित्रियसोंरतिरसठयो ६० ताक्षणपांडुआयतहँगयो ।
बिषमबाणसोंऋषिमृगहयो ॥ लागतबाणभयोसन्ताप ।
प्राणतजततहँदीनोंशाप ६१ ॥ दोहा ॥ जेहिबिधिछोड़ी
देहमैं लागतविषमसुबाण ॥ यहिबिधित्रियसोंरतिकरत
जैहैं तेरेप्राण ६२ ओढ़िशापऋषिराजको गृहआयोदुख
पाय ॥ महामलिननिशिकेसमय पौढ़्योशय्याजाय ६३
तबकुन्तीनृपपैगई करिषोड़शशृंगार ॥ मिसकरिनृपसो
व्रतलख्यो अर्द्धनिशासुखकार ६४ करतसेवपतिकीत्रि
या औरपलोटतिपांय ॥ अंगअंगदुखसोंदह्यो उत्तरदेहिं

नराय ६५ बड़ीबेरजाग्योनृपति कुन्तीअतिसुखपाय ॥
रतिमांगीत्रियलाजतजि कामातुरअकुलाय ६६ विष
कोइषसोउरलग्यो सुनतत्रियाकीबात ॥ बचननिहीना
शीनिशाजौलौंभयोप्रभात ६७ ॥ तोटकछंद ॥ उठिबाह
रपांडुमहीपगयो । नसुहाइकछूबहुदुःखभयो ॥ गजबा
जिसबैसँगसाजितहां चलिकेपहुँचेबनघोरजहां ६८ ॥
सवैया ॥ देखितहांबनतालकेजाल तमालबिशालनिकौ
नगनै । चंदनचम्पकअंबकदंबसदाफलश्रीफलबेलघनै॥
केवरोकेतकीऔकरनाकुलिकुन्दनेवारिनकोबरनै । बेला
चमेलीजुहीबहुकुंजनिपुंजनिपुंजनिमोहिमनै ६९ ॥
दोहा॥सुबसबसायोइन्द्रपथकाननमेंत्याहिठौर ॥ रह्योबिर
मिननृपपांडुतहँ भूपतिकोशिरमौर ७० ॥ इति श्रीमहाभा
रतेराजापांडुवनवासवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दोहा ॥ तबकुन्तीमनदुखित ह्वै चलीपाण्डुनृपपास ।
गृहरक्षाकोछत्रकहि राखेदासीदास १ पहुँचीभूपतिकेनि
कटनगरइन्द्रपथमांह ॥ रहतसुचैनेलोगसब पांडुनृपति
कीछांह २ ॥ चौपाई ॥ जानीतरुणीआवतिजबहीं । शो
कभयो भूपतिउरतबहीं ॥ निशिसून्योनृपसेजसँवारी ।
इंदुबदनित्रियतहँपगुधारी ३ पतिकोमनत्रियलहैनसोई।
बहुसंदेहतासुउरहोई ॥ तजिलज्जायोंबोलीबैन । सुनहु
प्राणपतिबहुसुखदैन ४ (कुन्त्युवाच) काहेरचतनहमसों
मोह। यहलखिममउरबाढ़तछोह ॥ तुमसोंकहौंवचनतजि
लाज । क्योंनरचतरतिसुतकेकाज ॥ सुखदवचनरानीयों
सुने । दुखकरिराजामनमेंगुने ५ ॥ दोहा॥बज्रतुल्यउरमेंल
गी तरुणीकीयहबात ॥ बरणीकाननकीकथा बिकलदेह

अकुलात ६ (पांडुउवाच) सोरठा॥ मृगनयनीकेरूपऋ
षिनीऋषिरतिरचलमें॥ हयोकह्योयोंभूप द्विजकेउरशर
मध्यमें ७॥ दोहा॥ दयोशापऋषियोंकह्यो ज्योंछांड़े
मैं प्रान त्योंतरुणीसंयोगते मरणआपनोजान ८ यों
सुनित्रियलखरिगिरी तनकीनहींसँभार॥ सुधिआई
बोलीतबै यहिबिधिबारम्बार ९॥ दण्डकछन्द॥ किधौं
हेमहरयो अपमानकरयोबिप्रनको किधौंधनधरयोजाको
ताही मैं नदीनोहै। किधौं मैं बिछोयेकहूँतरुणीकोप्राण
पति किधौंनिन्दनिगमकैगुरुकोदोषलीनोहै॥ होममैंबु
झायो तृणचरतबिडारीधेनु झूठीसाखिबोलिकैवचनमहा
दीनो है। कुन्तीकेबिलापकहै दीनोऋषिशापजाको अंग
अंगतापऐसोकौनपापकीनोहै १० (राजोवाच) दोहा॥
होनहारसोइह्वैरहै नहींसुमेटीजाय॥ सावधानकेवचन
कहि राखीत्रियसमुझाय ११ यहिबिधिबीतेदिनघने
चिन्ताकरीभुवार॥ किहिबिधिउपजैबंशगृह होइसक
लसुखसार १२ (कुन्त्युवाच) देवआकर्षणमन्त्रमोहिं
दीनेऋषिदुर्बास॥ तुमआयसुलैजोभजौं सोआवैमोपा
स १३ धर्म्मजपनपतितबकह्यो तरुणीसोंसुखपाइ॥
आज्ञालैसुमिरनकियो सोपहुँच्योढिगआइ १४ आयो
दृष्टिसंयोगतबसूनेमहलमँझार॥ धर्म्मअशीशदईघनी
इहिबिधिबारम्बार १५ (धर्म्मउवाच) चौपाई॥ ते
रेगर्भहोयसुतऐसो। षोडशकलाचन्द्रहैजैसो॥ धर्म्म
धुरन्धरधर्म्महिजानै। दत्तमत्तकेसबमगठानै १६ भू
मिभोगवैयकछतराज। सबबिधिसारैजगकेकाज॥ यह
कहिधर्म्मगयोसुरलोक। गर्भधरयोत्रियनाशैशोक १७

दशयेंमासपुत्रअवतस्यो। मनोंअतनुतनुभूमेंधस्यो॥ जय
जयशब्दप्रकाशहिभयो। धर्म्मजन्ममहिमण्डलधस्यो
१८॥ दोहा॥ निशिदिननारीनरसबै गावहिंमंगलचार॥
होतबधाईछत्रकहि नृपतिपाण्डुदरबार १९ तबबूझेनृ
पज्योतिषी कहियेलगनबिचार॥ कौनमुहूरतसुतभयो
सो बर्णोबिस्तार २० (ज्योतिषीउवाच) शुभदिनशु
भघटिकाभयो भाग्यवन्तबहुहोय॥ एकछत्रमहिभोगवै
अरिकहुँबचैनकोय २१॥ दण्डकछन्द॥ सज्जनहु
लासकारदुर्जनकोनासकार मित्रन बिलासकारपृथ्वीको
शृंगारहै॥ मित्रकोबिश्वासकारपाटनिबिलासकार भि
क्षुकअवासकारभूमिभरतारहै॥ जगजाकोआशकारश
त्रुकोविनाशकार दीननकोयशकाररतनभँडारहै। पुण्य
कोप्रकाशकारपापनकोनाशकार नृपताकोभाशकारधर्म
अवतारहै २२॥ दोहा॥ उपज्योपूरणभाग्यते तुम
गृहसुतबलखण्ड॥ उन्नतसकलअधीनकै देहअदण्ड
निदण्ड २३ यहिसुखदिनबीतेंकिते नृपतिपाण्डुयक
काल॥ कही बोलिरानी तबै देवअकर्षण बाल २४ जा
प्रसाद सुत दूसरो प्रकटहोय ममगेह॥ सोआयसुअबउ
रधरौ भूपतिकह्यो सनेह २५ जप्यो मन्त्रबोल्योपवनअं
तःपुरयकधाम॥ तहांभयोसंयोगतब गर्भधस्यो हठिबाम
॥ २६॥ सुन्दरीछन्द॥ पूरण मास भयो प्रकट्यो सुत।
कामस्वरूप सुशोभितसंयुत॥ अन्धतिया यहबातसबैसु
नि। ब्यासभजेतिहिबारमहामुनि॥२७॥ आयगयेऋषि
राजतहांतब। जोप्रियबैनकहेतिनसोंसब॥ सोबरदैऋषि
राजमहामति। सोईकरोप्रकटैसुतयागति॥ २८॥ (ब्या

सउवाच) दोहा ॥ शीशनधुनिसुनिबातयह देखुपरायेऐ
न ॥ आपुकियोसोपाइये कहेब्यासयहबैन २९ दीन्हींहर-
षिअशीशतब ब्यासमहाऋषिराय ॥ गान्धारीकोगर्भतब
प्रकटभयोतहँआय ३० जहांशैलके शिखरपर कुटीऋषि-
नकोधाम ॥ कुन्तीलहिभीमहिगई कीनेअमितप्रणाम ३१
सन्मुखगाज्योसिंहतहँ भीमसेनतेहिकाल ॥ हुलसिगो-
दतेतबगिस्यो पाहनपैउत्ताल ३२ अरुहूँक्योज्योंजलद
धुनि सुनि हरिगयोपराय ॥ सुनिगान्धारीमूर्च्छितब गि-
रीधरणिअकुलाय ३३ थोड़ेदिनकोगर्भह्वै मूचिगयो
त्यहिकाल ॥ पस्योपिंडसोधरणिपर अंगअंगबेहाल ३४
भयोकुलाहलसदनमें भजेब्यासमुनिराय ॥ हितकारीता
बंशके तबहींपहुँचेआय ३५ ॥ चौपाई ॥ वरणिसबैविधि
दासीकही । सोसबसुनिमुनिहिरदेलही ॥ करिशतअंश
पिंडकेधरै । प्राणसबनिमेंतबसंचरै ३६ सौघटघृतभरिल-
येमँगाय । प्रतिघटअंशपिण्डसुखपाय ॥ राखेएकएकगु-
णग्राम । धरेसुअन्तःपुरयकधाम॥३७॥ ब्यासासिधायेतब
ऋषिराव । करिगांधारीकेचितचाव ॥ पूरणमासगयेजब
बीति । खोलेघटआनन्दसमीति ३८ प्रथमजन्मदुर्यो-
धनलयो । दूजेघटदुश्शासनभयो ॥ तीजेदूरधबहुसुकु-
मार । रूपवन्तज्योंसोवतमार ॥ ३९ ॥ चौथिघटउपज्योदु
हुँबैन । मानोतनधरिआयोमैन ॥ इहिबिधिकरिशतभये
कुमार । शीलवन्तराचेकरतार ॥ ४० ॥ दोहा ॥ आनँद
भोधृतराष्ट्रगृह जहँतहँमङ्गलचार ॥ कंचनभूषणहेमगन
पावतमंगनहार ॥४१॥ सबपुरमेंआनँदभयो मनभयोसब
लेत ॥ हरषिहरषिकैसकलविधि सबैअशीशनदेत ॥४२॥

(धृतराष्ट्रउवाच) कहौबिदुरआनन्दमति जनमलग्नको भाव॥ तुमतेऔरप्रवीणको हितकैबोल्योराव॥४३॥ (बिदुरउवाच) मैंबिचारिदेखीलगन कहीनभोपैजाय॥ मेरो बिलगुनमानिये सबबिधिदेहुँबताय॥४४॥ जेठोसुतऐसो भयो भलोनकरिहैकाज॥कुलहिकलङ्कलगायइहै अरुखो वैसबराज॥ ४५॥ नाराचछन्द॥ भलोबुरोगनैनहींसमूह गोतसंहरै। लहैनसीखएककहूसबैकुकर्म्मसोकरै॥ नराखु पुत्रभूपनीरमाहिंसोबहाइये। सदाअलीनताकरैसुगेहमें नचाहिये ४६ भयेकितेकपुत्रऔरराजकाजतेकरै। बिचार औरहैनभूपबैनमोमनैधरै (गांधारीउवाच) नबोलुमूढ़ झूठमोभलोनतोहिंभावई। बोलायतोहिंलीजियेइहांसु क्योंनजावई॥ ४७॥ दोहा॥ भीषमबिदुरउठेतहीं योंक हिकैअकुलाय॥ जेठोसुतकुलसंहरै कुलहिकलङ्कलगा य ४८॥ चौपाई॥ दिनदिनबाढ़तवैसोभाई। यहसब पांडुनृपतिसुधिपाई॥ फूलैअँगअँगदीनोदान। सबया चककोराख्योमान॥४९॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेवि जयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां दुर्योधनावतार वर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

भुजङ्गीछन्द॥ दईपांडुआज्ञातहांबोलिभामैं। जपोइंद्रकोमंत्रआवैसुकामैं॥ कस्योशक्रकोध्यानसोगेहआयो। भलोदृष्टिकेसङ्गमोसुःखछायो॥१॥ भयेमासपूरेभयोपुत्रनीको। लखेशङ्कनाशेनशेशोकजीको॥ महापांडुनरपत्तिआनन्दहीको। बधायोकियोदानदीन्हींदुनीको २ (राजोवाच) कहोज्योतिषीपुत्रकीलग्नकैसी। सुनावोसबैमोघरी होयजैसी (ज्योतिषीउवाच) सुनोभूपऐसीघरीकीनि

काई। चहूँचक्रफेरैधरामेंदुहाई ३ ॥ छप्पै ॥ बाणनि
छायअकाश बाटसुरपुरकोठानै। देवनकरिआतंक भूमि
ऐरावतआनै ॥ शरसमूहसोंसेतु सिन्धुकोमारगमंडहि।
लंकहिपुरबरजीति लंकपतिघरुक्करिदंडहि ॥ छत्रबखत
वरनखतवर अंकतसोजीतैसमर। तीनभुवनकीरतिकर
हि शुभलक्षणसुनपांडुघर ४ ॥ दोहा ॥ कोहरद्रुमतनस
तभयो अर्ज्जुनपायोनाम ॥ मनभायोकारजकरै जीतै
बहुसंग्राम ५ ॥ चौपाई ॥ अर्जुनजन्मभयोजबसुन्यो।
तबगांधारीमाथोधुन्यो ॥ कुन्तीपुत्रबलीसबजाये । पां
डुरायगृहबजेबधाये ६ फिरभूपतिमनमेंयहआई। इंदु
बदनत्रियनिकटबोलाई ॥ आयसुमानिहमारोलेव। ज
पौमंत्रफिरिआवैदेव ७ (कुंत्युवाच) मंत्रनजापौंपति
गुणग्राम। पुत्रबलीप्रकटेतुमधाम ॥ पंचपुरुषसोंजो
रतिमाने। तासोंगणिकाकहैंसयाने ८ तुमअज्ञातेयहि
बिधिकरौं। देवबुलायेउरमतिधरौं ॥ जोयहपतिको
कह्योनकीजै। घोरनरकतौआपपरीजै ९ (पांडुरुवा
च) दोहा ॥ देहुमाद्रीकोयहीमंत्रबिचक्षणबाम ॥ तव
प्रसादसुतपावई होयसकलमनकाम १० तबअश्विनी
कुमारको मंत्रदियोतिनवाहि ॥ सुमिरतआयोदेवतहँ
कोटिमदनछबिजाहि ११ भयोसदनसंयोगतहँ गर्भ
धर्योतिहिबाल ॥ करिमनपूरणकामना देवगयेतेहिका
ल १२ उपजेताकेगर्भतेरूपवन्तसुतदोइ ॥ मंगलचा
रभयेसदन आनन्द्योसबकोइ १३ ॥ चौपाई ॥ सुरकि
न्नरकौतुकचलिआये। व्योमविमानसकलछबिछाये ॥
कोटिकामछबिबरणिनजाई। निशिदिन आनँदहोइब

धाई १४ जेठेसुतको सहदेवनाम। लहुरे नकुललसै छबिकाम॥ कहेज्योतिषीसुनुभुवराइ। पुत्रनकेगुणक हौंसुनाइ १५ जेठोबलीसकलजगजानै॥ जाकोबलसब दुनीबखानै॥ पण्डित कहैहैआगमकहै। मानसकलअरि गणकोदहै १६ खांड़ेबलीनदुसरोहोइ। महिमण्डलजा नैसबकोइ॥ भयेसयानेपांचौभाइ। बहुतकदिन जबगये सिराइ १७॥ दोहा॥ देख्योस्वप्नअरिष्टतब एकद्योस नरनाथ॥ श्यामबरणटेढ़ेरदन तिहि त्रिय पकरे हाथ१८ चलिचलिकंतायोंकहै बारंबारसुनारि॥ कारोनर ठाढ़ो लख्यो केशभूमिलौंडारि १९ छायालखीशरीरकी बिन शिरदेखीदेह॥ जागतहीनरनाहउर भयोमहासंदेह २० जपतपदानकियेघने पण्डित विप्र बोलाय॥ सात्त्विक दानदयेतहां सबहीको सुखपाय २१ तीनद्योस अन्तर भये कीनोनृपबहुदान॥ पुहुपवतीमाद्रीभई तबकीन्हे असनान २२ पतिकी शय्याकोचली करिषोडशशृंगार नवलचीर आभरणबहु कङ्कनतरवनिहार॥ २३॥ सवैया॥ खञ्जनकीगतिगञ्जननैन करीदृगअञ्जनरेखनि काई। भूषणके मुक्तानिकेहार शृंगारसजीसबसुंदरताई॥ पीनउरोजमुखीसबदेह मनोजके ओजसरोज सोछाई। चातुरकामकी आतुरसी अतिआतुरह्वैपतिपास सिधाई॥ ॥ २४॥ दोहा॥ इन्दुबदन त्रियपति निरखि कामातुर अकुलाय॥ दम्पति रतिमानी हरषि ऋषिके वचन नशाय॥ २५॥ तबहीं सुख संयोग में भूपतिछांड़े प्रान अन्धकारदुखकोजगत भूपअथयोभान २६ शोककुटुंबिन केभयो नरनारिनउरदुःख॥ रह्योनचारोवर्णमें काहूकेउर

सुःख २७ ॥ चौपाई ॥ ऋषिनआयकुन्तीसमुझाई । क
रतागतिसोंकहाबसाई ॥ सहदेवनकुलमाद्रीलये । मोह
छांड़िकुन्तीकोदये २८ (माद्रीउवाच) ज्योंअपनेतीनौ
सुतजानौ । त्योंमोपुत्रनसोंहितठानौ ॥ यहकहिउठी शी
घ्रहीकामिनि । भूपतिसंगभईसहगामिनि २९ जब यह
सुधिभीषमकोगई । सहितविदुरबहुचिंताभई ॥ कीनो
पांडुनृपतिकोशोग । खानपानबहुभूल्योभोग ३० ॥दोहा॥
चलिआयेतेइन्द्रप्रथसमुझायेनरनारि ॥ लैपांचौपुत्रनच
लेकुन्तीयुतसुखकारि ३१ नगरहस्तिनापुरगयेसबहीलै
सुखपाइ ॥ गांधारीउरसुखभयो देखतबहुपछिताइ ३२
(गांधारीउवाच) दुर्योधनकीसबकरौ सेवातनमनलाइ ॥
आधीनृपतालीजिये धर्मपुत्रसुखपाइ ३३ ॥ इतिश्रीमहा
भारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां
अर्जुनसहदेवनकुलावतारवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

दोहा ॥ दुर्योधनकोआदिदै शतबंधवबलबीर ॥ इतहि
पंचसुतपांडुनृप तेखेलैंइकतीर १ राखतउरमेंदुष्टताकौरव
भांतिअपार ॥ ताकोबारुनबांकई जोसहायकरतार २ म
त्तसहसदशभीमबल दीनोत्रिभुवननाथ ॥ चाहतबांध्यो
ताहिबलजुरिकौरवइकसाथ ३ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ मंत्र
क्रियोयहिभांतिसबैजन । भीमहिबांधोदैदृढ़बंधन ॥ याहि
दयोबिधिआयमहावर । मारततांहि अनाथयुधिष्ठिर ४
वेनहिंबन्धुकछूकरिजानहिं । जोकहिहौंसोइआयसुमान
हिं ॥ तेसरितातटखेलतहैंसुत । कौरवपांडवआनँदसंयु
त ५ कौनहरावहिभीमहिकोबर । साजहुबारकछूअपनो
छर ॥ सोवतबांधैदैदृढ़बंधन । गंगबहावहुयाहिततछनद॥

दोहा ॥ भीमसुवायोसदनमें शतबन्धवसुखपाइ ॥
दृढ़बंधनसोंबांधिकरि चाहतलयोउठाइ ७ रह्योमष्टकरि
पवनसुत देखततिनकेभाइ ॥ कैसेसोयेमूढ़मति मोको
सकैउठाइ ८ पचिहारेबन्धवसबै सकेनताहिउठाइ ॥
दुर्योधनअद्भुतगन्यो अवलोक्योसोआइ ९ (दुर्योधन
उवाच) प्रथमकह्योतुमप्राणबिन फिरयहबांधोआइ ॥
अबकंटकमेरोमिट्यो दीजैगंगबहाइ १० बरुकरिलयो
प्रयंकयुत दुश्शासनधरिशीश ॥ चलेबहावनसुरसरी संग
बन्धुदशबीश ११ डारचोगंगप्रबाहमेंदेख्योकोसकजात॥
दुर्योधनसोंआयकै कहीसकलबिधिबात १२ ॥ चौपाई ॥
सबकौरवमनआनँदभयो । अबनिजशालहमारोगयो ॥
अबवेचारोंबंधुअनाथ । दीजैचारिग्रामनरनाथ १३ जो
कहिहौंसोसेवाकरिहौं । अबनहिंगर्बकछूचितधरिहौं ॥ बंध
नतोरिभीमतबधायो । कौरवजहांतहांचलिआयो १४ ॥
सुन्दरीछंद ॥ देखतहीकुम्हिलायगयोसब । केतिकभा
गिचलेगृहकोतब ॥ बोलतहैंसबकौरवयागति । खे
लकियोहमबन्धुमहामति १५ खेलकियोतुमसोहमजा
न्यो । हांसिनआपबिसासहिठान्यो ॥ भूपयुधिष्ठिरआय
सुमानहुं । नातरुआजुसबैतुमजानहुं १६ (दुर्योधन
उवाच) गंगबहायदयोजबतूइन । मोहिंभईउरमेंरिस
योंसुन ॥ मैंपठयोदहबैनतहांतब । तूचलिआयगयोकि
तह्वैअब १७ ॥ गीतिकाछन्द ॥ करीझूठीसौंहइनकछुना
हिंमोहिंजनाइयो । खोलिबन्धनफांसिचलिकै भलेमो
ढिगआइयो (भीमसेनउवाच) करौंभूपतिकानितेरी
धर्म्मसतशिषमैंलई । नातरुबचौंकतमोहिंसेरत जाय

रिसक्योंआगई १८ कहिबैनये चलिसदनआयो आय
मातासोंकही। अन्धसुतमिलिदुःखदीनो सोपरै कैसेस
ही॥ जानिकैक्षुधितमोसब वचनकर्कशउच्चरैं। जबक
रतमुखधर्मसुतकी आनवेसबपज्जरैं १९ बांधिकैगंगा
बहायो दयाफिरजियमेंभई। छोरिबंधनसकलदीने बाट
गृहकीमैंलई (कुन्त्युवाच) मानिदुर्योधनमहीपति
कानितिनकीकीजिये। जोकहैनरनाथसोई मानिआयसु
लीजिये २० क्षुधितजान्योभीमजब आहारलैआगेध
धरयो। भारकेते अन्नव्यंजन लसहैभोजनकरयो॥ उदर
पूरणकैउठयो बहुबस्तुबसननिसाजिकै। उठिगयो कौ
रवसभातब द्विरदसोगलगाजिकै २१ देखिकैकुरुराज
आदर हेतुसोंबहुबिधिकरयो॥ छरसभोजनकरयोतुम
हित सोरसोईमेंधरयो। प्रीतितुमसोंमोहिये अरुसकल
अनुजनकेहिये। निशिद्योसदेखततोहिंआनँद छिनकबि
छुरैनाजिये २२ (बिदुरउवाच) दोहा॥ सबकौरवकी
दृष्टिलखि बिदुरकहीयहआन॥ तूकितआयोभीमह्यां
बिषज्योंनारहिखान २३॥ सवैया॥ आवतह्यांबहुतै
दुचितोलखि तोहिंपसींजिचल्योअँगह्वै। मानतुनाहिं
सबैमिलिजागत दुःखदियोबहुनाकछुह्वै॥ भोजनकीनो
महाबिषसंयुत आवहितूकतबावरोह्वै। धर्मकेनन्दनजै
सेबचावत कालबचावतहूदिनह्वै २४ (भीमउवाच)
दोहा॥ सिंहछवनकहिक्योंजिये जोकछुपच्छीखाय॥ मे
रेकृष्णकोध्यानउर कालकहांनियराय २५ कहीनृपति
सोंमोहिंतुम जोचाहोअघवाइ॥ सकुचछांड़िभोजनकरौं
बिदुरगेहजोजाइ २६ दुश्शासनउठितुरतही बिदुरपठा

योधाम ॥ जेंवनबैठचोभीमतब सजेसकलमनकाम २७॥ दण्डकछन्द ॥ रसहूअनरसहूमेंहांसीअरुखेलहूमें गृह अरुबाहरहूनेकमनसचयो। दुष्टदुर्योधनहलाहलके आधेआधु ताकेहियेदुष्टतानिभोजनहैरचयो ॥ ल्याइल्याइ आमिषअनेकपकवानतहां स्वरनिसँवारिकैसमूहआगे सचयो। कीनीनगलानिसोबखानिकबिछत्रकहै ॥ जानि बूझिपवनपूतसोईबिषपचयो २८ ॥ दोहा ॥ जितनो ल्यावतस्वारकछु भारनलगैनबार ॥ बचोरसोईमेंनकुछ जेंयेकैयोथार २९ ॥ दोधकछन्द ॥ भीमचल्योतबहींगृह आयो। कञ्चनपालकिधामबिछायो ॥ सोयरह्यो मनआनँदकीनो ॥ शोधतहांशतबन्धवलीनो ३० रैनिगईतबकौरवधाये। कुन्तलकीतनयाढिगआये ॥ सोवतभीमकहांसुखपायो । खेलनकोअबक्योंनजगायो ३१ जागिउठ्योचलिसोतहँआयो। दुष्टनकेमनसम्भ्रमछायो ॥ बेगिनरेशहिजायजुहाखो ॥ कौरवकेमन सम्भ्रमपारचो ३२ (दुश्शासनउवाच) दोहा ॥ कहा करैंकैसीकरैं कीजैकौनउपाय ॥ सोईसबबिधिकीजिये याकोलेहिंहराय ३३ चौपाई ॥ बटतरचलिकैखेलखिलावैं । सबमिलिछलकरिताहिहरावैं ॥ जबजबभीमदण्डलैआवै। बटचढ़िरहोछुवननहिंपावै ३४ तबसबबट द्रुमतरचलिगये। बोलिभीमदुश्शासनलये ॥ खेलेंभैया खेलअखंड ॥ जोहारैसोल्यावेदंड ३५ (भीमसेनउवाच) दूखतहैपगबीरहमारो। देखैंकौतुकबैठितुम्हारो ॥ हरुवेखेलखेलिहैंऐसे। खेलतभैयाबन्धवजैसे ३६ ॥ दण्डक छन्द ॥ खेलैंबीरऐसो खेलआपुसकोजैसोजोपे खेलिहौ

अनैसोतौंनखेल्लखेल्योपरिहै । आनिहैजुरोषताहिदेहैं हमरोषफिरि खैहैअफसोसनहमारो कछुकरिहै॥ पगहैं पिराततातेचल्योंहूनमोपैजात सांचीकहौंबातपैनयाहूते उसरिहै। हारेहारेदावँदंडदीजैतूचलायतौतोखेलैंहमआ यपायपीरतनडरिहै ३७॥ (दुश्शासनउवाच) दोहा॥ जोहारैंतौदाउँहमद्योसपांचमेंदेहिं॥ जोजीतैंतौआपनो पकरिहालिहीलेहिं ३८ दंडचलायोभीमजब पर्यौगङ्गके पार॥ दुश्शासनतबपैरिकैलायोतेहीबार ३९ आवतजा न्योनिकटसोधायोभीमखुराय॥ चढ़िनसक्योबटवृक्षपर लयोदुशासनआय ४० चौ० ॥ सौभाईवेफूलेगातन। स बैउच्चरतऐसीबातन॥ दीजैअबहींदाउँहमारो। नातरु कहुहमसोंतूहारो४१ (भीमसेनउवाच) सुनोंकहौं तुमसों सतभाउ। द्योसपांचमेंलीजैदाउ॥ पगमेरोहैमहापिरात। तातेमोपैचल्योनजात ४२॥ (दुश्शासनउवाच) बकसो अन्त कहैंसतिभाउ। तबहमछांड़ैंअपनोदाउ॥ ठाढ़े भीमसेनयोंभाखे। दाउँबिरानो कैसेराखै ४३ दयोदुशा सनदंडचलाय। पर्योसोकोसएकपैजाय॥ ढूंढ़िभीम लायेयोंतहां। कौरवबन्धुहतेसबजहां ४४ दुश्शासनफि रिउतर्योधाय। चाहतदंडहिदेहुँचलाय॥ पकर्योभीमबी चहीआय। सक्योनदूरिदंडपहुँचाय ४५ तबदुश्शासन बटकोधायो। अधपरपवनपूतछ्वैपायो॥ उतरिदाउँदु श्शासनदीजै। अबकछुलोभनआपनकीजै ४६ दोहा सब मिलिबटपरचढ़िरहे सुनैनहींकोउबात॥ भीमगह्योद्रुम मूलतब हर्षवन्तह्वैगात ४७ गहियोगाढ़ीडारको रहियो सबैसम्हारि॥ पवनचलायोकृष्णतब सकलगिराये

झारि ॥ ४८ ॥ दंडकछन्द ॥ एकपरेऔंधेमुखएकगिरे ऊर्ध्वमुख धुकिधुकिपैरधराधरधरकतहैं । एकलोटपोट ह्वैकैचोटखाइखाइउठे एकअधपरशाखागहेलरकतहैं ॥ एकउरबरउठिभागतहैंडारिडारि कँपिकँपिथरथरफरफर कतहैं । अंधसुतबंधुशतडारिडारिडारनिते घायलह्वै घूमिघूमिभूमिपरेबरकतहैं ४९ ॥ दोहा ॥ जेबराइगृह कोभजे गहेभीमतेजाय ॥ सबपौरुषसाहसगयो उबरे हाहाखाय ५० ॥ दईमहीपतिकोसबै बीतीकथासुनाइ ॥ रोषवंतभूपतिभयो सुनिकैबहुदुखपाइ ५१ ॥ (दुर्योधन उवाच) दोहा ॥ सन्मुखबैरनकीजिये रहोसकलअरगा इ ॥ तौलाजौंसुनिजोउन्हैं ठौरनदेहुछुटाइ ५२ ॥ इतिश्री महाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचिता यांभीमसेनकौरवसंवादवर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

सोरठा ॥ खेलतएकहिसाथ कौरवपांडवअनुजसब ॥ मारतकन्दुकहाथ जैसेशशाबहीरको १ ॥ दोहा ॥ उछ रीकन्दुकतेहिसमय परीकूपमेंजाय ॥ काढ़नकोसबबन्धु मिलि साजतकितेउपाय २ गीतिकाछन्द ॥ कूपतटऋ षिद्रोणआये निरखियाबिधिसोंकहे । नहींहैसमरत्थकोऊ काढ़िकन्दुककोलहैं ॥ वन्शक्षत्रीकोलजावत जतननहिं करिआवही । काढ़ितुमकोदेहुँयहतृण सींकजोकोउलावही ३ आनिआपीसींकताकरि धनुषताकोतिहिकस्यो । बाणताहीकोरच्यो तिहिकालधनुऊपरधस्यो ॥ लग्यो कन्दुकमाहिंसोशर सींकदूसरकरलयो । करिकर्मअद्भुत बेगिदे इषुमाहिंहींइषुसोंदयो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ यहिविधिबे धोसींकसों सींककूपमेंझार ॥ अन्तसींकगहिकाढ़ियो गें

दक्षत्रतिहिवार ५ ॥ चौपाई ॥ देखतसकलअचम्भैरहै।
समाचारभीषमसोंकहै ॥ लयोपितामहबिदुरबुलाई।
द्रोणविप्रढिगपहुँचेआई ६ लैद्विजआये अपनेगेह। क
रिसन्मानरच्योबहुनेह ॥ सबशिशुतापहँविद्यापढ़ै। नि
तनितचाउचौगुनोबढ़ै ७ अस्त्रशस्त्रविद्यासबजानी।
बिदुरपितामहकेमनमानी ॥ तिनमेंअर्जुनभोअधिकारी।
गुरुप्रसादपायोगुणभारी ८ ॥ दोहा ॥ देख्योचाहत
शिशुनको तबगुरुद्रोणप्रभाउ ॥ कर्योअखारोसदनमेंबो
लेराजाराउ ९ ॥ त्रोटकछंद ॥ रविपुत्रतहांतबकर्णगयो।
कुरुनन्दनसाथमिलापभयो। अतिआदरभाउविशेष
कर्यो। हितसोंनरनायकहाथधर्यो १० गजदन्तन
केबहुमंचबने। बहुचित्रविचित्रअवासघने ॥ तहँबैठिपि
तामहआदिसबै। निरखैंशिशुकौतुकलोगसबै ११ गुण
कीरचनाप्रकटीजबहीं। लखिअद्भुतबर्णतलोगतहीं ॥
भटऔरनअर्जुनकीसरिहैं ॥ गहिकैंधनुकोसमताकरिहैं
१२ दुर्योधनबातसुनीजबहीं। प्रगट्योउरकोपमहात
बहीं ॥ धनुलैतबअर्जुनपासगयो। अवलोकिसुरोषहिह्वा
इगयो १३ (कर्णउवाच) तोमरछन्द ॥ अससमरमोसों
मांड़ि। सबदेहुबातनछांड़ि ॥ सजिबाणतूडरडारि। अब
पाण्डुपुत्रसम्हारि १४ (अर्जुनउवाच) साजितोकहबा
न। यहनाहिंमेरोस्यान ॥ निजहोयभूपतिकोय। पुनिसम
रतासोंहोय १५ ॥ दोहा ॥ कैसेकहौंबराबरी मोसोंतोसों
आय ॥ तूसुतहैनिजसूतको नहींअवनिपतिराय १६
सुनिदुर्योधनकोपकरि थप्योकरणभुवराय ॥ टीकोनृप
ताकोकर्योशुभघटिकासुखपाय १७ ॥ सवैया ॥ अर्जुन

केसुनिबैनसरोष तहांकुरुराजमहारिसभीनो । देशदियो सबकोशदियो बहुबाजिकैसाजिकैबाहनदीनो भूषणदै गजभूषणभूपति भूपकियोकबिछत्रनवीनो । राजदियो सुखसाजदियो सबकाजकेकर्णमहीपतिकीनो १८ ॥ दोहा ॥ जुरेकर्णनरनाहतब अर्जुनसोंकरिक्रुद्ध ॥ दुर्योधनु द्धरधीरअति करतअमितगतियुद्ध १९ देखैजननीपुत्र बिधि करतवृष्टिशरजाल ॥ कहीमहाअकुलायसुतदोऊरा खिगुपाल २० पांचबारधरमूरछो कर्णसुभटबलिबण्ड ॥ बारसातअर्जुनधुको बिक्रमकियोअखण्ड २१ दोऊबरजेद्रो णगुरु दोऊशिशुइकसार ॥ राखिअखारोसमदियोलोग सकलतिहिबार २२ दुर्योधनलैकरणको गये आपनेधा म ॥ आजुपैजराखीमहा सुनिरबिसुतगुणग्राम २३ (द्रो णाचार्य्यउवाच) चौपाई ॥ धनिधनिसुरपतिसुतसु खदाई । सबतेतुमपौरुषअधिकाई ॥ यहकहिअपनेकंठ लगायो । ह्वैहैतोतैंजोमनभायो २४ जाइरकरणकरचो नरनाह । तोहिंनिरखिदुर्योधनदाह ॥ गुरुदक्षिणासक लमिलिदेहु । द्रुपदजीतिमेटौसन्देहु २५ (अर्जुनउवा च) जोआज्ञाम्वहिंदेहौआप । सोईकरिहौंतुमपरताप ॥ प्रथमहिंदुर्योधनसोंकह्यो । यहगुरुदक्षिणउनपैलह्यो २६ जोवेयहकरिसकैनआजु । तबसारोंगोहौंसबकाजु ॥ य हसबकहीद्रोणतहँजाय । कौरवसजीचमूसुखपाय २७ कियोद्रुपदसों सन्मुखयुद्ध । तबपञ्चालकियोबहुक्रुद्ध ॥ बाणनिजुरचोसमरभुवआय । अम्बरलीनोततक्षणवाय २८ ॥ दंडकछन्द ॥ द्रुपदसोंजुरेअङ्गसोदरसकलसंगली नोरणरंगमहाशूरनकेगनमें । बाणनिआकाशछायदोऊ

समुदाययुद्धकुद्धबाढ्योशुद्धदहूंबीरनकेमनमें ॥ केतेशर जालको प्रयोगकियोपांचालकौरवबिहालकाहूधीरनहीं तनमें। सेना अकुलानीदेखिशरुयोछत्रकुलपानीपांडुपुत्र पांचौतहांआयगाजेरनमें ॥२९॥ दोहा ॥ अर्जुनकरिसंग्रा मबहु जीतोसोनरनाथ ॥ आन्योबांधिसुगुरु निकट चकि तभयेसबसाथ ३० ॥ चौपाई ॥ डार्योगुरुकेचरणनिसो ई। देखतअद्भुतगतिसबकोई ॥ बालमित्रताकीसुधिक री। बिप्रद्रोणकरुणाहियधरी ३१ अतिहितभूपतिकंठ लगायो। तुमतेभयोसकलमनभायो ॥ धनिअर्जुनगुरु द्रोणपुकारे। तोबिनमोकारजकोसारे ३२ (युधिष्ठिरउ वाच) सुनिअर्जुनसोदरगुणग्राम। आजुकरोनीकोसं ग्राम ॥ भयोहमारोसबमनभायो। दुर्योधनकोगर्वनवा यो ३३ द्रुपदरायबिलख्योगृहगयो। महाशोचउरअन्त रभयो ॥ द्रोणहिहितकैपरिहसुसारैं। ऐसेकोटिबिचार बिचारैं ३४ पुत्रशिखंडीताकेधाम। तातेसरैनहींमनका म ॥ यज्ञारम्भबोलिद्विजकीनो। भूपतिअतिकरुणारस भीनो ३५॥ दोहा॥ यज्ञकुंडतेतबकढ़ी कन्यारूपनिधान॥ कैरतिशचीपुलोमजाहैमेनकासमान ३६ नामद्रौपदीत बभयोनिरखतदुहितानैन ॥ धृष्टद्युम्नपुनिकुंडतेकढ्यो पुत्रजनुमैन ३७(द्रुपदउवाच) याकन्यापुत्रतेंह्वैहैसब मनकाम ॥ पूरणकरिकैयज्ञको हर्षोभूपतिधाम ३८ तबहींयज्ञासिरायकै सबसमदेऋषिजाल ॥ बर्णबर्णसुब रणसहित सुरभीदेतिहिकाल ३९ ॥ इति श्रीमहाभारत पुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां अर्जुन बिजयवर्णनोनाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

(दुर्योधनउवाच) त्रिभंगीछंद ॥ कहमतिकीजैक्या जगजीजै बेसबछीजैउरधरिये । कछुमंत्रबिचारौंवेज्यों हारैं भीमहिंमारैंसोकरिये ॥ कछुव्यंजनकीजैबहुबिषदीजै बोलिसुलीजैभोजनको । सुनिधावनधायेतुरतहिला ये बहुभायेभूपतिमनको १ अतिआदरकीनोबहुसुख भीनो भूपप्रबीनोताहितबै । सम्मुखभयेभारेअंधदुलारे आयजुहारेबंधुसबै ॥ निशिदिनतुमभावतमनकरिआत त सरसावतआनंदघने । सबहीसुखपायो नेहबढ़ायो मनभायोवहकोबरने २ (भीमसेनउवाच) दोहा ॥ सेवकजानतमोहिंतुम कृपाकरतसबकोय ॥ तातेदिनप्रति कोइहां आवनकोमनहोय ३ ॥ चौपाई ॥ सहसहाथप नवारोआयो । पवनपूतजेंवनबैठायो ॥ दशबीसकजन परसतधाई । सोईलेयक्षणकमेंखाई ४ ॥ दंडकछंद ॥ दुष्टताकोपूर अतितामसकोमूर महाक्रूरदुर्योधनरहतुता सोंक्रोधमें । कालकूटफोरिफोरिजोरिजोरिकेतेबिष घोरिघोरिडारैबहु भोजनअशेषमें ॥ व्यंजनअपारघृतसारकै योभारआनि कीनोंहलाहलआधेआधसुबिशेषमें । लात हीहरिजातस्वारजेतोडारिजात भीमसेनभ्कारिजातपा तरिनिमेषमें ५ ॥ सवैया ॥ तद्यपिआननचित्तकछूनहिं यद्यपिभावमहाछलको । जाननिजानतुभोजनखातुन हींडरुताहिहलाहलको ॥ भोजनब्यंजनवृन्दकितेकनि जेयेंघनेनलख्योपलको । दृष्टिइतैउतसोनकरैं नकरैंसुतो पानकहूंजलको ॥ ६ ॥ दोहा ॥ भोजनकरिबीरालयो चल्योआपनेगेह ॥ छायगयोतिहिकालबिष अंगअंगस बदेह ७ ॥ चौपाई ॥ पवनपुत्रजबबाहरआयो । जान्यो

भीममहाबिषखायो ॥ आईलहरिगिस्योबिकरार। तबयह
शोचतबारम्बार ॥८॥ तीनोंमोंलघुसोदरआइ। तिनकीइ
नसोंकहाबसाइ ॥ भूपतिमनमें नेकनक्रोध। कौरवसों
कोकरैबिरोध ॥९॥ योंसुमिरततबछांड़ेप्रान। प्रफुलितकौ
रव भयेनिदान ॥ बोल्योवैद्यनाटिकादेखो। मुयोहलाहल
सूचितलेखो १० (वैद्यउवाच) हैअजहूँयाकेउरश्वाश।
तातेहैजीवनकीआश ॥ आयसुदीजैकरौंउपाय। योंसु
निक्रोधभयोभुवराय ॥ ११ ॥ दोहा ॥ तबैवैद्यजान्योकप
टगेहगयोअकुलाय ॥ जाहुकरणलैभीमको आवोगङ्गब
हाय ॥ १२ ॥ आयसुलैरबिपुत्रसो दीनोंगङ्गबहाय ॥ दे
वबिमाननिआरहे रहेब्योममेंछाय ॥१३॥ (देवाऊचुः)
जीवैगोसुतवायुको श्रीहरिसदासहाय ॥ सुरसरिजल
मेंसोबह्यो पत्योपतालहिजाय ॥१४॥ बासुकिदुहिताइन्दु
मुखिअहिलमतीत्यहिनाम ॥ देखिभीमसूरतिमदनप्रफु
लितभईसुबाम ॥१५॥ शिशुतासेपूजीगवरि मनबचक्रम
चितलाय ॥ यकदिनसोबिधनाकरी रहीमहाअलसा
य ॥ १६ ॥ बासीपानीसोंगवरि पूजीयकदिनआप ॥ तब
देवीमनक्रोधकरि दीनोताकोशाप ॥ १७ ॥ मृतकमिलैतो
कोपुरुष जाहुसुरसरीतीर ॥ अहिलमतीसो प्राणपति
देख्योमृतकशरीर ॥ १८ ॥ लैराख्योसो सदन में सखिसों
कहीबुलाय ॥ अबसोईकीजैयतनयाको लेहुँजिवाय १९
॥ चौपाई ॥ ततक्षणहींतिहिबुद्धिउपाई । जीरनपटकीगें
दबनाई ॥ सुधाकुण्डसोततक्षणडारी । धायेपन्नगरक्ष
कभारी ॥२०॥ रहेसुधाकुण्डनिपैछाई। नहिंरंचककोऊलै
जाई ॥ अहिलमतीयहिबिधिकहिधाई। गेंदमोहिंदीजै

किनआई ॥२१॥ कानिरायबासुकिकीकरौं। जीवछांड़ितु मऊपरमरौं ॥ गेंदनिचोरिताहिलैदई। लैसोपवनपूत ढिगगई ॥२२॥ रंचकतामहिंअमृतपायो। भीमसेनकेमुख मेंनायो ॥ जीयउठ्योजनुसोवतजाग्यो। निरखित्रिया योंबूझनलाग्यो २३ (भीमसेनउवाच) दोधकछन्द ॥ को त्रियतूजिहिंचित्तचुरायो। सोवततेकितमोहिंजगायो ॥ ब्याललियेसंगकोकहिबाला। चन्द्रमुखीगुणरूपरसा ला ॥ २४ ॥ कोकहुतूअबमोढिगआई। कोयहदेशकहोस मुझाई २५ (त्रियउवाच) आयपतालसुनोसुखसाज। बासुकिमोपितुयाथलराज ॥२६॥ दोहा ॥ बासुकिदुहिता आहुँमैं अहिलमतीमोनाम ॥ गवरिकृपापायेपुरुषमोगृ हकरिविश्राम २७ अबअपनीसबबिधिकहो कोहौआप निदान ॥ कौनबंशकानामहै किहिकारणह्यांआन ॥२८॥ (भीमसेनउवाच) सोमबंशहमसुखदत्रिय क्षत्रीजाति सुजान ॥ भूपतिजम्बूद्वीपके महिमण्डलमेंआन २९ त वसँगदीखैंब्यालबहु कहोकौनयहभाउ ॥ जितेतिते ये देखियत सोसबबरणिसुनाउ ३० (अहिलमत्युवाच) येपियूषकुण्डनव जगकीजीवनमूरि ॥ रखवारेतहँसर्प बहु रहे चहूँदिशिपूरि ३१ (भीमसेनउवाच) दोधकछं द ॥ मैंअबकुण्डसकललखिपाये। सोखौंसबैकरौंमन भाये ॥ अहिलमतीतबबिनवैताहि। यहनछुबातननीकी आहि ॥३२॥ जैहैंब्यालकितेलिपटाइ। रंचकसुधासकोन हिंखाइ ॥ करिबिवाहजोमोसोंलेह। जानिहितूमानैंसब नेह ३३ ॥ दंडकछंद ॥ भारेभारेब्यालमहाकारेकागेबिक रालकालहूकेकालजहांतहांछाइजाहँगे। आननकीओर

जैस्रवतबिषज्वालजोर घोरघोरचहूंश्रोर कहांधौंसमाइँगे ॥ सप्तमुखीएकअष्टमुखीतेअनेकएक एकमुखीआशीबिषआइलपटाइँगे । जोरदोऊहाथकहौंमानोंप्राणनाथप्यारे देखिऐसेसाथकैसेधीरजधराइँगे ३४ ॥ नाराचछन्द ॥ फुरैनमन्त्रमूरिएकएकब्यालजोडसें। करौंबिचारकौनआपअंगआयजोग्रसें ॥ कछूसुनैननारिबातभीमसेनयोंकहै। सरोषमोहिंदेखिकैकहासुकोइहांरहै ३५ ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ लखेकुण्डनैनानिसोखौंअबैहौं। सबैनागकेयूथकोत्रासदेहौं ॥ चल्योधायकेनारियों चित्तशोचै । करैदुःखसोनीरनैनानिमोचै ३६ (अहिलमत्युवाच) कहाकर्मकीनोमुवामैंजियायो । दुहूंभांतिसोंकालह्वैखानआयो ॥ करैजोकहूंयहपराजैपिताकी । विनाशैकिधौंयुद्धमेंदेहयाकी ३७ दुहूंभांतिमोकोमहादुःखह्वैहै। अभैदानमोकोकृपासिन्धुदैहै ॥ महाक्रोधह्वैपौनकोपूतधायो । हतेनागसोकुण्डमेंपैठिआयो ३८ महाक्रोधकीनोसबैब्यालधाये । चहूंओरघेरेसबैकुण्डछाये ॥ उठ्योकोपिकैभीमधायोतहांते । भगेनागसोनैनदेख्योजहांते ३९ ॥ दण्डकछंद ॥ एकैमारेतोरिकैमरोरिमारैएकैनाग एकैमारेमींडकैकहांलौंकहौंकरनी । एकैधायेधायकेधुकायदयेधावतहीं धरधरधरकतएकैपरेधरनी ॥ एकनिकेकारेफनफरफरफरकत थरथरकम्पभगे एकैलैलैघरनी । भागिभागिएकैगयेबासुकिनरेशआगे जायकैअकहकहबातसबैबरनी ४० (नागउवाच) चौपाई ॥ आयोअसुरएकअतिभारी।क्योंहुनमानतआनतुम्हारी ॥ कुण्डएककरिलीनोपान । मार्योसबनागनकोमान ४१

शोषनकुण्डसकलकहँकहै। पठयोकाहूसोंसुधिलहै॥ बा
सुकिकहैअसुरनहिंहोई। नृपतियुधिष्ठिरबंधवसोई ४२
भीमसेनहैताकोनाम। यहिथलजीत्योतिहिसंग्राम॥
वाबिनइतोबलीकोऔर। सोमबंशसुभटनशिरमौर ४३॥
दोहा॥ धर्म्मराजनरनाहकी देहुदोहाईधाइ॥ भीमसेन
कुण्डननिकटसकैननियरोजाइ ४४॥ चौपाई॥ पायरजा
यसुधावनधायो। तुरतहिपवनपुत्रढिगआयो॥ आनि
युधिष्ठिरनृपकीदीनी। कानिभीमकुण्डनकीकीनी ४५
(भीमसेनउवाच) जौनदुहाईदेतेआई। कुण्डलसकल
लेतसोखाई॥ कौनेतुम्हैंबतायोभेद। यह मनमेंबहुउप
ज्योखेद ४६ पाईसुधिबासुकिउठिधाये। भीमसेनतब
कंठलगाये॥ बहुसुखसंयुतलैगृहगये। अष्टकुलीमनआ
नँदभये ४७॥ दोहा॥ शुभघटिकाशुभलग्नगनि शुभ
बासरशुभबार॥ अहिलमतीभीमहिंदईकरिबिवाहसबचार
४८ पाइदाइजोब्याहिकै बिधुबदनीबरनारि॥ हिय
हुलासकीनोमहाबदनमयंकनिहारि ४९ बहुप्रतापपूरण
कलाभीमसेनज्योंभान॥ फूलतिलखिअम्बुजमुखीसब
गुणरूपनिधान ५०॥ सोरठा॥ धर्मपुत्रभुवरायसहदेव
सोंयहकही। यहसँदेहमोहिंआयभीमहिंभयोबिलंबबहु
५१ (सहदेवउवाच) गयोबीरपातालभूपरनहींसुभूमिप
ति॥ कौरवकर्मकराल करिभोजनमेंविषदयो ५२॥दोहा॥
दीनोंगंगबहाइसो पर्य्योपतालहिजाय॥ बासुकितनया
तिनबरी रहततहांसुखपाय ५३ पठयोधावनभूपतबप
हुँच्योभवनपताल॥ बोलेहोतिनसोंकही यूधिष्ठिरभूपा
ल ५४ पवनपुत्रमांगीबिदा बासुकिपैसुखपाय॥ नाय

शीशातिनकोचल्योअहिलमतीसँगजाय ५५ ॥ चौपाई ॥
सबनागनमारगदरशायो। निकसिभीमभुवऊपरआयो ॥
धर्मपुत्रकेआनँदभयो । कुंतीकोसबदुखमिटिगयो ५६ ॥
सकलअनुजमिलिआनँदठयो । महादुखितकुरुनन्दनभ
यो ॥ दयोदुष्टसुरसरीबहाई । कहौ कहांते प्रकट्यौआई
५७ सकलजगतअपयशह्वैगयो । अबयहशालहमारो
भयो ॥ अबकछुऐसोकरौबिचार । भीमसेनकोसकिये
मार ५८ (युधिष्ठिरउवाच) दोहा ॥ अंधसुतनकोमान
हति कियोसुयशसंसार ॥ गांधारीकोगर्वअब गयोबारइ
हिबार ५९ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां
कविछत्रसिंहविरचितायां भीमसेनबिवाहवर्णनो नाम
अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

दोहा ॥ आश्विनकृष्णाअष्टमी नरनारिनकीभीर ॥
पूजनगजनारिनसजे भूषणबसनशरीर १ महामलिन
कुंतीभई अर्जुननिरखेनैंन ॥ कहाबिसूरति माय तुम सो
कहिमोसोंबैन २ (कुंत्युवाच) मेरेपांचौपुत्रतुम वैशत
बंधुबिचारि ॥ सौलोंदालेआवहीं सकलमृत्तिकाडारि
३ करिगजपूजैआजुसो गान्धारीसुखपाय ॥ तिनसों
हमसोंकौनबिधि करीबराबरजाय ४ (अर्जुनउवा
च) पंचपुत्रतेरेबली क्योंमलीनबिचचित्त ॥ ऐरावत
आनोंद्विरद तेरेपूजनहित्त ५ ॥ सवैया ॥ काहेकोमा
यबिसूरतियाबिधि बाणअनेकनिअम्बरछाऊं । बाटक
रौंशरजालपठै नभभूमिअकाशहिभेटकराऊं ॥ मानह
तौंदुर्योधनको बलकौरवकोसबगर्व्वनवाऊं । आनोभु
जाबलसोंऐरावत अर्जुनतौतुवपुत्रकहाऊं ६ ॥ दोहा ॥

करिप्रणामगुरुद्रोणको लीनोधनुषउठाय ॥ हितऐराव
तसुरपुरी दीनोंबाणपठाय ७ अर्जुनइषुदेवनलख्यो क
ह्योइन्द्रसुनिलेहु ॥ तुमसुतमांगततवह्विरद करहुकृपा
सोदेहु ८ जोनदेहुऐरावतै तौत्रहबरुकरिलेइ ॥ अमर
पुरीभटभंजिकै दुखदेवनकोदेइ ९ देनकह्योबारणसनी
देवनकीमनुहारि ॥ क्योंधरजैहैस्वर्गते सोसबकहौबि
चारि १० ॥ चौपाई ॥ सबदेवनमिलिबाणपठायो। भू
तलअर्जुनके ढिगआयो ॥ ऐरावतकोमारगकीजै। यहि
बिधिबारण आपनलीजै ११ (अर्जुनउवाच) बाणअने
कनअंबरछाऊं। ऐरावतकोबाटबनाऊं॥ इन्द्रसभामेंबाण
पठायो। देवनइन्द्रहिजाइजनायो १२ ॥दोहा॥ आज्ञासुर
पतितबदई साखिदयेसुरपाल ॥ पूजाकरिपठवैइहांबारण
याहीकाल १३ आयोपत्रीभूमिको अर्जुन लिखियेमाइ॥
निकसिनगरतेसुभटतब लीनोधनुषचढ़ाइ १४ करिप्र
णामगुरुद्रोणको कृष्णहिंशीशनवाय ॥ शरपंजरपूर्योतबै
लयोब्योमसबछाय १५ ॥ सवैया ॥ ब्योमकोपठायोबाण
प्रथमसहस्रएक दूसरेसहस्रदशस्वर्गकोपठाये हैं। ती
सरेअयुतपांचचौथेलक्षएकसर एककोटिपांचयें अकाश
माहिंछाये हैं ॥ षष्ठमेंकरोरदश अर्बएकसातयें सुकहांलौं
बखानोंशरजालजेतेधाये हैं। पूर्योसुरलोकतेधरालौंशर
पंजरबिलोकिअन्धपुत्रशतबन्धुतेसवाये हैं १६॥ चौपाई॥
देखतकौतुकसबजगजाल। कौरवकुललखिभयेबिहाल ॥
कौतुकबिदुरपितामहभूले। नृपतियुधिष्ठिरतनमनफूले
१७ अर्जुनमहापराक्रमकीनो। मित्रनसुखदुष्टनदुख
दीनो ॥ सकलब्योमशरपंजरछायो ॥ उतमैंकहामेघजनु

आयो ॥ १८ ॥ दोहा ॥ योजनद्वादशलक्षलौं शरपञ्जरन
मझाइ ॥ देखतहीसबसुरनमिलि कहीशक्रसौंजाइ ॥१९॥
आज्ञालैसुरराजकी चल्योमत्तमातंग ॥ गर्वधरचोशर
जालको करौंकोपिकैभंग ॥ २० ॥ भुजंगीछन्द ॥ धरचो
ब्योमतैंगर्वकैशक्रहाथी । किधौंमेघकैयोधकेशैलहाथी ॥
कहैबाणकेपंजरेतोरिडारौं । धरामैंधसौंजायकेरोरपारौं
२१ ॥ जहांजोरकरिकैकरीबाणतोरे । तहांइन्द्रकोपुत्रलै
बीसजोरे ॥ चल्योमत्तमातंगसोभूमिआयो । लख्योमा
तुकुन्ती महासुक्खपायो २२ (भीष्मउवाच) नऐसोसु
न्योमैंननैनानिदेख्यो । सुतोमैंअचम्भोमहाचित्तलेख्यो ॥
महावीर आकाशकोपंथकीनो । भयोपन्थतानामश्रीराम
दीनो २३ (अर्जुनउवाच) करोजूअबैमातुपूजाकरीकी ।
नकीजैकछूबेरएकौघरीकी ॥ तबैमातआनन्दजीमांझ
आन्यो । कहीकोसुतोंधन्यकैद्योसमान्यो ॥ २४ ॥ गयेसबै
संशयसोसन्देहजीके । भुजादण्डपूजेतबैपार्थहीके ॥ म
हाधन्यहौपार्थसोपुत्रजायो । दयेबायनेऔरकीनोबधा
यो ॥ २५ ॥ दोहा ॥ आनँदयुतपूजाकरी सबबिधिबातब
नाइ ॥ गन्धारीलखिलखितबै मनहीमनपछिताइ ॥२६॥
करिपूजामातंगकी फिरिपठयोसुरलोक ॥ दुर्योधन को
आदिदै भयोसबनिकोशोक २७ (युधिष्ठिरउवाच) ध
निअर्जुनतैंराखियो लोकलोकमेंनाम ॥ अबनकरैंगेगर्व
वे रहेसशोकेधाम ॥२८॥ दुर्योधनकोआदिदै भयेगर्वकरि
हीन ॥ नेकसुहायनधामधन क्षणक्षणह्वैगयेछीन ॥२९॥
(गान्धारीउवाच) कहाभयोसुतसौजनै सरैनतिनसोंका
म ॥ जायेअर्जुनभीमउन धनिधनिकुन्तीबाम ॥ ३० ॥ दे

खिपराक्रमदुहुँनके लख्योनहींकुशलात ॥ लैहैंतुमतेरा जवे यहसूझतिहैबात ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ लाजभईदुर्योधनै दुश्शासनकेचित्त ॥ थाकेअमितप्रकारकरि कुन्तीपुत्र निहित्त ३२ ॥ सवैया ॥ राजसुहायनकाजसुहाय न लाजसुहायनहींमनमाहीं । ग्रामसुहायनधामसहायन बारुसुहायहियेसुधिनाहीं ॥ देशसुहाय न कोशसुहाय सुकौरवकेमनरोषबृथाहीं । खानसुहायनपानसुहाय सुहायनपाण्डुकेपुत्रनछाहीं ३३ ॥ (दुर्योधनउवाच) दोहा ॥ अर्जुनभीमभयेबली कीजेकछूउपाय ॥ सबमिलिऐसोकीजिये शालहमारोजाय ३४ ॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां ऐरावतआगमनोनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

दोहा ॥ गन्धारीभ्राताशकुनि बोलिलियोअकुलाय ॥ भीषमअरुबोलेबिदुर मन्त्रकाजसुखपाय १ (दुर्योधनउवाच) जैसेछीजैंपाण्डुसुत सोमतिकहौबिचारि ॥ बीचहिं बोलेशकुनितब देहुगेहमेंजारि २ बरुणनगरलैकोट रचि तामेंदीजैबास ॥ चहुँदिशिआगिनिप्रजारिये होय सबनकोनास ३ ॥ चौपाई ॥ भीषमनमन्त्रकहननहिंपायो। शकुनिकह्योसोनृपमनभायो ॥ समझोसोईकोटकरावहु । बेगहिचलोबारजनिलावहु ४ ॥ सवैया ॥ तेलभरेघटआनिधरे घृतकेभरिकैघटकेतेसँवारे । तूलदैमूलमेंरारअपार सुलाखमिलेकियेगन्धकगारे ॥ अन्तरसूतेनिरन्तरकाठ बनायकै पावकधामसुधारे । चित्रितचित्र सँवारि दिवालनि देखियसदन सबैउजियारे ५ ॥ दोहा ॥ बर्षदिवस बीते शकुनि कह्योनृपतिसों आय ॥ सुपस्योम

न्दिर पाण्डुसुत दीजै तहां पठाय ६ ॥ गीतिकाछन्द ॥
बोलिलीने बिदुरभीषम लैसभा बैठारियो । नृपयुधिष्ठिर
आदिदै सब पांडुपुत्र हँकारियो ॥ बात भीषमपै कहाई
मानिआयसु लीजिये । तुमहेत मन्दिर बरणाराच्यो बास
तामें कीजिये ७ धर्मसुतके हर्ष उपज्यो तुरत सब रथपर
चढ़े । राज आज्ञा मानिकै युतमातुपुर बाहरकढ़े ॥ बि
दुरसाथ चले पठावन सकल शिक्षाते कहें । बैठिकैपरस
दनमें निश्चिंत भूपति ना रहैं ८ ॥ चौपाई ॥ अतिस
चेतरहियो गृहमाहीं । आप उठायो तुम वह नाहीं ॥
जायवासनागृहकीलीजौ । आपसूझतौसबकुछकीजौ ९
पैठनपेटजो कोईआवै । सोनहिंभेदकछूलखिपावै ॥ बुधि
दै बिदुरगयेफिरिग्राम । पहुँचेनृपचालिताही धाम १० गे
हप्रवेशकियोभूपाल । सनमुखछींकभई तिहिकाल ॥ स
हदेवकहैसुनियेमहराज । रहहुइहांनहिं नीकोकाज ११
(नकुलउवाच) क्योंनहस्तिनापुरपगुधारो । जियमेंकाह
बिचार बिचारो ॥ कहीभूपवहिपुरनहिंजैहैं । दुखसबबी
रइहांहमरैहैं १२ यहदुखबिदुरपितामहपायो । सोभ्रात
निउरआनँदछायो ॥ बिदुरकह्योसबतेसोदेख्यो । पावक
पुञ्जधामसोलेख्यो १३ सावधान निशिबासररहैं । मर
मनकाहूसोंकछुकहैं ॥ दुर्योधनप्रतिहारबुलायो । भेदस
कलदैताहिपठायो १४ (राजोवाच) हमसों अनरसक
रितुमजाहु । जहांयुधिष्ठिररहैंनरनाहु ॥ भूलेअगिनिसो
बारोधाम । करिहौसबतुवपूरणकाम १५ ॥ सुन्दरीछ
न्द ॥ आयसुपायगयोवहताथल । जायप्रणामकियोप
लहीपल ॥ और कहे दुर्योधनकेदुख । पेटबिश्वासकहैहि

तकोमुख १६ ॥ दोहा ॥ बचनसम्हारेबिदुरके कपटीउर
पहिँचानि ॥ सबबिधिसकलसचेतह्वै करचोपँवरिमग
आनि १७॥ मालतीछन्द ॥ भीमसिधायो । सुरँगख
नायो ॥ बनकहँकीनो । पंथनवीनो १८ ॥ चौपाई ॥ ह
महिँमरेज्योंकौरवजानौ । ऐसेसबमिलिकै मतिठानौ ॥
भिक्षुकपंचदिवसयकआये । जननीबृद्धसंगतेलाये १९
देखिभीमयों कहै बिचारी । बनमेंजाहिँइन्हैंह्यांजारी ॥
बहुबिधिभोजनतिनहिँकराये । उत्तमठामतहांपौढ़ाये २०
दोहा ॥ जबहींबीतीअर्द्धनिशि सोवतसबहीजानि ॥ क
हीभीमनरनाहसों चलौबिपिनसुखदानि २१ सुरँगबाट
सबमिलिकढ़े लैजननीतेहिकाल ॥ लैपावकतबपौरिपर
भीमहुगयेउताल २२ ऊँकदईप्रतिहारशिर दीनीपौरि
जराय॥महलमहलपरिजारिकैंगयोभूपपैधाय २३ ॥दोध
कछन्द ॥ बाटलईबनकोउठिधाये । मन्दिरदुर्गमकोटिक
राये॥ मूँदिगयोमगकोउनजाने । जातचलेथकिकैहहरा
ने २४भीममहीपतिकंधचढ़ाये। पार्थतबैउरसोंलिपटाये॥
बन्धवदोयलयेयकबारी । शीशधरीजननीसुखकारी २५
लैदशकोसगयोबनमाहीं । भयजिनकेमनमेंकछुनाहीं ॥
धामजरयोसुनिकैकुरुराई ॥ बैठिसभाबहुतैपछिताई २६
सुखबाढ़योअतिहीउरमाहीं । देखतलोगनकेपछिताहीं ॥
शालमिट्योउरकोयहजान्यो । शुद्धभयोतबदैकरिपान्यो॥
२७॥दोहा॥ नयोजन्मजान्योतबै शतबंधवउरफूल॥बड़ी
कृपाकरताकरी नशेहमारेशूल २८ उतपाण्डवबनकोग
ये उतरेबटकीछांह । सबसोयेपहरेजगे भीमसेनबनमां
ह २९ नरदेहीकोबासलहि आईत्रियगलगाजि ॥ नामहि

डबीराक्षसी घोरमहाबपुसाजि ३० तनदीरघदीरघउदर दीरघदंतकराल ॥ दीरघमुखदीरघश्रवण दीरघबाहुसु बाल ३१ आईगर्ज्जतनारिवह भीमनमानीशंक ॥ तरु वरलैसन्मुखगयो करीनभयकछुअंक ३२ देखतसाहस भीमको भईपरमबपुबाल ॥ राकाशशिषोड़शकलारूप लख्योत्यहिकाल ३३ (हिडंबीउवाच) दोधकछन्द॥ मोमनरोचकआपुनमानो। आपुत्रियाकरिकैउरजानो॥ मैंतुमदेखिबलीबरकीनो। निचलौंतवआयसुलीनो ३४ आयहिडंबतहांतबगाज्यो। भीमइतैद्रुमलैकरसाज्यो॥ कोकहिनारिकहांयहआयो। भेदकछूनहिंमैंअबपायो ३५ (हिडंबीउवाच) दोहा॥ मेरोबीरहिडंबयहकीजैयुद्धनि शंक॥ कछुबिस्मयजियजनिकरोलज्जाधरोनअंक ३६ नहिंगाजतधीरजरह्यो तेरोबुद्धिनिधान॥ यहनकछूते रोकरै हितबरयाहिनिदान ३७ (भीमसेनउवाच) चौपाई॥ तेरोकहाभरोसोमोहिं। बीरहततरिसलागैतो हिं॥ जबयाकीतूहोयसहाय। तबकछुमेरीकहाबसाय ३८ (हिडंबीउवाच) दोहा जानतितोकोंप्राणपति नहिं राखातिचितऔर॥ तो सम यामेंबलनहीं हतिहिडंबयह ठौर ३९ भयोअसुरअरुभीमसों अतिगातिमुष्टिप्रहार॥ मल्लयुद्धकरिधरपरे ह्वैदोऊबिकरार ४० निकटनपायो भीमजब जागेबंधवचारि॥ निशिचरसोंमंडतसमर अ वलोक्योसुखकारि ४१॥ तोटकछन्द॥ अवलोकतभीम हिलाजभई। तबदानवकेभुजकंठदई॥ बरुकैवहदानव बीरहयो। सबबंधवकोबहुसुक्खभयो ४२ गीतिकाछंद॥ धर्मसुतकोमांगिआयसु सीखकुंतीपैलही। तबहिडंबी

भीमब्याहीबिधिकरीजैसी चही ॥ रहतबीतेदिनकितेता बिपिनमेंसुखसाजही। कंदमूलनिखातखनिखनि जीविकायोंराखही ४३ ॥ दोहा ॥ रहतकितेदिनजबभयो ता काननकेधाम ॥ पुत्रहिडंबीकेभयोधस्योघरूकानाम ४४ बीतिकितेदिनतबगये तज्योबिपिनवहठाम ॥ छांड़िघरूकाताथली पहुँचेइकचकग्राम ४५ रूपकपरियाको सजेरहेएकद्विजधाम ॥ उद्यमकरिभोजनकरैं सबबंधव गुणग्राम ४६ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहाबिरचितायां घरूकाजन्मवर्णनोनाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

त्रिभंगीछंद ॥ इकचकनगरीसबगुणअगरी कीरति बगरीसकलदिशा। पुरनरसबराजतइहिबिधिराजत साजतसीकनद्योसनिशा ॥ सबकंपतथरथरबकदानव डरघरघरशोचसकोचमहा। नितप्रतिनरमारैंकितेसँहारैं बरणौंनिशिचरकर्मकहा १ ॥ दोहा ॥ नाराजानिपुरनर सबै तबयहाकियोबिचार ॥ दिनप्रतिदीजैएकनर चैन लहैसंसार २ निशिचरसोंकीनोबिनय सबहीमिलितहँ जाय ॥ प्रतिदिनकोतुवभच्छहित नरयकपहुँचोआय ३ मानिबिनयप्रतिद्योसको भच्छएकनरलेहि ॥ जाकोजबहीं औसरा सोभच्छनतेहिदेहि ४ द्विजतरुणीकेधामजहँ बसतयुधिष्ठिरराइ ॥ ताकेसुतको औसरो पहुँच्योइकदिनआइ ५ ॥ सोरठा ॥ द्विजतरुणीअकुलाय बारबारधर मूरछै ॥ फिरिफिरियहपछिताय क्योंनकालिहमहपुरत ज्यो ६ ॥ दोहा ॥ मोहमहादेखतभयो कुन्तीकेउरआइ ॥ ततच्छणवाकोदुखकह्यो भीमाहिंपासबुलाइ ७ (भीमसेन

उवाच) चौपाई ॥ याकेसुतकेपलटेजैहौं । फिरिमिलि
हौंजोजीवतरैहौं ॥ भोजनदानवहितजोभयो । भरिकैम
हिषभीमसँगलयो ८॥ दानवठांउतहांचलिआयो । बै
ठभीमतहँभोजनखायो ॥ धायोअसुरक्रोधकरिभारी ।
बज्रपातसमदोहथिमारी ९ ॥ दोहा ॥ मुष्टिप्रहारकियोअ
सुर आपुशक्तिअनुसार ॥ भीमनआन्योचित्तमें भोजन
भखेअहार १० ॥ दोधकछंद ॥ मारतहीसबभोजनखायो ।
शंकनहीं अपनेउरलायो ॥ बीरदुहूंमिलिकेरणकीनो । को
उनहींतिनमेंबलहीनो ११ युद्धभयोअतिहीगतिऐसो । रा
घवरावणकोरणजैसो ॥ भीवदयोपगुदुष्टसँहार्‍यो । ऐंचत
बैपुरबाहरडार्‍यो १२ ॥ दोहा ॥ ठाढ़ोकीनोपँवरिपर मृत
कअसुरसोलाइ ॥ प्रातहोतपुरनरसकल निरखिभगेअ
कुलाइ १३ सबहीकोशंकाभई सकैननियरेजाय ॥ हैदा
नवनिरजीवयह कहीभीमतहँआय १४ भीमसेनढिग
जायकै संभ्रमदियोभगाय ॥ यहगतिजानीब्यासमुनि
तबहींपहुँचेजाय १५ (श्रीब्यासउवाच) पवनपुत्रमा
र्‍योअसुर सबजगभयोचवाउ ॥ अबासिखमानोबेगही
नगरकंपिलाजाउ १६ मानिसीखऋषिब्यासकी तिहि
पुरपहुँचेजाइ । होतशकुनसहदेवसों कहीनृपतिसुखपाइ
१७॥ चौपाई ॥ कैसेशकुनभयेअबभाई । सो अबमोसों
कहिसमुझाई ॥ सुनहुगोसाईंशकुनप्रभाव । होइलाभ
चितचौगुनचाव १८ आमिषलीनेदेख्योश्वान । गयो
दाहिनोउत्तमजान ॥ लीनो अर्जुनधायछुटाइ । लाभब
हुतपहिंचानोराइ १९ रहेसुकुंभकारगृहजाय । पंचबीर
सँगकुंतीमाय ॥ यहिबिधिबीतिकालबहुगयो । भूपतिद्रु

पदस्वयंबरठयो २० ॥ दोधकछंद ॥ सोहतपंचनकीअवलीअतिपेखततासुकोमोहतिहैमति ॥ उज्ज्वलहैगजदन्तमहाछबि जोन्हमनोद्युतिबर्णतहैंकबि २१ आयजुरेभुवकेसबभूपति है जगमें जिनकी बहुकीरति ॥ कौरवसेनतहांसबसोहति दीरघसायरसोमनमोहति २२ ॥ दोहा ॥ यज्ञद्रुपदनृपकेभयो आयेसबऋषिराइ ॥ रच्योद्रोणगुरुयंत्रनभराहाबेधबनाइ २३ राख्योपरमकठोर धनु मीनयंत्रकेपास । ह्वैहैसोसमरत्थजगबेधैयंत्रअकास २४॥ चौपाई ॥ तप्ततेलसोंभरोकराह। राखोनीचेतबनरनाह ॥ तरेदृष्टिकरिदेखेभाई। मीनयंत्रजोबेधैआई २५ ताउरकन्याताहीकाल । कहीभूपयहडौरैमाल ॥ बारनचढ़ीफिरैसोबाल। लीन्हेहाथपुहुपकीमाल २६ (दण्डकछन्द) बेणीज्योंफणीन्द्र और इन्दुसोमुखारबिंद चंपकबिलासहासमोहतहैमनको । खंजनचपलगतिभंजनहैऐननैन अंजनसहितमनरंजनहैबनको ॥ अधरचिबुकचारुबाहुहैसुढारकुचकनककलशशृंगकंचनसोतनको । कदलीकेखंभसेयुगुलजंघछत्रकवि कोमलकमलजिमिबानिकचरनको २७ ॥ चौपाई ॥ देखिकुवँरिसबउमहेराई । करि२ गर्व छुयो धनुआई ॥ तानि सकै नहिं सकैं उठाई । गयेसबनकेमुँहकुम्हिलाई २८ कौरवसबबंधवपचिहारे। सबहीकेमुखह्वैगयेकारे ॥ धृष्टद्युम्नतबशकुनिहिंदेखि । करतधर्षणाकुवँरबिशेखि २९ (धृष्टद्युम्नउवाच) सवैया ॥ शूरनहींशूरनमेंकूरमहाकूरनमें दुष्टतासोंपूरणहैंपूरपुरवाईको । मूढ़महामूढ़नमेंगुणीमंत्रगूढ़नमें पगनआरूढ़नमेंसंग्रहचवाईको ॥

ऐसोअबिवेकीहै कुटेवटेकीजिहि तासोंएकएकाजोन खोजहैभलाईको। नाहिंबलीबलिनमें छलीमहाछलिनमें सुदेखियेनमुखऐसे कुटिलकसाईको ॥ ३० ॥ दोहा ॥ बारेलाचागेहमें पांडुपुत्रयहिजाइ ॥ होतोजीवतपार्थजो ले तोधनुषचढ़ाइ ३१ यन्त्रबारदशबेधतो महाबीरबलबण्ड ॥ सुनिपुनिकोप्योकर्णतब बाढ़्योकोपअखण्ड ३२ (कर्णउवाच) जोमारोंअबद्रुपदसुत कौन छुड़ावे तोहिं ॥ मरोमर्मनातूलहै कानिभूपकीमोहिं ॥ ३३ ॥ सोरठा ॥ चल्योकर्णधनुपास बरजिकृष्ण तबयों कही ॥ छांड़िदेहु यहआस बेधोजायनयन्त्रयह ३४॥ दोहा ॥ जोबेधोइकबाणसों तौजगमें यशहोत ॥ हारेहोयकलङ्कबहु और लाजहोगोत ३५ रूपकपरियाको कियो अर्जुन वचनप्रकाश ॥ नहींसभासमरत्थकोउबेधैयन्त्रअकाश३६(द्रुपदउवाच) चौपाई ॥ कैभूपतिकैतपसीहोई। एहाबेधकरैजो कोई ॥ ताउरकन्यातेहीकाल। डारैअमलकमलकीमाल ३७ ॥ तबचलिअर्जुनआगेगयो। धनुषचढ़ायहाथसोंलयो॥ अतिकठोरजान्योधनुजबहीं। भीमसेनमुखचाह्योतबहीं ३८॥दोहा ॥ भीमसेनबलवन्तगति अर्जुनकीपहिचानि ॥कोमलकरिधनुपार्थकर दयोबारदशतानि ३९ ॥ लेधनुगयोकराहतन इकटकताहिनिहारि ॥ झाईपाई मीनकीरह्योध्यानउरधारि ४०॥ दीठिमूंदिमनएककरि बेध्यो सोशरएक ॥ फोरिगयोइषुहगनको कौतुककरतअनेक ४१ ॥ चौ० चूकिगयोनरएक बखानै। बेधिगयो शरएक तजानै ॥ बाललियेकरमालहिआई। अर्जुन के तबहीं उरनाई ४२ देखत कर्ण महा रिसभीनो । दारुण

कर्ममहाइनकोनी॥जैतपसीअबयाकोजैहै । लाजसबैभुत्र
पालनऐहै ४३ ॥ दोहा ॥ कर्णचढ़ायोकोपिधनु देखतसब
भूपाल ॥ निरखिशोचउरमेंभयो बिकलभई उरबाल ४४
(अर्जुनउवाच) सवैया ॥ चन्द्रमुखीकतशोचकरैजिय ग
वहरोंकुरुनन्दनकोतो। आजुकरौंछिनमेंरणमें जययुद्धजुरै
यमआयकैजोतो ॥ हौंसमरत्थअकेलोइ व किमिसोदरजू
झहिंधायकैसोतो । जोनबधौंतौलजाऊँपिताकहँ अर्जुन
नामकहाइहक्योंतो ४५ ॥दोहा॥ कोपदोऊबीररण रह्यो
बाणनभलाइ ॥ लोपेसूरजतमभयो उपमाकहीनजाइ ४६
देख्योकरणप्रचंडरण पार्थकोपिज्योंकाल ॥ रुद्रबाण
बेध्योकवच बिकलभयोबेहाल ॥४७॥ तबहिंकरणछांड्यो
समर जयजयकरितिहिकाल ॥ दुर्योधनइतभीमसों की
नो युद्धकराल ४८ (करणउवाच) अरेकपरियाकौनतू
मोसोंकहि सतभाइ ॥ तेरेशरऐसेलगैंज्योंअर्जुनकेघाइ
४९ योंकहिकरणबराइगो भिरेभीमभुवराय ॥ मल्लयुद्ध
करिबीरदोउ थाकिरहेअकुलाय ५० ॥ चौपाई ॥ बरकरि
भूपतिभीमउछाऱ्यो । मल्लयुद्धकरिभूपरडाऱ्यो ॥ जय
जयकारपार्थतबकऱ्यो । सम्हऱ्योभीमकोपितबलऱ्यो ५१
माऱ्योगुरजगिऱ्योभुवराउ । ठाढ़ोभीमकरैनहिंघाउ ॥
चेतिफेरियोंकहैनरेशू । तूकोसुभटतपीकेभेशू ५२ दोहा॥
पवनपुत्रअरुपार्थके ऐसेहुते प्रहार ॥ वैसोई मैं तूलख्यो
बलदीनोकरतार ५३ ॥ सोरठा ॥ सहदेवहुतहँ आय गहि
करतै भीमहिंगयो ॥ द्रुपदसुतासँगलाय पहुँचेकुन्ती
निकटसब ५४ (युधिष्ठिरउवाच) चौपाई ॥ सुनिसुनि
मातमहासुखदाई । आजुकलूहमभिक्षापाई ॥ तुमआ

ज्ञासबबांधवमानैं । सोतजिऔरनचित्तहिआनैं ५५
(कुंत्युवाच) दोहा ॥ पांचौबन्धुनसोंतुम्हैं पुत्रआय बहु
नेहु ॥ जोकछुपाईभीखतुम बांटिसकलमिलिलेहु ५६
(अर्जुनउवाच) माताकोसुनिसुखदत्रिय बचननमेट्यो
जाइ ॥ मुखजोयोतबपार्थको पांचालीअकुलाइ ५७ नि
रखीकुन्तीद्रौपदी मनहींमनपछिताइ ॥ बचनअनैसोमैं
कह्योपुत्रनसकैनशाइ ५८ आयेहलधरकृष्णतहँ जानत
सगरोभाउ ॥ करिकुन्तीकोबन्दनामिलेयुधिष्ठिरराउ ५६
तबबिचारिकैद्रुपदनृप धृष्टद्युम्नसुतबोलि ॥ आयकपरि
याकोभये भेदलेहुसुतखोलि ६० ॥ सुन्दरीछन्द ॥ नीचकि
धौंकोउउत्तमहैनर । कैबनमेंकिबसैपुरसुन्दर ॥ श्रीयदु
नन्दनभूपतिहैजहँ । आयदुर्योसुतभूपतिकोतहँ ६१ बा
तबितीतकहेभुवभूपति । कृष्णसुनीबहुधाहरषीमति ॥
पूछतपार्थहियोंयदुनायक । तैंसुखआजुदयोसुखदायक
६२ ॥ दोहा ॥ एहाबेधकरयोभलीसुनिहोपार्थसुजान ॥
गर्बनवायोकर्णकोमारयोकौरवमान ६३ (अर्जुनउवाच)
सवैया ॥ कष्टपरयोजबहींजहँआयके राखीतहींसबपैजह
मारी । मांझस्वयम्बरद्रौपदीकैअतिकर्णहिगर्बबढ़्योतहँ
भारी ॥ जीतिकैबीरधनंजयधीर सुआजुलईबलकैबरना
री । कीजैकहौसरतौकेहिभांतिजोहोतेसहायनआयमुरारी
६४॥ दोहा ॥ भलोहढ़ानोकरणरण यहैसराहेउताइ ॥
भीमकहेकुरुराजहरि बड़ोबलीयहआइ ६५ मैं अघवा
योयुद्धमें धनिदुर्योधनराय ॥ हनतोएकनिमेषजो करते
सबैसहाय ६६ ॥ चौपाई ॥ धृष्टद्युम्नसबरीगतिजानी ।
कहीपितासोंसबसुखदानी ॥ वेक्षत्रीकुलउत्तमआहि ।

नहींकपरियाजानोताहि ६७ हरिहलधरतिनपैचलिआ
ये। देतबड़ाईबहुगुणगाये॥ यहसुनिभूपतिफूल्योहियो।
बिधिनासबमनभायोकियो॥६८॥ (द्रुपदउवाच) चाम
रछन्द। साजिसाजिबाजिराजमत्तदन्तगाजिकै। चर्मबर्म
अस्त्रशस्त्रचीरद्रब्यसाजिकै॥ जायकैअवासद्वारबस्तु
सोरखाइयो। देखिकैतपीनकोसुकर्ममर्मपाइयो॥६९॥
॥दोहा॥ आयसुदीनोभूपजो सोईकीनोजाइ॥ मण्डप
छायोबिधिसहित मुक्तनचौकपुराइ ७०॥गीतिकाछन्द॥
आइकैतहँपंचबन्धवसकलसौजनिहारियो। नकुललखि
बाजीसराहे पार्थधनुटंकारियो॥ भीमफूल्योदेखिकुंजर
खड्गसहदेवकरगह्यो। नृपतिसबदेखतसराहतहाथति
नकछुनालह्यो ७१ देखियाबिधिद्वारभूपति परमसुखहि
रदैभयो। हैदेवगन्धर्बयक्षकोऊबेषतपसीकोलयो॥ बो
लिलीनेपार्थभीतरद्रुपदनृपसुखपाइकै॥ तबयोंकह्योहँ
सिभीमजेठोप्रथमब्याहैआइकै ७२ सुनिभयोबहुसन्देह
भूपतिनीचकोऊहैमहा। पंचजनत्रियएकब्याहै मूढ़ता
बरणौंकहा॥ बोलिपठयेब्यासआये कहीतिनसोंबिधिस
बै। एकपतिहैधर्मपुत्री कहीऋषिसोंयहसबै ७३॥दोहा॥
जेठोब्याहैजात्रियहि लहुरेकीहैमाय॥ लहुरेकीत्रियजेठ
के सुताबराबरिआय॥७४॥ (ब्यासउवाच) सोमबंश
येपाण्डुसुत एकज्योतिमनएक॥ पूरबजन्मसुरेशये सुनि
येसहितबिवेक॥७५॥ पंचइन्द्रइनवहिजनमपायोशिववर
दान॥ पांडुनृपतिगृहअवतरे क्षत्रीरूपनिधान ७६ रवि
कन्याहैद्रौपदी सेयेशिवचितलाइ॥ पंचकलाकैदेहुवर
यहबांछासुखपाइ॥७७॥ दिव्यदृष्टिकैनृपतिको दरशायो

व्योहार ॥ देखैएकैज्योतितहँ पंचइन्द्र अवतार ७८ (द्रुपदउवाच) चौपाई ॥ तुमबिनकोसंभ्रमहिंभगावै । तब क्षितिनायकऋषिगुणगावै ॥ नृपबिवाहकीसबविधिठानी॥ बोलियुधिष्ठिरसबसुखदानी ७९ तिनकीभांवरिकरिनरनाह । फिरिचारोंकाकरयोबिवाह ॥ दुहूंकुलनिकीविधिही जैसी । भांतिभांतिसबकीनींतैसी ॥ ८० ॥ पंचपुरुषको कन्यादीनी । बिदादाइजोदैकरिकीनी ॥ हयहाथीपटभूषण घने । दासीदासदियेकोगनै ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ लैदलपरिगहगृहचले द्रुपदफिरेपहुँचाइ ॥ गयेहस्तिनापुरसबै आपसदनसुखपाइ ८२ सुनिदुर्योधनके भयोअङ्गअङ्ग अतिदाह ॥ नेकसुहायनद्योसनिशि चकितचित्तनरनाह ८३ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकवि छत्रसिंह विरचितायांबकदानववधद्रौपदी बिवाहवर्णनो नामएकादशोऽध्यायः ११ ॥

(दुर्योधनउवाच) दोहा ॥ ग्रामधामअपनोलयो पांचौबन्धवआय ॥ कहोबन्धुकीजैकहा इनसोंकछुनबसाय १ ॥ बरुणनगरकोआदिदै कीनेकितेउपाय ॥ तबहूंमुयेनपाण्डुसुत फेरिप्रगटभे आय २ ॥ तपीवेषआए हुते भूपद्रुपदअस्थान ॥ हमकाहूजानेनहीं मारेसबकेमान ३ ॥ भीषमबिदुरबुलायकै बूझेमन्त्रसुजान ॥ कौनउपाव करैंकहो सोमतदेहुनिदान ४ ॥ (भीष्मउवाच) अपकारीतुवबन्धुनृप उनकीकछूनखोरि ॥ महासयानोपवनसुत अवगुणसहैकरोरि ५ बरजोअपनेसोदरन अवगुण करैनकोइ ॥ अतिसनेहतुमसोंउनहिं ताहीदिननृपहोइ ॥ ॥ ६ ॥ (राजोवाच) दोषलगावतहो हमैं उनको भ

लोसुहाइ ॥ शकुनिकह्योयहमन्त्रतब बीचबैठिकैआइ ७
कतबूझतभीषमबिदुरयहैमानिमनलेहु ॥ जोकछुउनको
देशहै उन्हैंआपुसोदेहु ८ गयोनृपतिधृतराष्ट्रपै सुनिभूप
तियहबात ॥ शकुनिकह्योसोईकह्यो पितुकेआगेजात ॥
९ बोलियुधिष्ठिरतबकही सुनिबिनयोसोमानि ॥ रह्यो
इन्द्रपथजाइकै आपुग्रामउरजगनि १० ॥ चौपाई ॥ मानि
रजायसुचलेनरेश । सुबसइन्द्रपथकीनोदेश ॥ मणिमय
खचित बनेसबधाम । मनहुलसतसुरपतिके ग्राम ११ ॥
फटिकथम्भकीजागतिज्योति । होइसूरकिरणनितैंहोति ॥
बापीकूपसुनीरतड़ाग । दिशिदिशिदीसतसुन्दरबाग ॥
१२ कल्पबृक्षसेद्रुममनमोहैं । फूलैंफलैंचहूँऋतुसोहैं ॥
चंचलहयअतिधामबिराजैं । तमकेसुतसेकुञ्जरगाजैं १३
भाटभलेबिरदावलिगावत । जोमनबांछितसोईपावत ॥
भूपयुधिष्ठिरआज्ञाहोइ । चारोंबन्यकरतहैंसोइ १४ करत
सबैआनँदमनभाये । एकद्योसनारदमुनिआये ॥ आदर
करिबहआसनदीनो । तबऋषिवचनप्रगटयोंकीनो १५
तीनिहुलोकजातहोंजहां । अतिआतिथ्यकरतसबतहां ॥
मेरोवचननमेटैकोइ । जोईकहोंवहैपैहोइ १६ (ऋषिरु
वाच) तुमहोसोदरपंचसनेह । तरुणिद्रोपदीहैतुमगेह ॥
मिलिसबबन्धवयहमनधरो । मोआगेसबबाचाकरो १७
जौलौंबीतिजायँषटमास । एकरहैद्रौपदी अवास ॥ अव
धिमांझदूजोजोजाइ । बारहवर्षहोइबनताइ ॥ १८ ॥
सबहीमिलिकैआज्ञामानी। स्वर्गसिधायेऋषिसुखदानी ॥
प्रथमनृपतिकीबारीभई । पांचालीशय्यापरगई १९ द्विज
कीसुरभीचोरनलीन्हीं । आयपुकारविप्रतहँकीन्हीं ॥ सु

नैनकोऊलगैगुहारि। सोतवथक्योपुकारिपुकारि २० (द्विजउवाच) छप्पै॥ क्षत्रीकुलहिकहाइ आपजगअपयशलावत। सुरभीविप्रगुहारिक्योंनतुमपापीधावत॥ कायरह्वैकितरहेमूढ़तुमधामनिगहिगहि। औरनजानैनामरटैयहअर्जुनकहिकहि॥ त्रियकाजसुरभिद्विजकाजजोनहिंइनकोउपकरहि। द्विजदोषलगैतापुरुषकोघोरनरकमेंसोपरहि २१ (अर्जुनउवाच)॥ दोहा॥ रहिरहिविप्रसुजानतूजागनदैंनरनाथ। बिनतीकरितबहींचलौं लैकृपाणतुवसाथ २२॥सोरठा॥ धनुनहमारोहाथ धरोसदनमें विप्रतहँ। द्रुपदसुतानरनाथ पौढ़ेताहीधाममें॥२३॥ ॥तोटकछन्द॥ द्विजएकहुबातनमानतुहै। मुखबैनकुबैननआनतुहै॥ रचिकैसबबातबनावनछोड़हु। लहिपापमहाशिरशापहिओढ़हु॥२४॥ डरिशापहिसोंअकुलाइमनै। चितमेंद्विजकोअपमानगनै॥ नृपधामगयोधनुबाणजहां। दृगओझिलबांहदईजुतहां॥२५॥ तबहींबरबीरचल्योधनुलै। मुकरायदईसुरभीबलुलै॥ ऋषिनारदबैनधरेमनमें। हिततीरथबेगिचलोबनमें २६ अवलोकिसुदेवनदीजबहीं। हितमज्जनपत्थधस्योतबहीं॥ लखिनागसुतालगिदृष्टिरही। अवलोकितहींतबबांहगही २७ गहिताहिपताललहिलैसुगई। वहब्यालसुताअतिमोहभई॥ तुमतोबरईश्वरमोहिंदये। अतिनिष्ठुरक्योंतुमनाहभये २८ (अर्जुनउवाच) ऋषिनारदकोहमबैनलह्यो। अबयाबिधितीरथपत्थगह्यो॥ ब्रतभंगमहातियअङ्कभरै। बहुतीरथकीहमजातकरै॥२९॥ यहअपनेजीमहँनेमधरौं। फिरितोकहँसुन्दरिआइबरौं॥ इमिब्याल

सुतातबबातकहै । इहिभांतिनहींतुमधर्मरहै ॥३०॥ चलि
हौममबैननशाइजबै । पुनिजायश्रकारथधर्मसबै ॥ पुनि
तासँगपत्थबिवाहभयो । तहँकेतिकद्योसबिरामलयो ३१
त्रियनामउलूपिहिगर्भभयो । सुतमन्मथज्योंश्रवतारल
यो ॥ उरतीरथकीतबशुद्धिभई । कहिपत्थतबैगहिबाट
लई ३२ (उलूपीनागकन्योवाच) सुनुप्राणपतीइकबात
कहौं । केहिभांतिनिहौंकुशलातलहौं ॥ द्रुमदाड़िमकोदर
शाइदयो । जबजानहुजूयहसूखिगयो ॥ ३३ ॥ दोहा ॥
तबसँदेहमोप्राणको कीजोनागरिनारि ॥ श्रायोनिकसि
पताल्लतेतीरथहेतबिचारि ३४ ॥ सोरठा ॥ नैमिषारचलि
जाय परसिबनारसकोगयो ॥ बाराणसीश्रन्हायगयातृप्त
कीन्हेपितर ३५ ॥ दोधकछन्द ॥ सागरसंगमगंगगयेजू ।
द्योसकितेबनमेंबितयेजू ॥ न्हाइतबैमथुराहिचलेजू । देख
तश्राश्रमकुण्डभलेजू ३६ न्हायनताजलमेंनरकोई । जा
यलखौफिरिश्रावतसोई ॥ बिप्रनकोलखिपार्थकहीयों ।
पैठतकोउनमध्यकहीक्यों ॥३७॥ (विप्रउवाच) यामेंज
न्तुरहैश्रतिभारी । सोजगजीवनकोदुखकारी ॥ पार्थन
हींकछुत्रासकरद्योजू । लैपगताजलमांझधरयोजू ३८ श्रा
यगह्योपगताच्छणपाहीं । श्रर्जुनकेउरभयकछुनाहीं ॥ लै
जलतेवहबाहरश्रानी । ह्वैगइसोत्रियरूपसयानी ॥ ३९ ॥
श्रर्जुनसोंयहबैनकह्योजू । शापदियोऋषिपापगयोजू ॥ ता
जलतेतियपांचकढ़ीयों । मानसरोवरइन्द्रत्रियाज्यों ॥४०॥
॥ दोहा ॥ पांचत्रियनकोमोच्छकरि चलिश्रर्जुनबरबीर ।
तज्योद्वारमगतबगयो माणिकपुररणधीर ॥ ४१ ॥ सो० ॥
त्रियाबाहुवरबाहु जीत्योंछितिमण्डलघनो ॥ राजैंतहँनर

नाह सकलजगतकोकामतरु ४२ ॥ दोहा ॥ ताकेदुहि
ताइन्दुमुखि चित्रांगदासुनाम ॥ रूपबहिक्रमउरवशी वि
ज्जुललतासीबाम ४३ ॥ सोरठा ॥ कनकबरणतनज्यो
ति लसतनीलपटओटज्यों ॥ जगरमगरद्युतिहोति मा
नोघनमेंदामिनी ४४ नाहिंनिमिषयकताकि विकल
सकलजियकलनहीं ॥ रहीपार्थमनथाकि करीबसीठी
बन्दिजन ४५ ॥ गीतिकाछन्द ॥ जायनृपकोतबजनायो
ब्याहअर्जुनकोभयो । सनमानदन्तीदियेबाजी द्रब्यब
हुकञ्चनदयो ॥ चारिबर्षहिरहेताथल पुत्रएकअर्जुनल
ह्यो । जाहुतीरथजातको नरनाहसोंतिनयोंकह्यो ४६
नायमाथोभूपकोचलि द्वारकानगरीगयो । पायसुधि
आयेकृपानिधि दुःखसबकेउरभयो ॥ रुक्मिणीदैआदि
सबत्रिय ताहिभेंटनआइयो । चलीकौतुकहितसुभद्रा
निरखिबहुसुखपाइयो ४७॥ सोरठा ॥ चंचलनैननिता
कि झीनेपटचहुँदिशिलखिन ॥ रहीपार्थगतिथाकि प
रिफन्दातरफैसफर ४८ ॥ दोहा ॥ नखशिखसकलब
नीठनी करैसकलशृङ्गार ॥ धीररहीनाहिंपार्थउर ब्याकु
लतननसम्हार ४९ ॥ चौपाई ॥ तबहिसुभद्राअर्जुन
देख्यो । अपनोपतिकरिउरमेंलेख्यो ॥ शिवसेवाको
यहसबसार । दीजोमोहिंपार्थभरतार ५० यहसबबि
धिश्रीहरिपहिंचानी । तबयहअपनेउरमेंआनी ॥ ग
र्भसुभद्राकोयहभयो । जठरबासुअहिदानवलयो ५१
दीजैपार्थहिमिटैकलंक । श्रीहरिआनीयहबुधिअंक ॥ बो
लिपार्थसोंयहतबकही । बसितुममनहिंसुभद्रारही ५२
मैंआज्ञादीनीहरिलेहु ॥ पावेहौहैअधिकसनेहु ॥ हरी

कुँवरिअर्जुनसुखपाय ॥ भईशुद्धअन्तःपुरजाय ५[illegible]३ ॥
दोहा ॥ कोपभयोबलभद्रको अबअर्जुनकितजाय पु[illegible] ॥
लाऊँगहिकैद्वारका छांड़ौंभीखमँगाय ५४ कोपिच[illegible]२[illegible]यो
सजिसेनबहु बरजेश्रीहरिआइ ॥ कोपारथकेस[illegible]सहै
क्योंरणजीत्योजाइ ५५ हारेहोयकलङ्ककुल जीते[illegible]
शनाहिं ॥ तातेकोपहिपरिहरो चलोद्वारकाजाहिं ५[illegible]
(बलभद्रउवाच) तेरीयहकरतूतिसब कछूनजानीजाय ॥
फेरिनकछुउद्यमाकियो बैठिरहेअरगाय ५७ आयेअ
र्जुनइन्द्रपथ भूपतिबहुसुखपाइ ॥ लईसुभद्रागेहमें म
ङ्गलचारकराइ ५८ पुत्रबधूकुन्तीलखी बहुबिधिकरि
आनन्द ॥ शुभलक्षणगुणआगरी मुखद्युतिराकाचन्द
५६ ॥ चौपाई ॥ यहबिचारिश्रीहरिजूकस्यो। सब
हीसोंऐसेअनुसस्यो । चलौइन्द्रपथजैयेभाई । जाय
पार्थकोकरैंसगाई ६० लीनेगजरथतुरीतुषार ॥ जात
रूपभूषणभण्डार ॥ हरिहलधरसबसंगालिवाई । पहुँ
चेबेगिइन्द्रपथआई ६१ पार्थहिबिहँसिसुभद्रादई ।
भाँवरिपारिरीतिसबठई ॥ हस्तीहयरथभूषणदीने ।
याचकसबैअयाचीकीने ६२ ॥ दोहा ॥ करीबिदाबलभ
द्रकी नगरद्वारकाहेत ॥ आपुकृपाकरिहरिरहे भूपति
केसङ्केत ६३ गर्भसुभद्राकोभयो पुत्रकलाजनुचन्द ॥
नामधस्योअभिमन्युतब कीन्हपरमआनन्द ६४ द्रुपद
सुताकेपंचसुत प्रकटभयेसुखकारि ॥ मातएकपितुपांच
ते पांचहुकीअनुहारि ६५ दुर्योधनसंशयकियो रचीकहा
करतार॥हतेअकेलेपञ्चवे अबबाढ़्योपरिवार ६६॥इति
श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविर

चितायां सुभद्राविवाहवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥
सोरठा॥ खेलतपाँसेसार अर्जुनकृष्णअनन्दसों॥डारत
दाँवहँकार अपनोअपनोभाषिकै १॥ भुजङ्गप्रयातछन्द॥
धर्‌योबिप्रकोरूप यों अग्निआये। दुखी दीन ह्वैकैमहा
रोगछाये॥ तहांआयकेदीनबाणीबखानी। हरोपीरमेरी
महादुःखदानी २ कहैंअग्निमोकोक्षुधानेकनाहीं। दया
आपकीजैमहाजीवमाहीं॥ कियेयत्नकरिइन्द्रकोबिप्र
जार्‌यो। महाकोपिकैनीरसोंबोरिमार्‌यो ३ सबैऔरकोमैं
भरोसोनशायो। चल्योहौंअबैरावरेपासआयो॥ चरोंकान
नैइन्द्रकोबीरजैसो। महारोगनाशैकरोकाजतैसो ४ चले
कृष्णजूपार्थकोसंगलीने। बनेजारिबेकोसबैकाजकीने॥
तबैअग्निसोंपार्थबाणीबखानी। धनुर्बाणनाहींसुनौसुःख
दानी ५॥दोहा॥ अक्षयतूणदीनोअगिनि आपकाजपहि
चानि॥ दियोधनुषगांडीवतब नन्दघोषरथआनि ६ सा
जिदियोरथअर्जुनहिं तबहींश्रीयदुराय॥ पूरब दिशिपठ
योसुभट पावकसाजेजाय ७ आपरहेपश्चिमदिशा छाइ
लईदिशिवान॥ जीवजन्तुताबिपिनमें भाजिनपावैंजान॥
८ पूरबतेंसाजीअगिनि अर्जुनपरमप्रचण्ड॥ दीनशब्द
रोवैंसबै सावजुपक्षिअखण्ड ९ जीवपुकारैंदीनरट सुन
सुरपतिसुखदाय॥ तुवबनजारैंअगिनियह यहकततोहिं
सुहाय १० प्रलयकालकेमेघजे तेबोलेसुरराय॥ का
टिछानबेएकसँग बरसहुबनपरजाय ११ उनैजोआये मे
घनभ तमचारोंदिशिछाय॥ बरसोहैंलखिपार्थतब लीनो
धनुषचढ़ाय १२॥सवैया॥ धायकैपार्थचढ़ायलयो धनु
छायलयोबरअम्बरबानन। दौरिदवागिनिलागिउठीद्रुम

जारतशाखसमूलसपानन ॥ कोपिमहामघश्रावरस्यो कहुँ एकहुबूंदनभीजतकानन। ब्योमबिलोकतश्रद्भुतकौतुक किन्नरयक्षचढ़ेसुबिमानन ॥ १३ ॥ दोहा ॥ द्वादशयोजन लौंबिपिन परैबूँदनहिंएक ॥ कोटिछानबेजलदमिलिउद्यम करैंश्रनेक १४ शशास्यारसावरसुश्रर सेहीसिंहसकोच ॥ सारोशुकसोनासबैसकलशाचाननशोच १५ चिराचील्ह चिमगादरें चातकचक्रचकोर ॥ जरतनउबरतजीवसब बचतनकाहूश्रोर १६ ॥ दंडकछन्द ॥ धायधायमेघबर छायछायछितिपर बरषिबरषिहारिभागेभहराइकै। झरपि झरपिझरतड़पितड़पितहां जितजितनीरगये ढारिढहरा यकै ॥ तरुतरुलागिश्रागिबरतनउबरतभागिभागिपक्षी पशुबचेनपरायकै । छत्रबलवन्तवीरपार्थकोश्रनन्तबल श्रगिनितृपितकियोकाननजरायकै १७ ॥ दोहा ॥ सुनि सुनिबनकीयहदशा तबकोप्योसुरराय ॥ हन्योबज्रबाणा वली टूटिपरीखहराय १८ ॥ चौपाई ॥ श्रर्जुनबाण लयेफिरिछाई। बूँदनपरतकहूंबनश्राई ॥ शरपंजरतोस्यो दशबार । जोरेपार्थवहैश्राकार १९ यहिबिधिबनखां डवाहिबरायो । भग्योमयासुरदानवश्रायो ॥ राखुशरण यहश्रसुरपुकारै । मोहिंश्रगिनियहजारैमारै २० ॥ दईदिलासाराख्योसोय। छांड़ित्रासतोहतैनकोय ॥ श्र सुरकहैसुनुपार्थसयाने । तेरेकर्मनजायँबखाने ॥ २१ (मायासुरउवाच) दोहा ॥ जितनेत्रिभुवनमेंश्रसुर हौंतिन कोश्रुतिधार ॥ जबचाहौतबश्रायहौंकरैंकाजसबसार २२ बिदाकरीश्रर्जुनसुभट श्रसुरचल्योसोधाम ॥ पुरईपावक कामना सबबिधिकैगुणग्राम २३ श्रायेसुरपतिपुहुमिमें

बिग्रहसकलनशाय ॥ सुतहिदेखिकलुसुखभयो कलुमन मेंपछिताय २४ इन्द्रासिधायेसुरपुरी चलेपार्थगृहआप ॥ चलेइन्द्रपथकृष्णजू जिनकोअमितप्रताप २५ निरखि युधिष्ठिरभूपतब कहीपरमसुखपाय ॥ श्रीयदुरायप्रतापते तैंजीत्योसुरराय २६ गहिहै कोऊधनुषनहिं ताको सुनिब लबण्ड ॥ पूरिसुयशवरपररह्यो सप्तद्वीपनवखण्ड २७ द्वारावतिकोतबगयेबिदाभयेयदुनाथ ॥ इतभूपतिकेनिक टहीशोभितबन्धवसाथ २८ (युधिष्ठिरउवाच) सोरठा॥ रचियेधामबनाय उत्तमदीखेदूरिते ॥ बहुविधिचित्रकरा य धवलनवलकीनीसभा २९ (अर्जुनउवाच) चौपाई जोतुमभूपतिआयसुपाऊं। नाममयासुरबेगिबुलाऊं (रा जोवाच) बेगिहिबन्धवताहिहँकारो। उत्तमउत्तमधामसँ वारो ३० शुद्धिमयासुरकीउरआनी । आयगयोतवहीं सुखदानी ॥ आवतहीतिनभूपतिदेखे। धर्म्मधुरन्धरचित्र विशेखे ३१ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां इन्द्रवनखाण्डीवदहनोनामत्र योदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ इति आदिपर्वसमाप्तः ।

अथसभापर्वकथनम्।

दोहा ॥ धर्मधुरन्धरतिहिछिनक धर्मसुवनभुवभूप ॥ कहीमयासुरअसुरसों कीजैसभाअनूप १ ॥ नगस्वरूपि णीछन्द ॥ नवायशीशवेगिकै। चल्योसुबीरचेतकै ॥ स मुद्रपाससोगयो। सुधामशीशकैलयो २॥ दोहा ॥ हरना कुशकोसदनसो लीनोतिनधरिशीश ॥ लैआयोसोइन्द्र पथलखिफूलेअवनीश ३ सवैया ॥ सुन्दरनीलेरँगीलेखरे

अरुपीरेहरेरचिधामबनाये । माणिक्लालनकेबहुजाल प्रबालनकेखचिथम्भसुहाये ॥ स्वच्छशिलाजनुदीखत नीरबनेचकवाजनुपैरतधाये । हैअमरावतितेअतिअद्भुत सुन्दरसदनसबैछबिछाये ४ ॥ दण्डकछन्द ॥ शोभाही केसारतहँ फाटककिवारबने केतेद्वारद्वारजिनैदखबुधिभ रमें । दियेहैकिदियेहैबिचारतहीभूलिरहे जानियेसनीर पैनीरनाहींसरमें ॥ धामनिकेबीचनिदरीचनिमरीचिका नि राजतहैनीलमणिछत्रघरघरमें । भूपकीसभाकीआ भाकौनसोंबखानिकहै ऐसीद्युतिनाहींकहूँइन्द्रकेनगरमें ५ ॥ दोहा ॥ पटदीनेसेदेखिये दियेनपटतिहिद्वार ॥ जेस रवरहैंनीरयुत पृथ्वीकेआकार ॥ ६ ॥ मनभायोदैकेसबै गयोमयासुरगेह ॥ भूपतिबैठेतिहिसभा बन्धुनसहितस नेह ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ ऋषिनारदभूपतिपैआये । निरखिस भाबहुबिधिगुणगाये ॥ ऐसीसभानमैंकहुँदेखी । सबठामन मैंउत्तमलेखी ८ (ऋषिरुवाच) ॥ सवैया ॥ किन्नरयक्षपुरी अवलोकतधर्मपुरीअवलोकतफीकी । भोगवतीअवलोकि सबैसुबिलोकिसुरेशपुरीसुरहीकी ॥ भूपतिभूपनकेधनधा मबिलोकिफिर्योनभईरुचिजीकी । औरसभानसभासम लागतिरावरीआहिसभाअतिनीकी ९ (राजोवाच) दोहा ॥ तीनभुवनकीबातसब जानतहौऋषिराय ॥ शुद्धिकहोनृप पांडुकी मोकोसकलसुनाय ॥ १० ॥ (ऋषिरुवाच) चौ पाई ॥ सुनिअवनीपतिबहुसुखदाई । एकबातपैकहीन जाई ॥ निरखतपंडुहिभयोसशोकू । भईकुमृत्युगयोयम लोकू ॥ ११ ॥ यज्ञकरोमिटिहैसबदोष । पांडुमहीपतिपावै मोष ॥ बिलखैभूपतिबहुदुखपाइ । दैउपदेशचलेऋषि

राइ १२ राजसूयमषभूपतिकीजै । भूपजीतिजगमेंयश
लीजै ॥ यज्ञविधानसकलअनुसरै । एकरायतेरक्षाकरै
१३ चंदनगारेक्षितिपतिएक।एकतेल्लावैसमिधअनेक ॥
सहस्रधेनु सुबरनयुतदेहु । पितुकोतारिजगतयशलेहु
१४ भूपतिकेमनचिंताआई । जिनकेश्रीहरिसदासहा
ई ॥ यहकहिनारदस्वर्गसिधाये । सुमिरेभूपतिश्रीहरि
आये १५ ऋषिउपदेशमहीपसुनायो । यज्ञकरोउनमो
हिंबतायो ॥ श्रीहरिकह्योमतोयहकीजै । जीतहिंजरासं
धयशलीजै १६ तिननरमेधयज्ञहैनाध्यो । ताहितभूपति
कोगएबाँध्यो ॥एकघाटिसौअधिपतिरोके । परेबंदितेमहँ
सबशोके १७ मारिताहिहौंबंदिमिलाऊं । शोकवंतसब
भूपछुटाऊं ॥ भीमसेनअर्जुनसँगलाये । रूपकपरियाके
तिनठाये १८ नगरराजगिरिचालितेगये । दुर्गमठामबि
लोकतभये ॥ मध्यनगरकेलागेजान । बाजनबाजेहने
निशान १९ यज्ञथलीभूपतिहोजहां । लागेजानसबैमि
लितहां ॥ रक्षकहुतेमल्लतिहिद्वार । बिनबूझेक्योंच
लेअगार २० ॥ दोहा ॥ तिनकरपकरयोभीमको देहिन
क्योंहूंजान ॥ तुमसोंकछुसरबरिनहीं कहतनबनईआन
२१ भिरयोमल्लसोभीमसों कीनोअदभुतयुद्ध ॥ पवनपु
त्रकेउरहन्यो मुद्गरबहुकरिक्रुद्ध २२ लरखरायभूतलगि
रयो पार्थपछारयोआइ ॥ चेतभीमकरिक्रोधअति हन्यो
गुरजउरधाइ २३ फेरिबलीबरबाहुबल डारीभुजाउखा
रि ॥ करयोदुष्टसोप्राणबिनु फटिकशिलासोंमारि २४ क
रयोप्रणाममहीपको यज्ञथली में जाइ ॥ देखतहीसन्दे
हकरि योंबोल्योभुवराइ २५ आयतपीकेबेषतुम देखत

बहुबलखण्ड ॥ मांगोजोमनकामना सोईदेहुँअखण्ड २६ (श्रीकृष्णउवाच) दोधकछंद ॥ मांगतयुद्धमहीपति दीजै। जीमहँऔरबिचारनकीजै ॥ तीनिहुँमेंजोआयसुपावै। सोईतुमसोंजूझनआवै २७ भूपतिकृष्णतहींपहिंचाने। बैनतबैयहिभाँतिबखाने ॥ मोसँगबारअठारहहास्चो। मैंफिरितूतबदेशनिकास्चो २८ अबनयुद्धमंडोंसँगतोहीं। तूरणपीठिदिखावहिमोहीं ॥ कोमलगातधनंजयदेख्यो। युद्धनतामहँचित्तहिलेख्यो २९ भीमघड़ीइकयुद्धहिसैहै। फेरजुस्चोकतयापैजैहै ॥ भूपतिरोषमहाउरआन्यो। कोपितभीमचढ़्योसुखमान्यो ३० ॥ सोरठा ॥ जुरेयुद्धदोउबीर मानहुगजमातेफिरत ॥ शूरसमररणधीर मनहुँशिखरदोउशैलके ३१ ॥ दोहा ॥ भिरतनकोऊहारही दोऊसमरप्रबीन ॥ लटपटाइगिरिगिरिउठत दोऊरोषनलीन ३२ हनीभीमभूपालशिर भईगदाद्वैखण्ड ॥ जरासंधतबक्रोधकरि गह्योसुभटबलबण्ड ३३ फेस्योगहिकैचरणबिबि तीनबारभुवपाल ॥ फेरिगदाकरमेंलई प्रकटच्योबचनकराल ३४ ॥ चौपाई ॥ तूजानैकौरवसौभाई। मोसोंतेरीकहाबसाई ॥ कै अब समरछांड़िभजिजाउ। बज्रपातको औड़ौघाउ ३५ योंसुनिपार्थहिचिन्ताआई। कहाहोइजहँकृष्णसहाई ॥ फिररणकोपेदोऊबीर। रणमेंउद्यतकोपगँभीर ३६ जरासंधबहुबलकरिधाइ। लत्ताहन्योपवनसुतआइ ॥ सप्तपैंड़पैपस्योसुजाइ। रहीबिकलतामुखपैछाइ ३७ जयजयकरिकैउठ्योसम्हारि। हरिकोमुखनिरख्योसुखकारि ॥ भुकिकैकृष्णदईतबसैंन। तिनुका

फाख्योदेखतनैन ३८ समुभिसैनकोप्योबलबीर । दूनोह्वैगयोफूलिशरीर ॥ जरासंधभुवपटकिपछारि । कीनोफांकबीचतेफारि ३९ ॥ सोरठा ॥ सगरेराजाराय मुकरायेतबबंदिते ॥ छूटिचलेसुखपाय ज्योंपक्षीपिंजरानिते ४० ॥ छन्द ॥ (राजोवाच) जयजयनँदनंदनदुष्टनिकंदन जयजगबंदनगरुड़ासन । भवभयमोचनजनमनरोचन दुःखविमोचनभवनाशन ॥ सज्जनमनरंजनदुष्टनिकंदन परमनिरंजनजगकर्त्ता । कष्टनिवाख्योदुष्टसंहाख्यो माख्योलोकनिकेहर्त्ता ४१ ॥ दोहा ॥ हरिगुणगावतभूपसब गयेआपनेधाम ॥ जरासंधसुतबोलिकै दुरासंधवहिनाम ४२ नगरराजागिरिकोतिलककीनोताकेशीश । अर्जुनभीमहिसंगलै चलेतेहूंपुरईश ४३ (दुरासंधउवाच) ॥ छप्पै ॥ कैटभमधुमुरहरन धरननखअग्रशैलबर । हिरनाकुशहिरनाक्षहरण प्रभुरदनधरणिधर ॥ शंखासुरसंहरणहरण हरिअंधकबंधहि खरदूषणबपुभंजिगंजिभंजनदशकंधहि ॥ गजराजकाजप्रहलादध्रुवदयासिंधुअशरणशरण । नमोनमोकविछत्रकहि सुनारायणजगउद्धरण ४४ ॥ दोहा ॥ चलिहरिआयेइन्द्रप्रथ ताकोदेकैराज ॥ भूपयुधिष्ठिरसुखभयो भयेसकलमनकाज ४५ (श्रीकृष्णउवाच) पठयोबंधवआपनेजीतिहिचहुंदिशिदेश ॥ गयेकृष्णतबद्वारका यहकहिकैउपदेश ४६ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायांजरासंधयुद्धवर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

दोहा ॥ करीकृपाचारोंअनुज भूपतिलयेबुलाय ॥

कह्योकरोसबदिग्विजय दिशिदिशिजीतहुजाय १ भी
मसेनपूरबगये उत्तरपार्थसुजान ॥ सहदेवदक्षिणगये
पश्चिमनकुलपयान २ दिशिदिशिजीतेजायसब आ
नेबांधिमहीप ॥ कीरतिसोंछाईधरा थलथलजंबूद्वीप
३ ॥ चौपाई ॥ सबबंधवनृपअंकमिलाये । समदनकु
लद्वारकाधाये ॥ करीबिनयकृष्णहिलै आये । नगर
इन्द्रप्रथभयेबधाये ४ आयेदुर्योधनगुणग्राम । अतुल
रूपताकोसंग्राम ॥ कीन्हेसकलयज्ञकेसाज । बोलेतहां
सकलऋषिराज ५ ॥ छप्पय ॥ आयेगौतमब्यासअ
त्रिपाराशरआये । बिश्वामित्रवशिष्ठ गर्गशृंगीऋषि
धाये ॥ बालमीकिदुर्बासजासुमतिपारनलहिये । बहुरि
सुभद्रकद्रोणऔरनारदमुनिकहिये ॥ कविछत्र अठासी
सहसऋषिसकलजुरेभूपतिभवन । यज्ञस्थललागेसबै वे
दध्वनिद्विजउच्चरन ६ ॥ सोरठा ॥ भूपतिकेचितचाव
रक्षककीन्हेसबनृपति ॥ दुर्योधनभुवराव भंडारीशोभि
ततहां ७ ॥ दोहा ॥ जहांचाहियेएकतहँ द्वैदुर्योधनदा
नि ॥ रीतोहोयभँडारज्यों सोराजैमतजानि ८ जितोलु
टावैभूपधन दूनोदूनोहोइ ॥ देखिभरचोभंडारतब भूलि
रह्योसबकोइ ९ ॥ चौपाई ॥ कीन्होंगर्वयुधिष्ठिरराय । कौ
नआजुमेरीसरिआय ॥ धरिहौंजाकोभरचोभँडार । यहैस
कलबस्तुनमेंसार १० कीन्होगर्वकृष्णजबजान्यो । यह
बिचारअपनेउरआन्यो ॥ कर्णरायभंडारीकीनो बेगि
द्रब्यद्वैगयोजोहीनो ११ ॥ सोरठा चिंताकरिनरनाह
बिश्वंभरसोंयोंकही ॥ सुनियेत्रिभुवननाह रीतोभयोभँ
डारसब १२ (श्रीकृष्णउवाच) ॥ दोहा ॥ तैंकतकीनो

गर्वमन कमलहस्तकुरुराय ॥ घटैघटावेद्रव्यनहिं जो
वहदेइलुटाय १३ दन्तकरणकेकंपिउठे शंकेगिरिवरमे
रु॥ हैकुरुराजहिकरणको इतनोईंनृपफेरु १४ आज्ञा
अर्जुनकोदई लंकाकोतुमजाउ ॥ जीतिलंकपतिकोसुभ
टवहुसुबरणलैआउ १५ ॥ सवैया ॥ धायकैजायचढ़ाय
लयो धनुसागरबाणनिछायलियोई । कौरवमेंवहुबाहुप
राक्रममारगलंककोबीरकियोई ॥ पायकैगर्वनिशाचरना
थकोघोरअदण्डनिदण्डदियोई । कोसरिदीजिये देवअ
देवसोपार्थसमाननऔरबिगोई १६ ॥ दोहा ॥ आन्योकंच
नबीरबहु फिरियहकियोबिचार ॥ कौरवकरफिरिसौंपियो
धर्मपुत्रभण्डार १७ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ पूजनयज्ञकस्यो
भुवराय। भीमकह्योउठिकैसुखदाय । आयसुदेहुसबैअ
बनीको। कौनकेभालकरैंअबटीको १८ ॥ दोहा ॥ यहब
निआईसबनको कहीसुखदसुखपाय ॥ प्रथमतिलकह
रिशिरकरो येप्रभुत्रिभुवनराय १९ ॥ बैठ्योतहँशिशुपा
लनृप भुकिबोल्योयोंबैन ॥ कहोकहांको भूपयह कहत
तिलकशिरदैन २० ॥ चौपाई ॥ गैयाराखतजन्मसिरा
नो । ताकोनामकहामुखआनो ॥ कौरवआदिमहीपति
जहां। हरिकोदेतमानकततहां २१ जरासन्धछलिकैजि
नमास्यो। मैंहूंअबयहमंत्रबिचास्यो ॥ मारोंयाहिबैरसो
लेहुँ। रहनगेहहौंयाहिनदेहुँ २२ द्रव्यइतेमैंचाह्यो और।
अलकागयेपार्थशिरमौर ॥ जीत्योधनप्रतितिनबरजाइ।
मिल्योपार्थकोमाथोनाइ २३ कंचनमणिगणमाणिकजा
ल। दीनीचन्द्रवदनबहुबाल ॥ तबसुखसदनबीरचलि
आयो। नृपतियुधिष्ठिरहरिसुखपायो २४ जबतैंटीकोहरि

शिरसुन्यो । करिकरिक्रोधशीशतिनधुन्यो ॥ बारबारअन
उत्तरकहै । श्रीपतिसन्मुखबैठ्योसहै २५ ॥ सवैया ॥ एकक
ह्वीदशबीसकहीकहिसोंहूते जाबिधिआगरिनाखी । देव
अदेवसबैनरदेव जितेक्षितिदेवभयेसबसाखी ॥ जेतिक
चूकक्षमीहुतीकृष्ण जहींमर्य्यादह्वैतैबढ़िभाखी । चक्रह
न्योशिशुपालकेशीशसभामहँ रंचककानिनराखी ॥ २६ ॥
दोहा ॥ सबकेउरशंकाभई सबकंपेभुवराय ॥ जयजयज
यभाषतभये जयजयत्रिभुवनराय ॥ २७ प्रथमतिलकहरि
शिरकर्‍यो फिरिभूपनकेशीश ॥ बिधिसोंसबपहिरायकै
कीनेबिदाक्षितीश २८ इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमु
क्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां शिशुपालवधवर्णनो
नामपंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

सोरठा ॥ दुर्योधनभुवराय न्योतिबुलायेइन्द्रप्रथ ॥
कर्णसहितसुखपाय आदरकीनोधर्मसुत १ सुन्दरमंदिर
चाहि भूलिरहेकौरवसकल ॥ जनुअमरावतिआहि आ
खंडलसोधर्मसुत २ ॥ दोहा ॥ जबभीतरकोनृपचले सर
वरसोंचितचाहि ॥ जानतअमितअगाधजल पैतहँनीर
नआहि ३ बसनउठायेआपनृप धर्‍योफटिककेताल ॥
गयोगर्वसोसदनलखि विकलभयोबेहाल ४ आगेसरवर
बावरी नीरनपरैलखाय ॥ जानिभूमिधोख्योपर्‍यो जल
अगाधमेंजाय ५ दरवाजेदीनेहुते उज्ज्वलफटिककपा
ट ॥ तिहिमारगअवलोकिकै लीनीसोईबाट ६ ॥ तामार
गकुरुराजके लागीचोटललाट ॥ तबआगेसहदेवह्वैनृप
हि गहाईबाट ७ निरखिभूपकीयहदशा पंचबीरमुस
काइ ॥ अरुहँसिद्रुपदसुतागई रह्योनृपतिमुरझाइ ८

चन्द्ररहतजैसेनलिनत्यौंभूपतिमुखदेखि ॥ उतरायेभीजे
बसनआदरकियोबिशेखि ॥९॥ बैठारेभूपतिसभा धर्मपुत्र
तिहिकाल। रच्योअखारोनृत्यको बोलिगुणिनकेजाल १०
आनीअर्जुनजीतिकै उत्तरतेंजेबाल ॥ भीमजीतिपूरुबल
ई तेआईंतिहिकाल ११ जीतिनकुलसहदेवबर आनीहीं
जेनारि ॥ नृत्यहेतुआगेनृपति तेसबलईहँकारि ॥१२॥ सो
रठा ॥ नृत्यतत्रियबहुभाय सुरपतिरतिउलथासहित ॥ उ
पमादीजैकाय मानहुँरंभाउरबशी १३ ॥ दोहा ॥ इंद्रपुरीस
मसोसभा धर्मपुत्रसुरराय ॥ नृततित्रियामनुमेनका तिलो
त्तमाछबिछाय ॥ १४॥ चौपाई ॥ देखिसभाआयेज्योनार।
जेंवतषटरसभोजनसार ॥ भांतिभांतिकेब्यंजनआने।
नामकहांलगिकौनबखाने ॥ १५ ॥ जेइँउठेतबदीनोपान।
गयेगेहतबबुद्धिनिधान ॥ महामलिनमनकछुनसुहाइ।
सबबंधुनसोंकह्योबुलाइ १६ ॥ पांडुसुतनकोकहमतकीजे।
कहोतोदेशनिकारोदीजे ॥ मारतसबबिधिमेरोमान। देश
तजेंसोकरोसयान ॥१७॥ चलिघृतराष्ट्रभूपपैगये। पांडुसु
तनबहुधादुखदये ॥ तबजैहैपितुमोरअँदेश । पांचोंबीर
नछूटैदेश ॥१८॥ (धृतराष्ट्रउवाच)॥ दोहा ॥ जबपांचोबा
लकहतेदीनेदेशनिकारि ॥ भ्रमतफिरेबनबीथिकनि रह्योस
हायमुरारि ॥ १९ ॥ मननबिचारोदुष्टता कारजभलोनए
हु ॥ कहोमानिमेरोउन्हें जीवदानकिनदेहु ॥ २० ॥ योंसु-
निकैउतरेनृपति आयेअपनेगेह ॥ शकुनिदुशासनकर्ण
तहँ बोलेसहितसनेह ॥ २१ ॥ दुष्टचौकरीजुरितहां कहैबि
चारिबिचारि ॥ सोकीजैपांचौअनुज दीजैदेशनिकारि २२
(शकुनिउवाच) मन्त्रबिचार्योएकमें आपमानिमन

लेहु ॥ भूपहरावोयूपमें देशनिकारोदेहु ॥२३॥ जोबिरंचिउ
नकोकरै यहिथलआनिसहाउ ॥ भूपजीतिहौआपुत्रै लहै
नक्योंहूँदाउ ॥ २४ ॥ दोधकछन्द ॥ मंत्रमहीपतिकेमन
मान्यो । सत्ययहीअपनेउरआन्यो ॥ भीषमकर्णतहां
तबबोले । बुद्धिकपाटहृदयकेखोले ॥२५॥ द्रोणहिआदिस
बैचलिआये । भेदसबैतिनकोसमुभाये ॥ ऐसोमंत्रकछू
प्रतिपारो । भूपयुधिष्ठिरदेशनिकारो ॥ २६ ॥ (बिदुरउवा
च) ॥ दोहा ॥ जौलगिउनकोभूपसुनि त्रिभुवननाथसहा
य ॥ तौलगिकाहूकीकछू कैसेहूनबसाय २७॥ (द्रोणउवा
च) ॥ दण्डकछन्द ॥ देखिकैपरायोकछुकीजियेनअनरा
यो दायेविनादायोकियेह्वैहैमहाहानिये । ऐसोअबिवेकी
हैकुटेवटेवटेदीजिहि नेकहूतौत्रासहरिजूकोउरआनिये ॥
साजतुहैकाजतूकसाई अघदाईकैसो ह्वैकैअपयशयहनी
केउरआनिये । बन्धुनसोंकीजैमोहद्रोहउर कोहछोंड़ोकी
रतिकलितजातेभूतलबखानिये ॥२८। दोहा ॥ परद्रोहीअ
रुकृतघनी तेअन्तकसबहोत ॥ दीजतनरकअघोरमें जि
तेसँहारतगोत ॥२९ ॥ सुनिनृपमहिउत्तरदियो बचनकह्यो
गुरुथोर॥ शरसोंलाग्योचित्तमें चितयेभीषमओर॥ ३० ॥
(भीषमउवाच) खलकपटकोनाशजो ह्वैहैमूलबिनाश ॥
बाढ़ैबंधुबिरोधअतिह्वैहैजगउपहाश ३१ ॥ छप्पै॥ बिनशै
सोईधर्मजहांपाखंडहिकीजै । बिनशैसोईप्रीतिजहांहांसी
मनदीजै ॥ बिनशैसोईपुत्रछाड़मातापितुमंडहि । बिन
शैसोईबंशआपकुलकरनीछंडहि ॥ बिनशैसोधनबेगही
धनहोतेजोऋणकरै । छत्रसुमतिमारगचलोकुमतिकल
हनृपपरिहरै ३२ ॥ बिनशैसोईविप्रजोनषटकर्महिंसाजे ।

बिनशैमन्दिरवहैनिकटरावरकेराजै ॥ बिनशैसोईकथा जोनतामहँमनदीजै । बिनशैसोईकाज जहांपरआशा कीजै ॥ बिनशैनारिप्रचंडगृह सकलकुमतिगतिपरि हरो । शिषसीखभूपभीषमकहै सुनृपताहिमंडनकरो ३३ ॥ बिनशैसोईबधिकदयाजाकेउरआवै । बिनशैतस्करवहै भेदआपनोबतावै ॥ बिनशैसोईनेहकपटजोउरमेंधरिये । बिनशैस्वइब्योहारनीचसोंजोकछुकरिये । बिनशैद्विज सेवाकरतबिनशैद्रुमसरितानिकट । इहिभांतिसीखभीष मकहैसमभ्कहुभूपतिआपघट ३४ ॥ दोहा ॥ तजोयूपकी बाणिसबअयशबढ़ैसंसार ॥ ह्वैहैकलहकुटुम्बमेंरचिरा खीकरतार ३५ ॥ धर्मपुत्रकोभूपजो आयसुदेहुबुलाय ॥ वचननमेटैरावको उठिकाननकोजाय ३६ ॥ भीषमकेयोंव चनसुनि भूपतिगयोअवास । आपबुलायेअनुजसबहि तकैअपनेपास ३७॥ पायरजायसुशकुनितबरच्योकपटको यूप ॥ निरखिकरणरविपुत्रको योंबोल्योतबभूप ३८ ॥ आ नहुँबोलियुधिष्ठिरहि योंबोल्योसुखपाइ ॥ कपटयूपमेंखेलि कैलेहौंताहिहराइ ३९॥ करणगयोचलिइन्द्रप्रथ कह्योभूप सोंजाइ ॥ बोलतखेलतयूपसों दुर्योधनसुखपाइ ४०॥ चले भूपयहबातसुनि भीमसेनसुधिपाइ ॥ जाहुहस्तिनापुरन हीं कहीनृपतिसोंजाइ ४१ ॥ (युधिष्ठिरउबाच)॥ चौपाई॥ युवायुद्धकोक्षत्रीभागै । ताकोभुवअपयशबहुलागै ॥ क ह्योभीमसोंकरयोनकान । चलेभूपतबबुद्धिनिधान ४२॥ चलेअनुजसबकसिकिरबार । चलीद्रौपदीलियेभंडार ॥ साहनलैपरिमेहसिधाये । नगरहस्तिनापुर चलिआ ये ४३ ॥ कोशएकआगेह्वैलिये । आदरभावअमितविधि

किये ॥ हितकरिलियेसभामेंआये । निरखतबिदुरमहा
दुखपाये ४४ ॥ तबआरंभयूपकोकीनो । बोलिशकुनि
दुश्शासनलीनो ॥ भीषमबिदुरभावयहजान्यो । क
पटखेलअपनेउरआन्यो ४५ ॥ भूपयुधिष्ठिरकोतबदेखि ।
दावैरदनकरजसबिशेखि ॥ चकृतभयेचहूंघाताके ।
भूपतिडरकछुकहिनहिंसाके ४६ ॥ कपटखेलकोकियोवि
चार । कौरवजीतेसबभंडार ॥ राजपाटआपनपोंहा
रयो । विलखवदनभयेबंधवचारयो ४७ ॥ फूल्योदुर्योध
नभुवराई । लयोदुशासननिकटबुलाई ॥ तुरतजाइ
नहिंलागैबार । ल्यावद्रौपदीसभामँझार ४८ ॥ इत
नीबातकहतउठिधायो । तुरतद्रुपदतनयाढिगआयो ॥
अजुगतबातआयकैभाखी । ताकीनेककानिनहिंराखी
४९ ॥ (दुश्शासनउवाच) ॥ दोहा ॥ जीत्योकौरवयूप
में पुरीयुधिष्ठिरहारि ॥ तूदुर्योधनमनबसी चलिमेरेसँ-
गनारि ५० ॥ (द्रौपदीउवाच) ॥ दण्डकछन्द ॥ सत्तधर्म
पुत्रकेअसत्तकहूंदेखिये न जाकेसत्ततेजछितिछोरैलौंम
ढ़तिहै । तामेंतुअधर्मकहिभाषतहैदुश्शासन कीरतिन
शतअपकीरतिबढ़तिहै ॥ करकोकरजदाविदंतनिमेंबा
रबार मींजिमींजिहाथऐसेद्रौपदीरढ़तिहै । मातकेसमा
नजेठेबंधुकीबधूसो अबऐसीक्योंअनैसीतेरेमुखतेकढ़ति
है ५१ ॥ दोहा ॥ दुश्शासनफिरितहँगयो कह्योनृप
तिसोंजाइ ॥ द्रुपदसुताकीबिनयबहु रहीगेहभुवराइ
५२ ॥ (दुर्योधनउवाच) दुश्शासनजियमारिहौं लाउ
द्रौपदीबाल ॥ पकरिकेशनहिंकानिकरि आनिसभाउ
त्ताल ५३ ॥ जायगहेकरकेशतिन कीन्हीकछूनकानि ॥

सभामांझआनीपकरि आईमननगलानि ५४ (दुर्यो
धनउवाच) बैठितियामोजंघपर मनमानीतूनारि॥ मैं
तुमहितसगरीतजी निजतरुणीसुखकारि ५५ (द्रौप
दीउवाच) पापीबोलिनदुष्ठता कहुनअबूझतबैन॥ रा
जपाटमिटिजायगो इहिबिधिकछूरहेन ५६ भुकिभूप
तितबयोंकह्यो लेहुदुकूलउतारि। सुनिदुश्शासनमो
निकट आइनग्योबहुनारि ५७॥ चौपाई॥ दुश्शास
नकरपकस्योचीर। भीमसेनथरहस्योशरीर॥ कहीयु
धिष्ठिरसोंअकुलाई। आयसुदैत्रियलेहुछुटाई ५८ रा
जाउत्तरकछूनदीनो। तबदुश्शासनउद्यमकीनो॥ पंचा
लीसुमिरेअकुलाई। दीनबंधुकिनकरौसहाई ५९ (द्रौ
पदीउवाच) दण्डकछन्द॥ जिनकीपतनीकीतिन
पतिनकीतुमपतिखोवत पतितगतिकैसेकैकसाईकी। रा
नीअकुलायकहीफाटिहूनजायमही कैसेजातसहीदुष्टदु
श्शासनदाईकी॥ कीनीकर्णकानिनहींद्रोणनगिलानिक
रीतजीपाहिचानिबानिभीषमभलाईकी। जैसेप्रहलादका
जकीनोहैइलाज त्योंहींकीजेमहाराजआजलाजशरनाई
की ६०॥सवैया॥ काहूकिबारसह्यो गिरिभारसुकाहूकि
बारअँगारचबाये। काहूकिबारबिदारिअदेव सुकाहूकि
बारपयादेइधाये॥ काहूकिबारकोपाहनफारिकढेनरसिंह
केरूपहिआये। दीनकेनाथकहाइकैवेगुणबारहमारीकहां
बिसराये ६१॥ दण्डकछंद॥ मेटीकुलरीति मानोजानि
पहिचानिनहीं द्रौपदीसभामें छोरगह्यो आनिचीरको।
रानीअकुलायकही फाटिहूनजायमहीहूजियेसहायधरयो
ध्यानयदुबीरको॥ दीननकीलाजराखिलीजेमहाराजआ

पञ्चौरकहौंकासोंकोऊहीरकोनपीरको । जोरसाथदुश्शासनहाथथाकेपाथरज्यों छुट्योनहीं क्योहूँपटरंचकशरीरको ६२ साहससहितबलबाहुसबिलाइयेभीषमसमेतकोऊबोलतननटको । ब्यालसेबिशालकालदंडतेकरालबाहुऐंचिसाक्योपटदुश्शासनसेभटको ॥ आशछांड़िपतिकीनिराशबामटेरेहरि करुणानिधानशब्दसुन्योदीनरटको । देहतेंकढ़योहैपटकोटिनमढ़योहैछत्रद्रौपदीदुकूलबढ़योजैसेसूतनटको ६३ भीमसेनभीरतजीपारथहूपरितजीधीरतजीधर्मपुत्रसत्तमेंदृढ़ाइकै । भीषमहूबानितजी द्रोणपहिचानितजी कर्णतजीआनिरह्योबिदुरबराइकै ॥ बुद्धिकुरुराजतजीदुश्शासनलाजतजी ऐंचि ऐंचिहारयो पटखरोईखिसाइकै । बारनालगाईकरीद्रौपदीकीभाईतहां सांकरेसहाईयदुराईभयेआइकै ६४ खैंचतपिरानीबाहैंकीनीजोअनेकआहैं दोऊकरमींजिदुश्शासनदयातुहै । भोडरकेकत्ताभोजपत्तरकेपत्तालौंपटउघरतजातुपै न उघरतगातुहै ॥ दुर्जनदुश्शासनक्षमानगहतुक्षणक्षण छीजतुबसनपैनउघरतुगातुहै । द्रुपदसुताकोचीरपुजवतयादवबीर अंगतेतरंगसोंअम्बरहोतजातुहै ६५ ॥ दोहा ॥ पटझटकतभटकीनहीं भुजबलभयेअनाथ ॥ आपुनलीनोग्यारहों बसनरूपयदुनाथ ॥ ६६ ॥ ऐंचिऐंचिहारयोपटहि दुश्शासनअकुलाइ ॥ थाकिरह्योकरिबलघनो रहीसभाअरगाइ ६७ (भीमसेनउवाच) दण्डकछन्द ॥ मारिडारोंरणमेंनिकारिडारोंगर्बसबै मूलतेंउखारिडारोंबाहूदुश्शासनके । तोरिडारोंजानुजंघदुष्टदुर्योधनके तनककरोंनाअमदुष्टनकेतनके ॥ चाहिमूख

नृपतियुधिष्ठिरजू भीमकहै आयसुजोदेहु तौतौ सारों काजमनके । हमहिंअछतखलचीरऐंचोद्रौपदीको धम कतहियेमाँभ्रजैसेघाउघनके ६८ ॥ दोहा ॥ द्रुपदसुता कोइनगह्योजिहिकरदुष्टदुकूल ॥ हौंबरबाहुउखारिहौंतेई भुजासमूल ६९ द्रुपदसुतहिअन्हवायहौं ताकेरुधिरमँ भ्कार ॥ भीमपैजबोलीयहै इहिविधिवारंवार ७० (भीष्म उवाच) सांचहुजायेअंधकेअछतदृगनिजेअन्ध ॥ चलै कहाधौंएककी वैसेहीसबबन्ध ७१ महिमाकरुणासिन्धु की देखतहैखलनैन ॥ भयेलटपटेमूढ़भुज ऐंचतपटउब रैन ७२ शापदेहिंत्रियक्रोधकरि सभाभस्मह्वैजाइ ॥ हो नीहोयसोक्योंमिटै देखिदेखिपछिताइ ७३ सुनीसकल धृतराष्ट्रयह ततक्षणहीअकुलाइ ॥ धर्मपुत्रयुतद्रौपदीली नेनिकटबुलाइ ७४ समाधानसन्तोषकरिदीन्हेगेहपठाइ॥ पहुँचेत्रिययुतइन्द्रपथ पांचौबांधवआइ ७५ इति श्री महाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रविरचितायां द्रौपदीअक्षयदुकूलवर्णनोनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

चौपाई ॥ दुर्योधनसबअनुजबोलाइ । तिनसौंकही बातअकुलाइ ॥ कहाहमारेजीतेहोइ ॥ वैसुखबिलसत हैंसबकोइ १ ऐसोमन्त्रकछूअबकीजे । उनकीसकलसं पदालीजै ॥ पांचौअनुजनदेशनिकासि । तबह्वैहैसुखकी बहुरासि २ पठयोकरएइन्द्रपथगयो । खेलनद्यूतसँदेशा दयो ॥ चलनयुधिष्ठिरभूपतिकह्यो । न्योतपठायेजाइन रह्यो ३ खेलकपटकोतसबजानैं । कहीभीमकीचित्तनआ नैं ॥ चलिकैनरपतिपहुँचेजाइ । आदरकीनोकौरवराइ ४

खेलकपटकोतबतिनगन्यो।कपटमहाअपनेचितअन्यो॥ अभयकीजियेबचनदृढ़ाय । जोहारैसोबनकोजाय ५ बा चाबंधुदुहूंमिलिकीनो । द्यूतखेलमेंतबमनदीनो॥ हास्यो राजयुधिष्ठिरभूप । हास्योसाहनपाटअनूप ६ हास्योदे शसहितभण्डार । हास्योगजबाजिनकोदार ॥ प्रफुलित ह्वैदुर्योधनकही । राजपाटसबहारीमही ७ बारहबर्षजा यबनरहो । गिरिगह्वरकेसबदुखसहो ८ ॥ दोहा ॥ बरष तेरहींजायदुरि जोहमलेहिंनिहारि ॥ फिरकरिद्वादशब र्षको देहुंतुम्हेंनिकारि ९ (भीमसेनउवाच) कपटद्यूत इनखेलिकै काननदीनोबास ॥ पायरजायसुहौंकरौं कौ रवकुलकोनास १० नृपतालेहुँछिड़ाइकै करौराजभुवई श ॥ करैसकलजगबन्दना छत्रधरौंकिनशीश ११ (रा जोवाच) नलदमयन्तीकीकथा भूपकहीसमुझाय ॥ द्वा दशबर्षैबिपिनरहि राजकरैंगेआय १२ (अर्जुनउवाच) मोकोआयसुदेहुजो राजछांड़िसबलेहु ॥ सकलपरेखो जायमिटि नृपताविप्रनदेहु १३ मिटैपरेखोचित्तको दू जेह्वैहैधर्म ॥ आयसुदेहुकृपालुह्वै यहैकरौंहौंकर्म ॥१४॥ (राजोवाच) छप्पै ॥ धन्यधन्यतूपार्थखण्डखण्डनय शकीनो । धन्यधन्यभुजदण्डकस्योसुरपतिबलहीनो ॥ धन्यधन्यतवपाणिकोपिधनुकरतयुक्तशर । धन्यधनुर्द्धर धीरदियोबिधिनातोकहबर ॥ कबिछत्रनकीजैरोषमन तुवसरवरिकहुकोकरहि । शंकतदशादिगपाल धरसुथर थरथरथरहरहि १५ ॥ दोहा ॥ बिप्रनकोयहदाननहिंदेहु पंथबलबण्ड ॥ बारहबर्षव्यतीतकरि करिहैंराजअखण्ड १६ (सहदेवउवाच) हतौंअन्धसुतअनुजसबयह मेरेजि

यत्र्प्राज ॥ आपबचनप्रतिपालियेबनहिंचलोमहराज १७
राजसिंहासनद्रव्यसब साहनअरुभंडार ॥ रखवारोह्वैरा
खिहौंकीजैयहीबिचार १८ बिपिनदुखीजनिहोहुन्नृप मो
सोंसेवकपाइ ॥ अन्नद्रव्ययुतभूषणन देहौंबनपहुंचाइ १९
(राजोवाच) चौपाई ॥ तेरोपौरुषहौंसबजानों । अतिहिशू
रतनुकहाबखानों ॥ पैनिजबचनहमरोमानि । फेरिराज्य
करिहैंहमआनि २० नकुलपरजस्योयोंहाठिभखै । कौरव
मारोंकोअबराखै ॥ आज्ञादेहुभूमिभरतार । हतौंअनुज
सबलगैनबार २१ हारीपुहुमिसुनीचेधरों । तरकीधरती
ऊपरकरों ॥ तापरबैठिराज्यनृपकीजै । सकलअरिनऊप
रपगुदीजै २२ ॥ दोहा ॥ नकुलनिवास्योनृपतितब यों
कहिबारंबार ॥ तोसोंबलीनऔरभुव जानैसबसंसार २३
गहिठोढ़ीनरनाथतब लघुबंधवसमुझाय ॥ तबैइन्द्रपथ
धाममें पहुँचेसबजनआय २४ (राजोवाच) तेरहबर्षै
बिपिनबसिफेरिआयहैंधाम ॥ क्रोधनहींकोऊकरोमनसा
बाचाकाम २५ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्ता
वल्यांकविछत्रविरचितायांराजायुधिष्ठिरदुर्योधन द्यूतवर्ण
नोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ बनपर्व ॥

गीतिकाछन्द ॥ राजचिह्नतजेयुधिष्ठिरभूपसबबन
कोचले । चतुरभ्रातासंगलीन्हेहुतेशूरभलेभले ॥ मातु
राखीबिदुरकेगृहहेतुबहुबिधिजानिकै । राखीसुभद्रापुत्र
युतपुरद्वारकामेंआनिकै १ द्रौपदीकेपंचसुतनृपद्रुपदढिग
तेराखियो । पंचबंधवद्रुपदतनयासहितबनअभिलाषि
यो ॥ छत्रपाटधरेसिंहासनसदनमेंसुखपायकै । भूपरथ

चढ़िबंधुयुतकाननचलेत्रकुलनायकै २ चलतहीयक असुरमारगबिपिनकोतबरोकियो । बिकटघटअतिरदन दीरघभीमसेनबिलोकियो ॥ गदायुद्धहिछांड़िकैबलवंत रथतजिधायकै । मल्लयुद्धकियोबलीबहुदुष्टअंकहिलाय कै ३ भूमिगहिसंहारिराक्षसबिपिनकोतबपगुधरचो । ल रूपोबनअतिसघनद्रुमबहुभांतिकैबहुफलफरचो ॥ ललि तललितलवंगलतिकाकलितकरनासोहिये । बेलिबल्ली बहुचमेलीजुहीयुतमनमोहिये ४ ॥ छप्पै ॥ सोहततरु वरतालकेलिकरनारअमृतफल । सोहतकंजनयुक्तकिते सरवरजलनिर्मल ॥ सोहतनिर्झरझरतसुथलथलसहित अखंडित । सोहतलतिकाफूलभँवरपुंजनिसुखमंडित ॥ शीतलमंदसुगन्धतहँबहतपवनअतिसुखदगति । कबि छत्ररम्यअवनीसुथलनिरखतहोतप्रसन्नमति ५ ॥ भुजङ्ग प्रयातछन्द ॥ तहांआपहीकोकुटीभूपकीनी । त्रिलोकी बनीताथलीकीनवीनी ॥ छहूंकालकेबृक्षफूलेफलेहैं । तहां कोकिलाआदिपक्षीभलेहैं ६ तपीबिप्रकेतेतहांचित्तमोहैं । मनोंदेवदेवेसलोकेशसोहैं ॥ मयूरीचहूंओरतेनृत्यसाजैं । कहूंहंसनीहंसनीकोबिराजैं ७ ॥ दोहा ॥ तपसीमर्कटदेखि ऋषिकीनेनृपतिप्रणाम ॥ भांतिभांतिकरिबन्दनाकहीनृ पतिगुणग्राम ८ मोकहँहोहुप्रसन्नऋषिदेउकछूउपदेश ॥ दीनोसूरजमंत्रतब सुनिसुखभयोनरेश ९ जाप्योभूपतु रंतही प्रकटभयोभूभानु ॥ कहीभूपसोंमंत्रको सुनियेस कलबिधानु १० प्रातन्हाइकैभूपतुम जपियोमंत्रहिनि त ॥ षटरसभोजनद्योसप्रति पहुँचाऊंतुवहित्त ११ ॥ चौपाई ॥ यहिबिधिभोजनप्रतिदिनपावै । आपनुजेवैं

ऋषिनजिवावैं॥ ऋषिसबभूपतिकोसमुझावैं। तिहिबन
रहतनकछुदुखपावैं १२ करिदुष्टताजयद्रथआयो। हरण
द्रुपदतनयाकोधायो॥ सक्योननेकयुद्धकोकांधि। लीनो
भीमसेनसोबांधि १३ (भीमसेनउवाच) आज्ञामोहिंगोसा
ईदीजै। बांधिदुष्टअबहींमारीजै॥ भूपकहैंऐसीनहिंकी
जै। बांधिमारिअपयशक्योंलीजै॥१४॥ पायरजायसुसो
मुकरायो। लज्जितह्वैगृहकोचलिआयो॥ करीतपस्या
शिवकीजाय। केतीबर्षैतनमनलाय १५॥ दोहा॥ बहुदि
नबीतेकरततप भयेमहेशउदार॥ मांगुमांगुतोकहँदयो
सोईबरसुखकार॥१६॥ (जयद्रथउवाच) भीमधनञ्जयध
र्मसुत सहदेवनकुलकुमार॥ मीचुलहैंमोहाथते यहइ
च्छामोसार १७ (शिवउवाच) विष्णुभक्तवेपंचजन ति
नसोंकहाबसाय॥ एकद्योसवेपांडुसुत जीतिजयद्रथजा
य॥१८॥ चौपाई॥ जबहिंजयद्रथयहबरपायो। चलि
दुर्योधनकेढिगआयो॥ आपपराजयसबअनुसरी। तब
मैंशिवकीसेवाकरी॥१९॥ एकदिवसदीनोशिवमोहिं। जी
तिजायमैंदीनोतोहिं॥ सुनिकैदुर्योधनबहुलाज्यो। दुःख
भयोमनआनँदभाज्यो २०॥ दोहा॥ धर्मधुरन्धरधर्मसुत
बिहरतबनमेंजानि॥ भेंट्योचाहतपुत्रको धर्मराजसुख
दानि॥२१॥ लहैअकेलोपुत्रनहिं तबदानवबपुसाजि शि
रअकाशपगुधरणिसों देखिउठ्योगलगाजि॥२२॥ ऊपर
लैगयोनृपतिको बाणधनञ्जयतानि॥ घायलनहिंतादुष्ट
को कानिभूपउरआनि॥२३॥ सिंहनादलौभीमतहँ गरजि
उठ्योकिलकारि॥ गिर्योअसुरभुवआयकै ज्योंमुरहत्यो
मूरारि २४॥ सोरठा॥ कह्योब्यासऋषिराय अर्जुनसोंउ

पदेशतब॥ सेवोईश्वरजाय मनबचकायिकनेमसों॥२५॥
॥ दोहा॥ रुद्रबाणलहिरुद्रपै कहैपार्थसतिभाउ॥ त्रिभुव
नसाईंकरिकृपा अमरपुरीदरशाउ॥२६॥ तबईश्वरआज्ञा
दई कुसुमबिमानचढ़ाय॥ दरशायोसबअमरपुर भेंट्यो
तहँसुरराय २७ चित्रसेनगन्धर्बसों प्रीतिबढ़ीबहुभाय॥
नृत्यनादतबअर्जुनैं विद्यादईसिखाय॥२८॥ पार्थरिझायो
इन्द्रबहु सातौंस्वरतबगाय॥ नृत्यकियोसुरतरुणितब
बाजनबिबिधबजाय॥२९॥ सुन्दरीछन्द॥ अर्जुनकी
बहुधाहरषीमति। तासेदेवप्रसन्नभयोअति॥ ईश्वरको
सबधामदिखावत। देखतपार्थमहासुखपावत॥३०॥
बिष्णुपुरीअवलोकिसबैतहँ। देखीजायबिरंचिपुरीजहँ॥
इन्द्रपुरीमहँमन्दिरराजत। सुन्दररूपनियुक्तविराजत॥
॥३१॥ सवैया॥ सुन्दरमन्दिरकञ्चनकेमणिनी
लकँगूरनिसोंछबिछाये। लालमनोहरमाणिकजाल खँ
चेसितखम्भबिचित्रसुहाये॥ बिद्रुममुक्तअमोलिकसों
प्रतिद्वारनबन्दनवारबँधाये। सूरप्रभासीअभाकबि
छत्र बिलोकिकैपार्थहियेसुखपाये॥३२॥ चौपाई॥
कहिगन्धर्बअचम्भवएह। काहेतेसूनोयहगेह॥ कि
हिपुरमन्दिररच्योबनाय। किहिहिततज्योसुकहसमुझा
य॥३३॥ (चित्रसेनगन्धर्वउवाच) तालबरणदानवय
हिनाम। तिहिसुरजीत्योयहसंग्राम॥ वाकेत्रासधाम
यहतज्यो। आखण्डलदूजोगृहसज्यो॥३४॥ सुनिकैपार्थ
हिचिन्ताभई॥ सहसनैनपैआज्ञालई॥ कीनोरणदान
वसोंजाई। वहरणजुर्योघोरदललाई॥३५॥ दोहा॥
कहौंकहांलगियुद्धकी बाढ़ैकथाअपार॥ तालबरणकी

सबचमू मारतलगीनबार ॥ ३६ ॥ छप्पै ॥ करतअमित गतियुद्ध लड़तदानवबलजान्यो । इन्द्रपुत्रशिवबाण को पिकैतबसन्धान्यो ॥ रुण्डमुण्डकटिबांह जानुजंघाकर टूटे। एकहिबाणनिदान सर्बसेनाबललूटे ॥ भयभीतशे षहतिअसुरगण सबतजिरणबलदुरिगये । जययुद्धपा र्थकरिबाहुबल तनप्रसन्नआनँदहिये ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ इन्द्रहिसुबसबसायकै सुचितेकरितिहिधाम ॥ लहिआ ज्ञाआयोपुहुमि जीतिअसुरसंग्राम ॥३८॥ चौपाई ॥ आ ययुधिष्ठिरकेपदबन्दे। बन्धवसुनतसकलआनन्दे ॥ (रा जोवाच) तोसोंतुहीकाहिसरिदीजै । सुरनरकौनबराबरि कीजै ॥ ३९ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां अर्जुनविजयवर्णनोनामअष्टाद शोऽध्यायः ॥ १८ ॥

नाराचछन्द ॥ तबैनरेशधर्मपुत्रसंगबन्धुलैभले । निकेतनारिद्रौपदीमहाअरण्यमेंचले ॥ लखेतहांअनेक पुष्पस्वर्णवर्णदेखिकै । सबैसुगन्धफूलमेंनवीनहौंबिशे खिकै ॥ १ ॥ उठायद्रौपदीलयेसरहिताहियोंकहै । मँगा यलेहुभीमसेन पुष्पयेजहांलहै ॥ (भीमसेनउवाच) उड़ायपौनह्यांपरे कहांसुनारिपाइये । नजानियेदिशासु कौनकौनओरधाइये ॥२॥ (द्रौपद्युवाच) बिलोकिदेहआ पनी बिचारक्योंनतूकहै । बिनाअनेकयत्नते नशूर कोययोंलहै ॥ कहांप्रसूनहेतते बिचारचित्तमेंकियो । नदेहिमाहिंआनिसों कठोरहैमहाहियो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ ग दालईतबभीमकर अनबोलेअकुलाय ॥ उत्तरदिशिगि रिकंदरनकाननपहुँच्योजाय ॥४॥ बैठिबीरगिरिशिखरपर

उठ्योमहागलगाजि । पावसघनगरज्योमनौं चलेसिं
हसुनिभाजि ॥ ५ ॥ गिरिगहवरमगसघनद्रुम ठाढ़ेगुहा
पहार ॥ सुनतनादहनुमन्ततब आयगयोतिहिबार
॥ ६ ॥ कियेयुद्धकपिरूपतब पर्ख्योतहांबिचआइ ॥ अब
लोक्योसोभीमतबसकैनबाटछुटाइ ॥ ७ ॥ चौपाई ॥
तारीदैदैभीमडरावै । बानरकेमनकछूनआवै ॥ भुकिभु
किकैवहतिनललकार्ख्यो । छुटैनमारगपचिपचिहार्ख्यो ८
(भीमसेनउवाच) मारगछांड़िकहतहौंतोहिं । लांघ
तजीवहिलज्जामोहिं ॥ मेरेबचनपर्ख्योजोरहै । आपुन
कियोआपुहीलहै ॥ ९ ॥ (हनुमन्तउवाच) हौंअशक्तबहु
भांतिनिहारो । तुमसमर्थइतउतगहिडारो ॥ भीम
सेनबलकरिकरिहार्ख्यो । मर्कटटर्ख्योनक्योंहूँटार्ख्यो ॥
॥ १० ॥ तबतिनबहुबिधिअस्तुतिलाई । सत्यकहौतुमको
हौभाई ॥ असुरसुरेशकिगन्धर्बकोई । सांचीबातकहौ
तुमसोई ॥ ११ ॥ गर्बहमारोसबबिधिभाग्यो । दौरिभी
मतबचरणनलाग्यो ॥ अबजनिकपटहियेमेंराखौ । अप
नोभेदसकलबिधिभाखौ १२ (हनुमन्तउवाच) हनूमान
हैमेरोनाम । चहौसुपुजऊँतुवमनकाम ॥ सुनतेभीमउ
ठ्योअकुलाय । चरणकमलतिनबन्देजाय ॥ १३ ॥ दोहा ॥
भूलिगर्बमनमेंकर्ख्यो छमियोमोअपराधु ॥ सदाचूकति
नकीछमैंजोजनसाधुअसाधु १४ लीनीलङ्कारूपजिहिसो
बपुदेदरशाय ॥ कहीयुधिष्ठिरभूपसों जिनकेमनपछिता
य १५ मूँदतआंखैंभीमके कीनोरूपकराल ॥ पगधरती
आकाशशिर निरखतभीमबिहाल ॥ १६ ॥ (भीमसेनउवा
च) देखिसकौंयहबपुनहीं बिकलहोतममदेह ॥ तातेदर

शावोवहै निजशरीरकरिनेह १७ निजमूरतिहनुमन्तकी दरशाईसोबाट ॥ पठयोहितकरिकैतहां हुतेकमलजिहि घाट १८ (भीमसेनउवाच) दुर्योधनकरिदुष्टता लीनेधु तहराय ॥ द्वादशबर्षैंबनलह्यो पहुँचेयहिथलआय॥१९॥ दोधकछन्द ॥ युद्धमहाउनसोंअबह्वैहै। जीतिहिसोधरणी अबपैहै ॥ आपकृपाकरिकैचलिआवैं। बैठिध्वजागलगा जसुनावैं॥२०॥ होयसहायकछाहहिंकीजे। तौबरजीतिस बैधरलीजै॥ बैनसुन्योहितजबैजबैजू। बांहदईहनुमन्त तबैजू २१ नायचल्योशिरसोसरदेख्यो। उत्तमकेजनयु क्तबिशेख्यो ॥ गंध्रबरत्तकदेखिघनेजू। योंतिनसों तबभीमभनेजू॥२२॥ दोहा॥ आज्ञादेहुकृपालुह्वै लहौं प्रसूननधाय ॥ भ्रुकिगन्धर्बकहीयहै तूक्तनियरोजाय ॥२३॥ बरबटसरतरपैठिकै लीनोबीड़ाबांधि ॥ रत्तक दौरेधनुषगहि तीक्षणबाणनिसांधि॥२४॥ कमलफूल द्रुमतरधरे शिरतेतरेउतारि ॥ कोपिगदासोंएकसँ गगयोकरोरिकमारि ॥२५॥ मुद्गरफरसाशक्तिशरभागे किन्नरडारि ॥ आनिकमलदीनेसकल प्रियापानि सुखकारि॥२६॥ (युधिष्ठिरउवाच) तोसोंजुरैनयुद्ध में किन्नरयत्तककोइ ॥ तोहींतेमनकामना सबबिधिपूर णहोइ॥२७॥ तोटकछन्द ॥ जबहींबहुद्यौसब्यतीत भये। बनमाहिंअखेटकभीमगये ॥ पुनिदीरघपन्नग एकलह्यो। तिनिदौरितबैपगुआइगह्यो ॥२८॥ दोधकछन्द ॥ भीमबलीनछुड़ावतछूट्यो ॥ हारिरह्योब लदीरघटूट्यो ॥ मारिगदाअहिकोशिरतोरी। ताकहँने कसक्योनहिंमोरी ॥२९॥ बीतिगयेदशबासरताही।

बाटतहांलगिभूपतिचाही ॥ बन्धुनसोंमिलिकाननदेख्यो। सर्पग्रस्योतबभीमविशेख्यो ॥ ३० ॥ अर्जुनसोअहिबाणनिमास्यो। दौरिखड्गसहदेवप्रहास्यो ॥ भूपकहोकतपन्नगमारो। देवनकोअवतारबिचारो ॥ ३१ ॥ नागघोषनृपकोसन्ताप। सर्पभयोसुनिविप्रनशाप ॥ ऐसोजन्तुआहियहकोइ। तासोंयाहिप्रहारनहोइ ॥ ३२ ॥ भीमसेनबलकरिकरिहास्यो। सोकतमरततुम्हारोमास्यो ॥ कीनोपन्नगजयजयकार। जान्योभूपधर्मअवतार ॥ ३३ ॥ (सर्पउवाच) ॥ दोहा ॥ तवपुरखाहौं भूपसुनु नागघोषमोनाम। बिप्रदोषदुर्गतिभई भयो सर्पगुणग्राम ॥ ३४ ॥ अपनीनृपतामेंमहा यहकीनोअपराध ॥ लियोंद्रब्यसबद्विजनको दीनोदण्डअगाध ॥ ॥ ३५ ॥ मोकहँदीनोशापतिन पायोयहअवतार ॥ तबबिनयोकरजोरिकै कबपाऊँसुखसार ॥ ३६ ॥ कहीद्विजनजबपुहुमिमें होइधर्मअवतार ॥ तबलहिहौशुभगतिनृपति ताहिपरसितिहिबार ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ छुवतयुधिष्ठिरमिटिगयोदोष। पायोनागघोषनृपमोष ॥ छांड़िभीमभयोअन्तर्द्धान। आयोबन्धवनिजअस्थान ॥ ३८ ॥ सबहीकेमनआनँदभयो। शोकद्रौपदीउरकोगयो ॥ पाण्डुपुत्रबनमेंब्योपरहीं। बनफलखाइअहेरोकरहीं ॥ ३९ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहबिरचितायां राजानागघोषमोक्षवर्णनोनाम एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

दोहा ॥ दुर्योधनबैठ्योसभा बन्धुसहितसुखपाइ ॥ पाण्डुपुत्रपांचोतबै हियराकरकेआइ १ करणदुशासनश

कुनितब बोलिलियेसुखपाइ ॥ मोमनआईसोकरौं अव रनकछूउपाइ २॥ सवैया ॥ बूझतहैंसबहीदुर्योधन बुद्धि उठीयहमोंउरहीतैं । सुद्धिलहैनपितामहभीषमजाइयुधिष्ठिरभूपहिजीतैं ॥ लेहिंगेवेसबदेशभँडार सबैधनआलखऔंधिब्यतीतैं । साजिचलेचतुरंगचमूसब बन्धुनजीतिनकुंजकुटीतैं ३॥ दोहा ॥ मानिरजायसुशासतिन साजेदलचतुरंग ॥ चलेभूपकरिदुष्टता करणदुशासनसङ्ग ४ गिरिगह्वरमगदेखिकै लख्योघोरबनजाइ ॥ चित्रसेनगन्धर्बतब रोषितपहुँच्योआइ ५ बांधेविधिकीफांससो दुर्योधनभुवपाल । मनबचक्रमहुकरणनृप कीनोकोपकराल ६॥ सुन्दरीछन्द ॥ करणमहीपतिकोपकर्‌यो बर । पूरिलियोबरबाणनअम्बर ॥ गन्धबबोलिउठ्योतिनसोंहँसि । कौनछुटावहिभूपलयाग्रसि ७ (गन्धर्बउवाच) देवनसोंरणतूकतठानहि । मानवयुद्धनहींउरआनहि ॥ गाजतकरणसुबाणनछाँड़तु । होतकछूनहिंपौरुष माँड़तु ८ ॥ दोहा ॥ श्रवणकुलाहलपार्थसुनि आयोशरधनुसाजि ॥ निरखिबँधेदुरयोधनै बलीउठ्योरणगाजि ६ (अर्जुनउवाच) चौपाई ॥ जोबांध्योदुर्योधनराज । कहैपार्थतौहमकोलाज ॥ यद्यपिहमकोमारनआयो। अपनोकियोआपफलपायो १० तबहिंपार्थबिनवैगलगाजि । तूमोपैकतउबरैभाजि ॥ छांड़िरायजोचाहैजियो । नातरुबेधतुहौंतवहियो ११ (गन्धर्बउवाच) दोहा ॥ दुर्योधनकरिदुष्टता आयोतुवबधकाज ॥ अबलअकेलेजानिबनउरकछुधरीनलाज १२ मित्रभावउरमेंधर्‌योतो बांध्योभुवराय ॥ खोलिपाँससौंप्योनृपति अर्जुनकर

सुखपाय १३ छूट्योमृगज्योंबधिकते योंभूपतिउरजा
नि॥ दियोरजायसुधर्मसुत बिदाकरहुसुखमानि १४
(अर्जुनउवाच) आजुभयेतुमतेउऋण योंकहिसमदे
राय ॥ बिलखिबदनयुतकरणतब चलेसदनदुखपाय
१५ ॥ चौपाई ॥ जैसीकरैसुतैसीपावै। ओछीताकेओछी
आवै ॥ परहितकूपजोखोदैकोई । निश्चयगिरिहै
तामेंसोई १६ ॥ दोहा ॥ मलिनभूपआयेसदन निशि
दिन कछुनसुहाय ॥ लखिलखिपुरबासीसबै योंतबकर
तचवाय १७ (पुरवासीउवाच) गयेबिपिनकरिदुष्टता
धर्मपुत्रबधकाज ॥ बांधिलियेगन्धर्बनृप उपजीदलउर
लाज १८ कुलहिकलंकबिचारिकै पार्थउठ्योअकुलाइ ॥
त्रासदिखायो गन्धर्बै लीनोभूपछुटाइ १९ गयेताकिहेदु
ष्टता गईजीवकीआस॥ पार्थछुड़ायेजानिकै बैठेमलिन
अवास २० हुतेजहांनृपधर्मसुत धर्मराजतहँआइ ॥ दे
खतसत्याकरदयो मायामृगमुकराइ २१ आपुबिप्रको
रूपधरि आयोभूपतिपास ॥ कह्योदेहुमृगपकरिकै यह
पुजओमोआस २२ तुमक्षत्रीहौबिप्रहौं यहटारोमों
आरि ॥ तौसीजैमोकाजसब सिंहजाइगोमारि २३ ॥
दोधकछन्द ॥ बन्धवपांचतबैउठिधाये ॥ काननमेंमृगके
ढिगआये॥ दूरिकहूँकहुँसूझतनेरो । हाथचढ़ैनघिरैकहुँ
घेरो २४ लागितृषाबलथाकिरहेहैं ॥ क्लेशभयेनहिंजात
कहेहैं ॥ पर्बतपैचढ़िकैतबहेरैं । देखतसूझपर्योजलनेरैं
२५ ॥ दोहा ॥ नकुलगयेतहँअम्बुहित लीनोभरिकरि
नीर॥ भइअकाशबाणीतहां चकितभयोसुनिधीर २६ ॥
चौपाई ॥ मेरेबूझेउत्तरदेहि ॥ जबतूनीरआपुकरलेहि॥

कह्योनताकोइनकछुमान्यो। नकुलनीरतबबाहिरआन्यो ॥२७॥ प्राणनताजिगयेताकीकाय। चिन्ताकरीयुधिष्ठिरराय ॥ सहदेवधाइनीरहितगयो। बिधिवाहीतिनहूँजीदयो ॥ २८ ॥ अर्जुनभीमगयेजलपास। लियोअम्बुभरिकैसुबिलास ॥ फिरिसोशब्दआकाशहिभयो। उत्तरताहिनतिनहूँदयो ॥ २९ ॥ मृतकपरेताजलकीपारि। गयेयुधिष्ठिरभूपबिचारि ॥ नीरजहींभरिअंजुलिलयो। सोईशब्दआकाशहिभयो ॥ ३० ॥ (आकाशबाणीउवाच) मैंबूझौंतूउत्तरदेहि। पाछेदेवनीरभरिलेहि ॥ धर्मविवादसकलतिनठयो। भूपसत्यतबउत्तरदयो ॥ ३१ ॥ सवैया ॥ लाभकहागुणवन्तनकेसँग हानिकहाजुसमौबितयेते। दुःखकहाजड़मूढ़कीसंगति सुःखकहाबुधिवन्तभयेते ॥ ज्ञानकहाअवलोकैनआतम ध्यानकहाबिषयानचहेते। प्रीतमकोपतिआहिसबै त्रियशीलवतीनितकौंचितयेते ॥ ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ कह्योधर्महौंरीझ्योंतोहिं। प्रीतिभईउरअन्तरमोहिं ॥ अबतेरेजोमनमेंभावै। बरमांगैसोमोंपैपावै ॥ ३३ ॥ (राजोवाच) ॥ दोहा ॥ चारोबीरमरेपरे तेअबदेहुजिवाइ ॥ औरकछूनहिंकामना यहैकरोसुखदाइ ॥३४॥ (धर्मउवाच) जोईचाहैचारिमें सोईदेहुँजिवाइ ॥ औरनजीवैतीनमें निश्चयजानोराइ ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ साईअबकीजैसतिभाव। कहीभूपसहदेवजिवाव ॥ फेरिभईऊरधमेंबानी। बातभूपतुममिथ्यामानी ॥ अर्जुनभीमबीरमाजाये। कहिकाहतेवेनबताये (राजोवाच) निजबीरनकीपकरोंबांह। अयशहोयअतिधरणीमांह ३६ तातेसहदेवदेउजिवाय ॥ मिथ्यावचननभाष्यो

जाइ ॥ रीझ्योधर्मदेहधरिआयो । सत्यवन्तभूपतिउरला
यो ॥३७॥ तेरोपिताधर्महोआय । अबैदेउहौंसबैजिवाय ॥
सोंछिरकजिवायेचारि । कहीसुनोसुतसबसुखकारि ॥३८॥
बारहबर्षगयेबनबीति ॥ चलियोब्यासकहीजिहिरीति ॥
धर्मराइकहिस्वर्गसिधाये । पांचोंबन्धुकुटीमहँआये ॥३९॥
इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहवि
रचितायांभीम राजादुर्योधनमानभंगवर्णनोनामबिंशो
ऽध्यायः ॥ २० ॥

अथ बिराटपर्व ॥

दोहा ॥ धर्मसुवनभुवभूपतब सुमिरेश्रीऋषिब्यास ॥
आयगयेतिहिठामही करनसकलदुखनास ॥१॥ (राजो
वाच) ॥ चामरछन्द ॥ बुद्धिदेऋषीशमोहिंजायकैक
हांरहैं । सुःखसोंरहैंजहांसमूहवस्तुकोलहैं ॥ शोधअं
धपुत्रसुद्धिरञ्चकौनपावही । ठामसोहमेंऋषीशकरिकृ
पाबतावही ॥ २ ॥ (ब्यासउवाच) औरतौंदिशानभूपरा
वरैदुरोदहीं । जाउजूबिराटदेशसुःखपाइहौतहीं ॥ चा
रिबर्णकेहियेतहांसदादयारहैं । गुप्तहोउजाइकैऋषीश
बातयोंकहैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ तबऋषीशकोबचनसुनि
कीनोंनृपपरमान ॥ तबबिचारिकीनोयहै सबगुणज्ञान
निधान ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ जैऋषिनामभूपकोभाख्यो । ना
मजयन्तभीमकोराख्यो ॥ बिजयवृहन्नलअर्जुननाम ।
सहदेवग्वालभयोगुणग्राम ॥ ५ ॥ बाहुकअश्वनिनकुलकु
मार । यौंकहिकैऋषिकियोबिचार ॥ छांड़िगर्वसेवक
ज्योंसेव । कीजौमनमारेतुमदेव ॥ ६ ॥ व्यासकीशिक्षा ॥
॥ सवैया ॥ क्रोधतजौहोबिरोधतजौ अरुगर्बतजौतुमधाम

पराये । आयसुपाइकरौसबयाय सुजायरहौसबआपदु
राये ॥ ऊँचोउनीचोकहैकोउआयकै सोउसुनेरहियोशिर
नाये । शोचबिमोचलराजिवनैन सदारहियोतिनसोंचि
तलाये ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ चलियोतेहीछांह जबजैसोसमयो
लखो ॥ गर्बनहींमनमांह नेकहुभूपबिचारिये ॥ ८ ॥ दोहा ॥
यहिबिधिकैबहुसीखदै गयेव्यासऋषिधाम ॥ सोईमनु
हिरदैलह्यो मनसाबाचाकाम ॥ ९ ॥ पाइसीखभूपालतब
बनतेभयेउचाट ॥ पांचोंबन्धवकरितमा आयेनगरबि
राट ॥ १० ॥ मृतकपुरुषसोंबेगिहौ आयुधबांधेधाय ॥ नगर
निकटतरुवरशमी तापरराख्योजाय ॥ ११ ॥ निरखिग्वाल
ताथलकह्यो याहिछुवैजोआइ ॥ वर्षदिवसलौंमृतकयह
ताकहुँखैहैधाय ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ यहकहिकैग्वालनिबौ
राई । आपतुचलेनगरकोराई ॥ पैठतनगरसगुनभयेघने ।
सहदेवसोंभूपतियोंभने ॥ १३ ॥ (राजोवाच) कैसेसगुन
होतसुखकारि । सोतुमबन्धवकहौबिचारि ॥ ऐसेलक्षण
मैंपहिचाने । ह्वैहैंकाजसकलमनमाने १४ (सहदेवउवा
च) ॥ सवैया ॥ बालखिलावहिंबालकको सुतअस्तन
पानकरैसुरभीको । सुखमेंधौससिरावहुगे सबहोयगो
काजमहीपतिजीको ॥ लीलगयोदिशिबामचिकारि कछू
यहभोडरलागतफीको । केतिककालब्यतीतभये तबशो
चउठैकछुबिप्रहहीको ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ पुरमेंबन्धवचारौ
रहे । राजसभाचलिभूपतिगहे ॥ द्विजकेरूपकरौतीकिये ।
सोहतद्वादशतिलकनिदिये १६ उठिबिराटनिरखतशिर
नायो । कोतूबिप्रकहांतेआयो ॥ दैअशीषयोंबिनवैराय ।
धर्मसुवनकोबरुवाआय १७ गिरिगहवरवेदुरिगेपांचो ।

मोसोंबैनकह्योयहसांचो ॥ जाहुबिराटमहीपतिपास। रहियोतहांसुखीसबिलास १८ धर्मपुत्रतुवपासपठायो। तातेनिकटतुम्हारेआयो ॥ सुनिभूपतिकीनोसनमान। बैठोमुनिगुणज्ञाननिधान १९ (राजोवाच) जैऋषिनाम ब्यासमुनिभाख्यो। सुनिक्षितिपतिबहुआदरराख्यो॥ अर्द्धासनबैठ्योतबभूप। शिरपरतान्योछत्रअनूप २० फिरिकैआयोभीमकुमार। आयभूपकोकियोजुहार ॥ दीरघतनदीरघभुजदंड। निरखतकौतुकभयोअखंड २१ (विराटउवाच) दोहा ॥ कितते आयेकौनतुम काहतिहारो नाम ॥ कौनजातिकिहिहेतुतुम आयेमेरेधाम २२ (भीमसेनउवाच) गीतिकाछन्द ॥ ब्यासनामजयन्तभाष्यो पाण्डुसुतकोस्वारहौं। सर्वदाकरतोतहां बहुभीमकोजुअहारहौं ॥ दयाकरतेरचतभोजन हौंसलोनोअतिघने। अतिसुगंधितस्वच्छब्यंजन सकलषटरससोंसने २३ रीझिरीझिनरेशदिनप्रति देतपटभूषणघनै। राखतेबहुमानमेरो अनुजसरवरकोगनै ॥ ह्वैबिराटउदारहितकरि बचनअमृतभाखियो। हेतसोबहुमानकरिकै निकटअपनेराखियो २४॥ दोहा॥ निरख्योसरवरिभीमकी भूपतिताकीदेह॥ वैसोबलीबिचारिकै ढिगराख्योकरिनेह २५ फिरअर्जुननटराजह्वै कीनोतियकोरूप ॥ कंकणकिंकिणिआदिदै सजिआभरणअनूप २६ सिंदुरशीशतमोरमुख मेहँदीयुतशुभपानि ॥ जावकचरणमृदंगकी धुनिकीनीतिहिआनि २७ सुनिभीतरबोलेनृपति सबबूझ्योब्यवहार ॥ सकलज्ञानसंगीतलखि कलाचौगुनीचार २८ (अर्जुनउवाच) गीतिकाछन्द ॥ हौंतो

अखारेधर्मसुतके रहतबहुसुखपाइकै । भांतिभांतिरि
झावतौ करिनृत्यगीतसुनाइकै ॥ कौनअपनोगुणकहैस
बबूझिजैऋषिबोखिकै । देहिसकलसुनाइकै सबकहैंवि
द्याखोलिकै २९ ॥ दोहा ॥ पारथकोहौंसारथी बिजयबृ
हन्नलनाम ॥ जीवनआयेरावरे गेहलियोबिश्राम ३० ॥
चौपाई ॥ धर्मपुत्रकरिकैबहुनेह । पठयेइहांजानिकैगेह ॥
अबआभारहमारोलेहु । बस्त्रअन्नबरममभरिदेहु ३१ ल
घुकन्याबालकहिंपठाऊं । विद्यादैंजगमेंयशपाऊं ॥ भूप
सुताउत्तराकुमारि । सौंपीपठनयोगसुखकारि ३२ फि
रिसहदेवपहूंचोआय । सुद्धिकरीभूपतिसोंजाय ॥ (स
हदेवउवाच) हौंतौंधर्मपुत्रकोग्वाल । करतोमहाकृपाभु
वपाल ३३ वेतोदुरिबनबीथिनगये । दैउपदेशपठैह्यां
दये ॥ करिजानोंगाइयकोसार । अरुसबबिधिकरिसकों
हथ्यार ३४ मोदेखतधनुकोकहैगरै । कोरणजुरिमोसम
ताकरै ॥ नामसैनियहवृत्तिहमारी । यहजीविकासुचित्त
बिचारी ३५ अरुजयंतजैऋषिम्वहिंजानै । उन्हैंबूझि
भूपतिसनमानै ॥ सुनितिनजान्योबुद्धिबिशाल । सौंपीसुर
भीकीनोग्वाल ३६ ॥ दोहा ॥ फेरनकुलआयोतहां लियेजा
तसोहाथ ॥ देखिरूपकीराशितब चकितभयेनरनाथ ३७
(विराटउवाच) कौनजातिकोआपुहौकहातिहारोनाम ॥
केहिकारणकबिछत्रकहि देख्योमेरोधाम ३८ (नकुलउ
वाच) दोधकछन्द ॥ बाहुकभूपयुधिष्ठिरकेरो । राखतमा
नसबैबिधिमेरो ॥ वेदुरिकैबनमाहिंसिधारे । दैसबतेहम
कोदुखभारे ३९ कट्टरकूटरअश्वचलाउं । योजनसौयक
बासरधाउं ॥ बूझहुजैऋषिकोगुणमेरो मैं ग्रहनामसुन्यों

नृपतेरो ४० मोकहँसौंपियबाहनजेतो । जानहुगेगुणमें सहँतेतो ॥ योंसुनिभूपउदारभयोचित । हेतकस्योबहुधानितहीनित ४१ ॥ दोहा ॥ सौंप्योबाहननकुलकर ह्वैभूपालउदार ॥ बहुस्योआईद्रौपदी भूपतिसदनमँझार ४२ देखीभूपतितरुणिजब संभ्रमबढ्योअपार ॥ शचीकिधौंरतिमेनकारम्भातेसुकुमार ४३ नगीपन्नगीकमलजाभुवआईधरिदेह।सबरनिवासचकोरसोंशशिज्योंआईगेह ४४ (रानीउवाच) कहौंकौनकीकुजबधू आईह्यांकिहिकाम ॥ कौनजातिबरणोसकलसबबिधिकैगुणग्राम ४५ (द्रौपद्युवाच) पांडुपुत्रगृहद्रौपदी रानीपरमउदार ॥ ताकीदासीमोहिंगिनआईहौंतुमद्वार ४६॥ सुन्दरीछंद॥ बेबनमेंपतिसंग गईदुरि । मोसोंबैनकह्योहँसिकेमुरि ॥ जाहुबिराटमहीपतिकेघर । काटहुकालतहांत्यहिऔसर ४७ ॥ दोहा ॥ आईतुमसेवाकरनमोहिंसुजानीनाम ॥ आज्ञादेहुकृपालुह्वैकरौंयहांबिश्राम ४८ (रानीउवाच) कौनसेवउद्यमकहाकरिजानौंकहिबाल ॥ चन्द्रबदनिसोबेगिकहिसोइसौंपौंयहिकाल ४९ (द्रौपद्युवाच) दण्डकछन्द ॥ मंजनकराऊंआछेभूषणबनाऊं चुनिचीरपहिराऊंआछे भोजनसंजोयहौं । दर्पणदिखाऊंदरशाऊंमहानीकीद्युति कुंकुमसुगंधघनसारउरलायहौं ॥ बीजनाडुलाऊंजलशीतलपिलाऊंअरुसेजहूबिछाऊं नाकरोंगीकाजदोयहौं । ऐसेकैसुजानीकहैजानोनीकेमेरीरानी जूंठोहौंनखैहौंऔरपायँहौंनधोयहौं ५० (रानीउवाच) चौपाई ॥ सत्यबचननैंतैंकहैसुजानी । मैंतुमनिजपंडोकीजानी ॥ तनयासममेरेग्रहरहिये । मोसोंमनकीबातैंकहिये ॥ हलकीभारीजोकोउभा

खै। तूजनिताको आदरराखै॥ थोरेहूंकीजैसन्तोष। नि
शिदिनकरिहौंतुमपरदोष ५१ (सुजानीउवाच) गीति
काछन्द॥ करतरचापांचगध्रबअंतरिक्षसदाबसैं। बिक्र
मीबलबन्तबहुबिधिघोररूपमहालसैं॥ देहिंमोकोदुःख
जोवेआयताहिसंहारि हैं। देवकोनरदेवको छितिदेवको
नबिचारि हैं ५२ पापदृष्टिजोमोहिंदेखैप्राणगतसोजानि
यो। मोपञ्चरक्षकवेसदायहसत्यउरमेंराखियो॥ निकट
तिनराखीसुजानीपरमजियसुखपायकै। देतशिक्षारहत
सबशृंगाररचतिबनायकै ५३॥ दोहा॥ यहिबिधिपां
चौपांडुसुत औरद्रौपदीबाम॥ कालक्षेपतिनकेकरैं छत्र
सकलगुणग्राम ५४॥ चौपाई॥ होहिंएकसँगकालहि
पाई। सकलअवस्थाबरणैंजाई॥ जबभुवपतिहिजुहार
नआवैं। प्रथमहिंजेऋषिकोशिरनावैं ५५॥ इति श्रीम
हाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचिता
यांपांडवअज्ञातवासवर्णनोनामएकविंशोऽध्यायः॥२१॥

दोहा॥ अपनीदुहिताकोरच्यो नृपतिबिराटबिवाह॥
छत्रसकलपुरमेंभयो गृहगृहप्रतिउत्साह १ क्षितिके
क्षितेछितीशतब आयेतिनकेधाम॥ शक्रसमानपराक्र
मी जगमेंजिनकेनाम॥२॥ सोरठा॥ सभारचीतिहिका
ल अमरावतिसीजगमगै॥ आपुनज्योंसुरपाल भूमिदेव
सबदेवसे ३॥ भुजङ्गप्रयातछन्द॥ कहूँनृत्यकालीनकेयू
थसोहैं। कहूँरागकीतानसोंचित्तमोहैं॥ कहूँकंचनीलैम्
दंगीनचावैं॥ लसैंउर्वशीसीसबैमानपावैं॥४॥ कहूँमल्ल
मातेभिरैंभीमभारे। कहूँमेषसूरेडरारेडरारे॥ कहूँमत्त
मातंगतेघोरघूमैं। तपीपुत्रसेदेखियेचारुभूमैं ५॥ दोहा॥

मल्लएकआयोतहां बानोबांधेजाल ॥ पगमैठोउरपी तपट बोलिउठ्योउत्ताल ॥६॥ सभामांभनरनाहतब चारिबरणकीभीर ॥ बड़ेधनुर्द्धरसाहसी देखतहौंसबबीर ७ मोसोंमल्लजुरैनहींकोऊकाहूदेश ॥ हैकोऊमोसोंजुरैआज्ञादेहुनरेश ॥८॥ छप्पै ॥ मरहटसोरठजीतिजीतिसारंगतिलंगी। जीतिबिदर्भीमल्लसकलभूधरकेसंगी ॥ मगधजीतिमेवारमधूधरजीतिचँदेरी । बन्दरबारिधिघाटजीतिकरनाटकहेरी ॥ कविछत्रजीतिअंगदनगरनहिंकोउसरबरिकारिसकै । भुजबरणहुँतिहिशूरकेजोकरिवरसन्मुखतकै ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ सुनिसुनिसभानबोलैकोई । मनसाहसकाहूनहिंहोई ॥ नृपतिबिराटहिसुधिह्वैआई ॥ लीनोस्वारजयन्तबुलाई १० (विराटउवाच) सुनुजयन्ततूआयसुमान । मल्लयुद्धतूयासोंठान ॥ जोहारैतोलाजनहोय । जीतैद्रव्यदेहिंसबकोय ॥ ११ ॥ दोहा ॥ तबजयंतयहमल्लसों कहीबातहर्षाय ॥ हमतुमरससोंखेलिहैंलीजैसभारिझाय १२ तूजोआनैरोषमन डारैभुजाउपारि ॥ हमपरदेशीन्यायही देहैंभूपनिकारि ॥ १३ ॥ (मल्लउवाच) तनदीरघदीरघभुजा बचनकहतकतदीन ॥ योंसोऊनहिंउच्चरै होयजुतनकोहीन ॥ १४॥ चौपाई ॥ मल्लयुद्धदोऊमिलिकरैं । लटपटायधरतीधुकिपरैं ॥ फिरिफिरिबलकरिउठतसँभारि । कोउनमानतद्वैमेंहारि ॥ १५ जबहिंजयन्तभुजाबलकियो । मल्लउठायपुहुमितैंलियो ॥ करिबहुक्रोधसुभूतलडारयो । जनुसुरबज्रधायगिरिपारयो ॥१६॥ सम्हरिउठ्योयेबचनसुनाय । अबमारौंतूखलकितजाय ॥ लैतबगुरजउठ्योअकुलाइ । हन्यो

जयन्तनासिकाआइ १७ बिषमचोटथरहर्‍योशरीर । मु
र्च्छितपुहुमिगिर्‍योरणधीरा ॥ निरखतजैऋषिऔरसु
जानी। हैहैहैकरिकैअकुलानी १८ चेतिजयंतउठ्योगल
गाजि । जाननपायोसोखलभाजि ॥ भूमहिंसातबारधरि
मार्‍यो । गहरोगर्ब्बदुष्टकोगार्‍यो ॥१९॥ सोफिरिजुर्‍योन
करिबलजोरि । दोबरकीनोमल्लमरोरि ॥ देखतसभास
कलनरहर्षे । बसनरजतमणिमाणिकबर्षे २० मृतकदियो
सुरसरीबहाइ । तबसबसमदेराजाराइ ॥ जबसबनृपति
बिदाह्वैगये । अपने२गृहसुखलये ॥२१॥ दोधकछन्द ॥
मत्तगयन्दहुतोइकऐसो । अंजनकोभुवधूमरजैसो ॥ नीर
निकेतसुछोरिचलायो । गर्जतधामनिडारतआयो२२ का
न्हिमहावतकीनकरैसो । प्राणतजैढिगआवतहैसो ॥ सुंदर
मन्दिरडारिदयेंजू । भीतरसबनरनारिभरेजू २३ भूपति
सोंसबलोगपुकारे । ह्वैकुञ्जरनरकेतिकमारे ॥ ताहितके
तिकलोगपठाये। बांधहुयाकोभाषतआये ॥ २४ ॥ चौपा
ई ॥ कोऊनिकटसकैनहिंजाई । भूपतिसोंसबकहीसुनाई ॥
क्योंहूँहाथनकुञ्जरआवै । करोउपायजोभूपबतावै ॥२५॥
(राजोवाच) कैसबमिलिकैबांधोजाइ । कैअबशस्त्र
गहौकिनजाइ ॥ बोलिजयन्तहिआज्ञादई ॥ यागयन्दतें
चिन्ताभई ॥२६॥ कैबलबांधिकैताकहँमारि । पुरकोकंटक
बेगिनिकारि ॥ कहैजयन्तजुमारौंयाहि । कुञ्जरकोजिनि
पकरौताहि २७ सिंहनादगाज्योबलबीर । तबगयन्दथर
हर्‍योशरीर ॥ पूछपकरिझकझोरर्‍योऐसो । दाबतमृगको
चीतोजैसो २८ पकरिरदनलैपहुँच्योथान । ज्योंअजया
गहिलीजैकान ॥ बांधिताहिभूपतिशिरनायो । तबजयं

तबसन्ननिपहिरायो ॥ २९ ॥ दोहा ॥ इहिविधिबीतेमास दश नृपबिराटकेतीर ॥ कालक्षेपइहिबिधिकैरैं पण्डुपुत्र बरबीर ३० ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंह विरचितायांभीमसेनविजयगजबन्धवर्णनो नामद्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

सोरठा ॥ नृपतरुणीकोबन्धु कीचकबलीबिशालतन ॥ यौबनमदअतिअन्धु सहसद्विरदसमताहिबल ॥ १ ॥ चौपाई ॥ शतबन्धवकीचकअतिबली । बरअवगाहतरण अस्थली ॥ सोहतएकमातकेजाये । ऐसेसुभटमहीपति पाये २ ॥ गीतिकाछन्द ॥ इकद्यौसकीचकमोहिकै निज महलभूपतिकेगयो । कीनोप्रणामअशेषभागिनी देखिकै आसनदयो ॥ पवनतेहिढोरैंसुजानी नृपतित्रियभोजन करै । रूपदासीकोबिलोकत देहकीचकथरहरै ॥ ३ ॥ बात भगिनीसोंकहैचितअटकिदासीसोंरह्यो । कालघेरोमूढ़ हँसिकैतबसुजानीयोंकह्यो ॥ हैंपंचरक्षकमोहिंगंध्रवतुरत ताहिसँहारिहैं । यहबलीहोउकिहोहुनिर्बल कछुनचित्त बिचारिहैं ४ कामअंधभयोसुआतुरतुरतभगिनीसोंकहै । देहुदासीमोहिंमांगेइच्छमोंउरमेंरहै । देहुँबदलेसहस दासीएकयहमोहिंदीजिये । छांड़िलज्जाकहीतोसोंकह्यो मेरोकीजिये ॥ ५ ॥ (रानीउवाच) आहिदासीद्रौपदीकी कहौंकेहिबिधिदीजिये । रहैमेरेउत्तरासमलोभचित्तनकी जिये ॥ जीविकाहितआइबिरमीकहौंकिहिबिधिपाइये । दईजायनबीरमोपै आपधामासिधाइये ॥ ६ ॥ (कीचक उवाच) दोहा ॥ कहिकैसेतूराखिहै दासीबलकरिलेहुँ ॥ राजपाटसबछीनिकै कोटिकोटिदुखदेहुँ ॥ ७ ॥ चौपाई ॥

चेरीलागिनशावहिराजा । तेरोकहासुधरिहैकाजा ॥
अतिबलवन्तबीरहैमेरो । राखिलेहुकोऐसोतेरो ८ (रा
नीउवाच) परतरुणीरतजेनरभये । अपनी करणी ते
मिटिगये ॥ जो चाहौअपनीकुशलात । फेरकहौजिनि
याकीबात ९ ॥ सवैया ॥ अन्धमहादशकन्धहरी सिय
राघवकोशरताउरशाल्यो । शक्रहि शापदयोमुनिगौतम
जानिकुकर्मकेकर्मनिचाल्यो ॥ शुंभनिशुंभहतेतरुणी अरु
तारहिलागिबध्योबरबाल्यो । यों समझै मन में
शठतू किनकोनगयोपरबामकोघाल्यो १० ॥ दोहा ॥
भगिनीमुखयेबचनसुनि उठिसुधधायोधाम ॥ बिकल
महाजियकलनहीं घरीमुहूरतयाम ११ ॥ चौपाई ॥
कीचककोसुधिबुधिनहिंरही । सूनेसदनसुजानीलही ॥
कामअन्धअञ्चलतबगह्यो। आतुरह्वैयाबिधिसोंकह्यो १२
चितमेरोतोसों अबलाग्यो । भोआसक्तसुधीरजभाग्यो ॥
मेरेतरुणीशशिउनहारी । सबपरहोहुसुहागिलनारी १३
उत्तमभूषणबसनबनाऊं । अरुदासीकोनाम मिटाऊं ॥
काहेयौबनउतमगँवावै । तूतोमोउरमेंअतिभावै १४ (सु
जानीउवाच) गन्ध्रबपंचमोहिंरखवारे । दीरघतनुबल
बिक्रमभारे ॥ मोहिंछुवतवेतुरतहिआवैं । कीचकतेरे
प्राणनशावैं १५ तोहिंमरेमोअपयशह्वैहै । मोहींदोष
सकलजगदैहै ॥ यहसुनिकीचकबहुभयमानी । तुरत
गयोमुकरायसुजानी १६ निशिदिनताकहँनींदनआवै ।
धनसंपतिघरबारनभावै ॥ दूतीबोलिसुइहिबिधिकही ।
यहदासीमोचितबसिरही १७ ॥ भोरैल्याउसुजानीअबै ।
मोमनइच्छापुजबैसब १३ बहुबातनदूतीसमुझावै । चित्त

सुजानीकछूनलावै १८ यहाबिचारिनहिंबोलैसोई। आज कालिकछुकलहनहोई॥ कीचकआतुरह्वैउठिधायो। जहां सुजानीतिहिथलआयो १९॥ दोहा॥ सूनेगृहमेंपायकै गहेकेशकरधाइ॥ शठकहिधौंतोकोअबै कौनछुटावै आइ २० दासीकर्मकरायकैत्रासदिखाऊंतोहिं॥ अपनी मनभाईकरौं यहैआनिहैमोहिं २१ क्योंहूंहठनहिंखल तजै अंचरडारयोफारि॥ करतेकेशनसोतजै अतिअकु लानीनारि २२॥ (सुजानीउवाच) जानतरसकीरीतिनहिं तूखलएकहुबात॥ परतरुणीकामनदियेतबसबसुखसर सात २३ रसहीरसहीमनमिलैतबलहियेपरनारि॥ बौ रायोयेबचनकहिगूढ़उपायबिचारि २४॥ शिथिलभयोये बचनसुनिकेशदयेमुरकाइ (सुजानीउवाच) रैनिभये तेक्योंनतूनाच अखारेजाइ २५ भोगयोगसूनेसदनह्वै निशिकीचकराइ॥ जाहुतहांहौंआयहौं यामकरौंनिबि हाइ २६॥ दोधकछन्द॥ कीचकयोंसुनिकैसुखपायो। बैनसुन्योहितवन्तसुहायो॥ जातभयो अपनेगृहसोई। चाहतबाटनिशाकबहोई २७ बैनकह्यो तहँआयसुजानी। हैपतिभूपजहांसुखदानी॥ कीचककानिननेकहुराखी। सो गतिबामतहांसबभाखी २८ आयसुअर्जुनकोअबदीजै। कीचकमारहिंसोमतकीजै॥ रोवतबामहिंस्वासनआवै। भूपतियाबिधिकैसमुझावै २९॥ दोहा॥ मासदिवसबीते त्रियाहोब्रतपूरणहोइ॥ तौलगिकालहिकाटिये लखैकछू नहिंकोइ ३०॥ चौपाई॥ अवधिबितेकीचकसंहारों। तबन हिंऔरबिचारबिचारों कैतौलगिरहियेमनमारि। कैबन बासकरावहिनारि ३१ बिलखिबदनत्रियपहुंचीतहां। हुते

बृहन्नलअर्जुनजहां॥बरणीकीचककीअधिकाई। भूपतिके
मनकछूनआई ३२ मेरोकह्योगुसाइंकीजै। हनिकीचकको
जगयशलीजै॥ तुमहिंअछतकीचकदुखदयो। पौरुषक
हांतुम्हारोगयो ३३ (अर्जुनउवाच) जोभूपतिकोआयसु
पाऊँ। तौकीचककोमारिदिखाऊँ॥ नृपकीकानिनतोरीजा
य। तातेकछूनकरौंउपाय ३४॥ दोहा॥ गईनकुलसहदेव
पैबिलखिबदनबरनारि॥ अधिकाईतादुष्टकी सबबिधि
कहीबिचारि ३५ (सुजानीउवाच) चौपाई॥ कीचकबांह
हमारीगही। तुममेंकहौकहांपतिरही॥ मेरोजियकोपरिह
सुसारो। क्योंनहिंअपनेअरिकोमारो ३६ (सहदेवनकुल
उवाच) दोहा॥सुनि२ तेरेबचन ये बाढ़्योक्रोधअपार॥
मेट्योजाइननृपबचनबिनयोबारम्बार ३७ मारोंकीचकद
एकमेंभूपतिआयसुपाइ॥ करैअवज्ञानारिअबकोकहिनर
कैजाइ ३८ चौपाई॥ मासएकतूऔरनिवारि। तबसकि
हैंकीचककोमारि॥ इनहूंतेत्रियभईनिरास।पहुंचीभीमसे
नकेपास ३९ सजलनयनभरिआंसूडारे। मीडतनय
नभरेरतनारे॥ पवनपुत्रतबयहबिधिजानी। बिलखीठा
ढीद्वारसुजानी ४० आयोद्वारलखीत्रियनैन। श्वासालै
लैकहैनबैन॥बोलीबिलखिअंशुवनिमांह। कीचकदुष्टगही
मोबांह ४१ पांडुसुतनपैफिरीपुकारि। वेनगुहारिलगेकोउ
चारि॥अबजोसांईतूसहि रैहै।गहिसोदुष्टमोहिंलैजैहै ४२
सवैया॥ रोषचढ़्योबिषसोंसबअंग लखीत्रियकेमुखपैम
लिनाई। बूझत उत्तर फेरनदेत गरोभरिकैमुखबा
तनआई॥ कीचककोसुनितामुखनाम सुदौरिगईदृगमें
अरुणाई। देखतहीबधिहौंछणमें यहपैंजयुधिष्ठिरभूप

दुहाई ४३ पैहथिमीचुबुलाइलई तिनस्यारबराइकैसिंह सोंखेल्यो। दादुरधाइजुस्योअहिसों सुकपोतकिधौंबर बाजसोंभ्रेल्यो॥ मूषकयुद्धमंजारिहिसों पगपीलकोचा हतगर्द्दभठेल्यो। पेस्योहैकालकरालसोई करजायभुजं गमकेमुखमेल्यो ४४॥ दोहा॥ कालसर्प्पसोंखलडस्यो कामलहरिअकुलाइ॥ पूंछमरोरीसिंहकी अबजीवतकि तजाइ ४५ जोनहिंमारोंक्षणकमें आवैकुंतिहिलाज॥ जोबैरीबलकरिरहै जीवनकछूनकाज ४६ (द्रौपद्युवाच) चौपाई॥ तुमदेखतसबपंचनमांह। दुश्शासनपकरी मोबांह॥ दुर्योधनतबछीनेचीर। हुतेअछत तहँ पांचो बीर ४७ बिपिनजयद्रथछलकैहरी। बांध्योदुष्टकानिन हिंकरी॥ दुखदैकीचकफास्योचीर। तातेव्याकुलभयो शरीर ४८॥ दोहा॥ सभामांभ्रसुनिकीचकै भीमचल्यो अकुलाइ॥ अबहींमारोंदुष्टको अबकोसकैबचाइ ४९ (द्रौपद्युवाच) अबनउतावलकीजिये जानेकालबचाइ॥ दुष्टहिमारोरैनिमें रहैअखारेआइ॥५०॥ मैंसहेटतासों बदी आवैतहां निशङ्क॥ ताहितहांसंहारियो करियो दयानअङ्क ५१ पूरौमतौसुकीजिये आवैजामें जीति॥ नहींउतावलकीजिये यहैस्यानकीरीति ५२॥ चौपाई॥ भीमसेनतरुणीबपुकीनो। दृगअञ्जनशिरसिंदुरदीनो॥ पटभूषणआभरणसम्हारे। कटिकिंकिणिनुपूरभ्रनकारे ५३ करितरुणीबपुपहुँचेतहां। बदीसहेटअखारेजहां॥ बैठिरह्योतागृहमेंजाय। कीचककालपहूंच्योआय॥ ५४॥ दोहा॥ होनहारसोनहिंमिटै भावीमहाबलिष्ट॥ कीचकमनसिजसिंधुमें बोल्योबलीअदिष्ट ५५॥ दोध

कछन्द ॥ रैनिभयोसुखकीचकपायो । बामसहेटबदीतहँ आयो ॥ देखित्रियाबपुयोंहँसिभाख्यो । तूधनिहैअपनो प्रणराख्यो ५६ आवतहीकरताकहँमेल्यो । मानकियो बहुबारनठेल्यो ॥ नेकजहींबलकीचककीनो । दुष्टढकेलि त्रियातबदीनो ५७ जानिगयोयहबामनहोई। हैबरबीरन मेंयहकोई ॥ तोकहँमारिसुजानीलाऊं । जोनबधौंद्विज दोषनिपाऊं ५८ ॥ सोरठा ॥ भिरेकोपिदोउबीर लटपटा तलोटतलिपटि ॥ शूरसमररणधीर भूधरजनुभूतलभिर त ५९ ॥ चौपाई ॥ द्वैमेंहारिनकोऊमानै । कोपिअमित गतियुद्धहिठानै ॥ अतिबलभीमसेनतबकियो । मूढ़उठाय पुहुमितेलियो ६० पटक्योभूमिगरेपगदियो । मारिसुदुष्ट प्राणबिनुकियो ॥ मांझचौहटेराख्योजाय । जानैंनहिं पुरजनयेभाय ॥ एकबूंदकहुँरुधिरनआयो । देखतसबज नबिस्मयपायो ६१ ॥दोहा॥ मारिदुष्टधरिचौहटे जियकी व्यथानशाय ॥ अर्द्धरैनिसुतपवनको निजथलपहुँच्यो आय ६२ जागेपुरजनसदनसब प्रातभयेनरनारि ॥ मृ तकदेखिकीचकतबै सकैनकोउबिचारि ६३ ॥ नगस्वरू पिणीछन्द ॥ नृपालसुद्धिपायकै । गयेतुरन्तआयकै ॥ बिलोकिभीतिह्वैरहे । नबैनजाँयतहँकहे ६४ बिलापता पसोंतये । अशेषशोकसोंरये ॥ उपायकौनठानियें । क छूनबातजानिये ६५ ॥ दोधकछन्द ॥ बन्धवकीसुधिता क्षणपाई ॥ भूपतिकीतरुणीतहँआई ॥ रोदनकैअतिही दुखठाने । देखतभूपमहाबिलखाने ६६ (राजोवाच) कौन्यहिंकीचकशूरप्रहार्‍यो । जासँगयुद्धजुर्‍योसोइहा र्‍यो ॥ अंगनहींक्षतशोणितआयो । भूलिरहेकछुशोधन

पायो ६७ (रानीउवाच) दोहा ॥ रहैतुम्हारेगेहमेंजाहि सुजानीनाम ॥ गंधबरक्षकतासुके निशिदिनआठहुयाम ६८ कीचकअतिआसक्तह्वै गहीसुजानीबाल ॥ ताही दिनसोंमैंलख्यो घेर्योहैयहिकाल ६९ ॥ चौपाई ॥ कीचकतिनगंधर्बनिहयो। काहूपासनराख्योगयो ॥ अबचलि ताकीकिरियाकीजै । लैकुशताहितिलांजलिदीजै ७० ॥ लखिकुतवालहिबोलेराउ । परजालोगनिबेगिबुलाउ ॥ लैकीचककोघाटहिजाउ । बिधिसोंसबकिरियाकरवाउ॥ ७१ ॥ गीतिकाछन्द ॥ कहैंजेऋषिनीचलोगनि नाहिं अंगछुवाइये। बर्णउत्तमहोयजोई ताहिबेगिबुलाइये ॥ सुद्धिआईभूपको तबलैजयन्तबुलायकै। बारद्वैयकराज आज्ञा तिहिदईतबटारिकै ७२ फेरिआयोपवनको सुत भूपतासोंयोंकहै । बचनमेरोमेटिकै कहुबेगिमूढ़ कहांरहै ॥ पांडुसुतकीकानिराखों क्रोधह्वैकैसेहनो । तूतोरहैसन्मानसों बहुअनुजसरिवरहौंगनो ७३ ॥ (जयन्तउवाच) दोहा ॥ मार्योकीचकमैंकहा कत कीजतहैक्रोध ॥ मोदुखपायोबादिनृप अन्तहिलीजै शोध ७४ भोजनभाजनछांड़िकै हौंनाहिंअन्तहिजाउं ॥ मनसाबाचाकर्मना तुमकोमहाडराउँ ७५ ॥ सोरठा ॥ करीकृपानरनाहु यहिबिधि कहीजयन्तसों ॥ लैकीचककोजाहु दूरिनगरतेकृतिकरो ७६ (जयन्तउवाच) बन्धुकुटुम्बजोहोहिं सोईमृतकहिकाढ़िहैं ॥ कहापरीहैमोहिं ऐसेकर्मनहौंकरौं ७७ ॥ दोधकछन्द ॥ भूपतिकोफिरि आयसुपायो। योंनरनाथहिबैनसुनायो ॥ जो अबभोजनकोछपाऊँ । लैकीचककोघाटसिधाऊं ७८ भोजन

कोभुवपालभँगायो। बैठिजयन्ततहांसबखायो ॥ रोवहिं
कीचककेसबभाई। जेंवतसोनहिंनेकअघाई ॥ ७९ ॥
दोहा ॥ करिभोजनबलवन्ततब कीचकलयोउठाय ॥ दू
रिनगरतेघाटपर मृतकउतास्योजाय ॥८०॥ बनउपबनद्रु
मतोरिकै आनिधरेतिहिठौर ॥ औरशिखरबहुगिरिनके
केतिकआनेतौर ॥ ८१ ॥ इतकीचककेबन्धुसब पकरिद्रौप
दीबाल॥ जारनकीचकसंगही लियेचलेतेहिकाल ॥८२॥
॥ चौपाई ॥ याहितमास्योबन्धुहमारो। पकरियाहिवा
केसँगजारो ॥ बरजतपुरजनसोनहिंमानैं। कछुभयअ
पनेचित्तनआनैं ॥ पकरिताहिलैपहुँचेतहां। कीचकमृ
तकपरोहैजहां ॥ भरिभरिघटघृतकेतिकआने। चन्दन
केगुणकौनबखाने ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ रुदनकरतिलखिद्रौ
पदी गृहतनचल्योजयन्त ॥ क्रोधबढ्योअँगअंगमें देख
तकर्मदुरन्त ८४ बसनउतारिधरेकहूँ भीमभयानकधाय ॥
फूलिगातदूनोभयो उपमाकहीनजाय ॥८५॥ कीचचढ़ाई
सकलअँगकेशदयेमुकराय ॥ करलैतरुवरबज्रसमदईदि
खाईआय ८६ देखिसकलभयभीतह्वै भागिचलेदिशिचा
रि ॥ एकौकीचककेनिकट रहेननरअरुनारि ॥ ८७ ॥ चौ
पाई ॥ कीचकभागेतबअकुलाय। यहगन्धर्बपहूँच्योआ
य ॥ भीमबटोरिबीरसबलये। सुरजनुबज्रधायगिरिहये ॥
॥८८॥ सवैया ॥ अंगनअंगनकीचलपेटिकै केशबड़ेचहुँ
घामुकराये। बेषभयानकदेखिसबै नरह्वैभयभीतादिशान
कोधाये ॥ हांकिहनेद्रुमबज्रकेधाय महीधरकीचकभूमिमि
लाये। कोपिनिशङ्कह्वैअङ्कभरेसुसकेलिसकेलिचितानचढ़
ये ८९ ॥ दोहा ॥ गयेशेषनरभाजिकछु कहोभूपसोंजाय ॥

करतरुवरगन्धर्बलै तिहिथलपहुँच्योआय ॥९०॥ तोटक छन्द॥ द्रुमधायहनेबरबीरकिते। अवलोकिभजेनरशूरजिते॥ नृपकीचकहैतिहिठामसबै। सुचिलीजियेजूतहँजायअबै॥९१॥ नकह्योकछुसंभ्रमभूलिरहे। मुखतेकछुबैननजायँकहे॥ सबकीचकभीमजरायदये। तरुणीउरआनँदकोटिछये॥९२॥ दोहा॥ गृहतनपठईद्रौपदी आपुगयोसरपास॥ न्हाइधोयपहिरेबसनआयोआपअवास॥९३॥ सरवरतटद्रुमडारिकै आयोभूपनिकेत॥ धाइधाइनरनारिसबबूझतकरिकरिहेत९४॥ चौपाई॥ हेजयन्तकहियेसतभाई। कोगन्धर्बपहूँच्योआई॥ ताकेहाथकहाहथियार। सोसबबरणहुँताकोसार॥९५॥ (भीमसेनउवाच) दण्डकछन्द॥ आयोबीरऐसोकोऊगंध्रबअनैसोगिरिमंदरहैजैसोकौनबरणिबतावई। हाथमेंतमालकालदण्डतेकरालबाहु देखियेबिशालमहाकालकालगावई॥ भारेभारेकीचकसँहारेमेरेदेखतही भाजेहुनबीरभाजिजानकोऊपावई। मोहिंबुद्धिआईएककंदरामेंपाई देखोत्रिभुवनराईबिनुऔरकोबचावई ९६॥ दोहा॥ नीचेऊपरकाठदै दीनेकीचकजारि॥ आयोबीरकरालतहँ जहांसुजानीनारि॥९७॥ चौपाई॥ ताकेकानमांझकछुकह्यो। हौंनिशङ्कतहँबैठ्योरह्यो॥ देखतसोउड़िगयोअकास। डारिगयोद्रुमसरवरपास॥९८॥ सुनिसुनिसबहीअतिभयमानी। देबीकरिकैगनीसुजानी॥ अरुगन्धर्बभक्तिउरराखैं। निशिदिननृपसेवाअभिलाखैं ९९ पाचौबंधवकालहिपाई। भयेएकथलसबजनआई॥ हर्षेभीमसेनगुणगाइ। कोऊभेदसकैनाहिंपाइ १०० श्रीकीचकबधवर्णनेत्रयोबिंशोऽध्यायः॥

चौपाई ॥ दुर्योधननृपयहसुधिपाई । कीचकाकोहिं
मारेसौभाई ॥ मोउरउपजतयहसन्देह । भीमकह्योहैका
रजयेह १ (दुर्योधनउवाच) तोमरछन्द ॥ सुनिदूतति
हिथलजाउ । यहसुद्धिलैफिरिध्याउ ॥ तबभूपआयसुपा
इ । पहुँच्योतहांसोजाइ २ लहिभेदबातबनाइ । तिन
कहीनृपसोंआइ ॥ शतहनेकीचकराइ । कछुभेदजानि
नजाय ३ नहिंपांडुसुततेहिठाम । लहियेकहूँनहिंनाम ॥
तबदूतबिनयोयेह । नृपकेभयोसंदेह ४ ॥ दोहा ॥ भूपति
करिसंदेहमन बोलेभीषमद्रौन ॥ पुरबिराटकीचकबधे
केहिधौंकारणकौन ५ (भीष्मउवाच) कीचककोसंहारि है
भीमबिनाकोऔर ॥ कितेद्विरदसमताहिबल सुभट
नकोशिरमौर ६ (सुशर्माउवाच) भूपतिऔरबिचारन
कीजे । मोसँगसैनअबैकछुदीजै ॥ जोहरिकैसुरभीहम
लावैं ॥ होहिंतहांसबपांडवधावैं ७ वेसुरभीनहरीसहि रै
हैं । लागिगुहारितहांचलिऐहैं ॥ भूपतिसंगचमूसबदी
नी । बेगिबिदातेहिअवसरकीनी ८ ॥ तोटकछन्द ॥ न
रनाहचमूसबसाजिचले । चतुरंगबनेसबसैनभले ॥ दि
शिउत्तरआपमहीपगये । बनबीथिनमेंसबपूरिलये ९ ॥
दोहा ॥ कोपिसुशर्मातबगयो दिशिदक्षिणउत्ताल ॥
तत्क्षणनृपतिबिराटके हरेधेनुकेजाल १० ॥ भुजंगप्र
यातछन्द ॥ कितेग्वालबांधेसुशर्माजहांते । कितेजीवलै
लैभगेहैंतहांते ॥ कितेआयकैभूपहीपैपुकारे । कितेधेनु
केवृन्दलीनेतिहारे ११ चलोसैनलैबीरयोंआपुभाखैं । कि
धौंआपहीजायकैधेनुराखैं ॥ तबैभूपशोचैंकहामन्त्रकीजै ।
रहैआपनोद्वाउँसोबोलिदीजै १२ ॥ दोहा ॥ कीचक

कोसुमिरैनृपति यहकहिबारम्बार ॥ वाबिनसुरभीबेढ़िये कोकहिलगैपुकार १३ हरुवैबोल्योभूपतब सैनपलानोजाइ ॥ धायसुशर्माबीरते सुरभीलेहुछुड़ाइ १४ ॥ नगस्वरूपिणीछन्द ॥ नरेशसाजिकैचले । अनेक शूरलैभले ॥ तुरङ्गज्योंकुरङ्गहैं । करीसमूहसंगहैं १५ महाकरालक्रोधमें । चलेसुधेनुशोधमें ॥ नत्रस्त्रसोंकहूँ मुरें । सुबर्म्मलैतहांजुरें १६ ॥ दोहा ॥ बिजयबृहन्नल गृहरह्यो पांडुपुत्रतेचारि ॥ देखतकौतुकयुद्धको सकैन कोऊहारि १७ ॥ चौपाई ॥ तबरणसुभटसुशर्माकोप्यो । भूपबिराटनहींपगरोप्यो ॥ भागतजानिबांधिरथधस्यो । लैकहिताहिपयानोकस्यो १८ ॥ दोहा ॥ सहदेवबपुग्वाल को जैऋषिकोशिरनाइ ॥ टेरिसुशर्माहांकदै फेस्योतत्क्षण जाइ १९ मत्तकरीदलतासुको अंकुशलैफिरिधाइ ॥ फेस्योबलकरिसिंहज्यों गह्योकोपिधँसिजाइ २० ॥ चौपाई ॥ सबैसुशर्माबलकरिहास्यो । पांडुपुत्रसोंधरणि पछास्यो ॥ मल्लयुद्धकरिदलबिचलायो । छोरिबिराटहि दलमेंलायो २१ जैऋषिकोतिनमाथोनायो । ताकी सेनाबहुसुखपायो ॥ लैसुरभीतनमनसुखपाइ । चलेआ पगृहकोतबराइ २२ उत्तरदिशिदुर्योधनराइ । बेढ़िलई सुरभीसुखपाइ ॥ करणदुशासनअरुभगदन्त । कितेयू थलैचलेतुरन्त २३ ॥ दोहा ॥ भागेग्वालपरायकै बहुबि धिकरीपुकार ॥ उत्तरक्योंनिश्चिन्तह्वै बैठ्योसदनमझार २४ ॥ छप्पै ॥ दुर्योधनइकहरीहरीदुश्शासनबलकरि । एककरणकुलहरी कोपकरिआगेधरिधरि ॥ हरीहर षिभगदत्तकितीकपिलाअरुधौंगी । लक्ष्मणकवँरकलिंग

हरीकेतिकिइकठौरी ॥ हरीद्रोणसुरभीकिती क्यों न श्रवणयहकिजिये। सुनिउत्तरउत्तरदिशा सबतेरोधन लिजिये ॥ चौपाई ॥ करतकुलाहलगिरिगिरिजात। दीरघदीरघस्वरकहिबात ॥ ऐसोधिकहैजगमेंजिये। कहाकुँवरतूहारेहिये २५ (उत्तरउवाच) जोमेरेढिग सारथिहोतो। तौकहिकौरवकोदलकेतो ॥ ताबिनुकैसे कैरथबाहों। पैंड़ोयातैंनृपकोचाहों २६ (द्रौपद्युवाच) दोहा ॥ द्रुपदसुतायेबचनसुनि अर्जुनसोंहरषाइ ॥ कही सकलयुतसाहसे इहिबिधिकैअकुलाइ २७ ॥ सवैया ॥ क्षत्रिययुद्धडराइरहैं जगकर्मवृथासबधर्मअकारथ। काजत्रियाद्विजगाइनके बरदेतअभयपदजीतिकैभारथ ॥ तूसबबातडराइरह्यो कतचाउनचित्तरुहाइकैपारथ। काहेतेबैठिरह्योहठिकैअबक्योंनकरैउठिउत्तरसारथ २८ दोहा ॥ उत्तरसोंतबहींकही बिजयबृहन्नलबात ॥ क्यों नयुद्धकीबातकोहरषतहैहठिगात २९ पारथसारथमैंकियो जानोरथहौंवाहि जहांहोतहौंसारथी कहौंकहाडर ताहि ३० भयोबृहन्नलसारथी रथआरुह्योकुमार ॥ साजिकैदललीनोधनो कोपिकस्योकरवार ३१ (उत्तरउवाच) ऐसोरथअबहांकतू तुरततहांचलिजाउँ ॥ हनौं सकलशतबंधुवे बचैनकौरवनाउँ ३२ ॥ चौपाई ॥ तब सारथिबरुकरिरथहांक्यो। औघटघाटनकाननताक्यो ॥ कौरवदललखिसिंधुसमान। लखिउत्तरघटरहेनप्रान ३३ गाजतसिंधुरअतिहयहींसत। मारैमारकरतभट दीसत ॥ उत्तरतबबिनवैकरजोरि। सारथिफिरिगृहतन रथमोरि ३४ बारबारसोबिनतीकरै। एकौसारथिचित

नहिंधरै ॥ रथतजिसोभाग्योअकुलाइ। धायपार्थपकस्यो सोजाइ ३५ बांधिधस्योरथऊपरआइ । सन्मुखच ल्योसेनकेधाइ ॥ तबगुरुद्रोणपार्थपहिंचान्यो । सबही सोंयहबचनबखान्यो ३६ (द्रोणउवाच) ॥ सवैया ॥ बांधिरथीरथआनिधस्योजिहि आपनिशङ्कनशङ्कखरी सी। सायरसंगमकोअवगाहन आपुभुजाबलपैजकरी सी ॥ बाणशरासनशूरसजौ यहबानिभलीकछुमैंनहिं दीसी । पौनकेगौनहुतेअतिलाघव आवनिसूझतिअ र्जुनकीसी ३७॥ दोहा ॥ उत्तरसोंसारथिकही करिनकछू भयअङ्क ॥ सकलनिपातौंअरिचमू रहियेआपनिशंक ३८ नगरनिकटतरुवरशमी तापरधनुअरुबाण ॥ आनि उताइलमोनिकट गंजौंअरिदलप्राण ३९ ॥ दोधकछंद ॥ बैनसुन्योउठिउत्तरधायो । वेगिहिताद्रुमकेढिगआयो ॥ लेतहिपन्नगसोदरदेख्यो । संभ्रमचित्तमहातिनलेखो ॥ ४० ॥ सारथिकोफिरिबैनसुनाये । व्यालभयेइषुमो कहँधाये ॥ योंसुनिकैतबसोउठिधायो । बाणशरासन लैतहँआयो ४१ ॥ दोहा ॥ निर्गुणधनुगुणवन्तकरि सूधेकीनेबान ॥ काढ़ीगंगाभूमिते धोयेसकलकृपान ४२ पहिरिकवचशिरटोपदै करीधनुषटङ्कार ॥ हांक्यो रथबहुक्रोधकरि पहुंच्योकटकमझार ४३ बीरधनुर्द्धर धीरकेउरमेंकछूनशंक ॥ भटदुर्घटघटसबकटककरोम हाआतंक ४४ ॥ चौपाई ॥ बैठ्योआनिध्वजाहनुमंत। जाकेबलकोकछूनअंत ॥ पूस्योशंखधनुषटंकास्यो । जीत नदुर्जनदलपगुधास्यो ४५ (उत्तरउवाच) मोसोंकहि नबृहन्नलआन। सत्यकहोकोआपनिदान ॥ अकहकर्म

कछुकहतनआवै। महानिशंकयुद्धकोधावै ४६ (अर्जुन उवाच) सुनियेउत्तरयहसतभाय। जैऋषिभूपयुधिष्ठिरराय॥ हौंअर्जुनयहसनोकुमार। भीमजयन्ततुम्हारोस्वार॥ सहदेवसुरभीराखतसैन। बाहकनकुलमनोंमहिमैन ४७॥ दोहा॥ बहरानीहैद्रौपदी जाहिसुजानीनाम॥ कछूनभयचितकीजिये जीतौंसबसंग्राम ४८ हमहींलगिसुरभीहरी लेतहमारोशोध॥ अबसुनिबीतोअवधिसो तबमैंकीनोक्रोध ४९ फिरउत्तरलाग्योचरण सुनिसोईसतभाय॥ दशौनामअपनेकहौ तौमोमनपतिआय ५० (अर्जुनउवाच) जन्मोकोहरबृत्ततरअर्जुनपायोनाम॥ सितवाहनअरुफालगुन कृष्णजिष्णुउश्याम ५१ बिजयकिरीटीनामभो औरबिभत्सुहिजानि॥ सब्यसाचीअरुधनंजय येदशनामबखानि ५२ चौपाई॥ भीमसेनसबकीचकमारे। लखिअपराधीतेसंहारे॥ मास्योमल्लद्विरदगहिलायो। तेरेग्रहहमबहुसुखपायो ५३ तेरीआयबिपतिहमटारी। बरसादिवसकीअवधिनिवारी॥ द्वादशबरसैंबनमेंरहे। तुमछायामेंअतिसुखलहे ५४ (उत्तरउवाच) हलकीभारीजोहमकही। समरथआपुनसोसबही॥ जोकछुहमतेभोअपराधु। सोसबक्षमियोआपुनसाधु ५५॥ दोहा॥ बीरधनंजयक्रोधकरि चल्योसबलरथहांकि॥ अतिबलपरेतुरंगतब श्रमितरहेतहँथाकि ५६ तेजदयोगन्धर्वतब फिरिबलभरेतुरंग॥ कहीद्रोणगुरुपार्थसोंक्योंनकरैरणरंग ५७ (द्रोणउवाच) सवैया॥ आयोधनुर्द्धरधीरबलीसुकहौरणसन्मुखकोअबरैहै। युद्धजुस्योनहिंनेकहुसोयम

खाइगयोमुखत्यादलखैहै॥ याहीतेशोचबढ़्योउरअन्तर कोकहिधौंबरबाणनिसैहै। कोटिउपायकरोतुमपारथ जीत्योनजैहैनजैहैनजैहै५८॥ सोरठा॥ बीरालयोकलिङ्ग जीतनपारथबीरको॥ कियोकोटिरणरंग अचलमेरुसो धरपर्‍यो ५९॥ दोहा॥ पार्थसहसदशबाणसों हन्यो कोपिकैबीर॥ मूर्च्छितगिरयोकलिङ्गरण धरिनसकतदल धीर ६० जबकलिङ्गमूर्छितगिर्‍यो तबविकर्णरणगाजि॥ कोपिशरासनबाणलै आयोसन्मुखसाजि ६१॥ नाराच छन्द॥ तबैबिकर्णबाणतीस पार्थकेहियेदये। बिशेषबा णबृष्टिसोंसलोपसूरह्वैगये॥ नजानियेनिशानद्योसअं धकारसोंछ्ये। सरोषपांडुपुत्रह्वै कृपाणकोपिकैलये ६२ दोहा॥ तबबिकर्णचालीसशर हनेकोपिबलबण्ड॥ को टिबाणनभछायकै संभ्रमकियोअखण्ड ६३ तबबिकर्ण साहससहित भूमिगिर्‍योमुरझाय॥ निरखिकरणबरबी रतब लीनोधनुषचढ़ाय ६४ रणअर्जुनकेनेकहू सहिन सक्योसोबान॥ रणमंडलतजिसोभज्यो रविसुततेजनि धान ६५॥ चौपाई॥ देखेकरणमहाबलहारे। दुश्शा सनभगदन्तसम्हारे॥ दुर्योधनशतबन्धवधाये। चहुँदि शिघेरिपार्थकोआये ६६॥ सुन्दरीछन्द॥ नीरदघेरि रहेगिरिकोजनु। यौंचहुँओरनितेभटअर्जुन॥ कोपित बीरघनेशरडारत। इकलैलैगिरिकेगनमारत ६७ लैक रबाणनिपार्थउठ्योतब। मारिभगायदयेबलकैसब॥ भागतशूरनहींफिरहेरत। तेरणभूमिघिरेन्दहिंघेरत ६८॥ सवैया॥ घोरघनेघनसेघुमड़े उमड़ेदलदीरघदीसनला गे। चामरसेधुरवाधरधार ध्वजाचलदामिनिकीद्युति

जागे॥ बुन्दनिसेबर्षैंशरजाल सुबीरसबैरसबीरसोंपागे। पौनउड़ायदयेपविज्यों महरायकैनीरदसेभटभागे ६९ अक्षयतूणतेएककढ़ेशर देखतहीलखियेकरऐसो। आवतहीमृगयूथनिऊपर कोपिउठ्योसुतकेहरिकैसो॥ सेहीकरेभटबेधिसबै तिनऔरकियोबरबिक्रमऐसो। काटिदयेध्वजबैरखचौंर बिछाइदयोकदलीबनजैसो ७० भुजंगप्रयातछंद॥ जितेपार्थकेक्रोधसोंबाणछूटे। तितेसैनकेजूहकेशीशटूटे॥ गयेभागिकैएकपीछेनचाहैं। कटैंएकतेजानुजंघानबाहैं ७१ महाक्रोधकैकैधनुर्बाणसाँधै। सशोकेकितेबीरकेयूथबाँधै॥ छुट्योमोहिनीबाणसोंसर्बमोहै। कहांलौंबखानोनमोहैसुकोहै ७२॥ चौपाई॥मोहिरह्योदलसंभ्रमछाइ। एकनमोहेभीषमराइ॥ उत्तरपठयोतबैप्रचारि। पटभूषणसबलाउउतारि ७३॥ गीतिकाछन्द॥ शीशभूषणसेनकेनृपआदिदैसबकेहरे। आनिकैतिहिबारउत्तरपार्थकेआगेधरे॥ जागिकैकुरुराजलज्जित बाणधनुकरगहिलियो। धायभीषमबरजिराख्योप्रकटतासोंयोंकियो ७४ एकपार्थअनेकजानो युद्धजीतनहींसको। लाजह्वैहैबीरभागत चित्तमेंयहनातको॥ बिकलह्वैबिलखातबिथक्यो कछूनहिंमुखतेकहै। ब्यालज्यों लैश्वासदीरघ बचनघनसेउरसहै ७५॥ दोहा॥ भीषमआयसुमानिकै दललैचल्योअवास॥ धावनधाइगयोतबै नृपबिराटकेपास ७६ (दूतउवाच) जीतीउत्तरअरिचमूकौरवगयेपराइ॥ सुतसपूतकीनीबिजय भागतिहारेराइ ७७॥ चौपाई॥ भूपतिखेलतपांसेसारि। संगलियेजैऋषिसुखकारि॥ हरष्योसुतकीकीरतिगावै। सब

जनमनआनन्दबढ़ावै ७८ (जैऋषिरुवाच) दोहा ॥
विजयबृहन्नलजिहिकटक सोकतजीत्योजाय ॥ युद्धजुरैं
संग्रामथल यमहूंदेइभगाय ७६ ॥ चौपाई ॥ इतनीसुन
तभूपपरजरयो । रातेदृगकरिबहुरिसभरयो ॥ ततक्षण
तहिंनरनाथबिराट । पांसेजैऋषिहयेलिलाट ८० छूट्यो
रुधिरद्रौपदीधाई । अंजलिमेंतिनलीनोजाई ॥ निरखि
भूपउरचिंतामानी । क्योंनकहैयहभेदसुजानी ८१ ॥
(सुजानीउवाच) भूतलरुधिरपरेजोएह । द्वादशबर्षन
बर्षैमेह ॥ योंकहिकैभूपतिसमभायो । भीमसेनकेउरदु
खआयो ८२ ॥ दोहा ॥ क्रोधभयोलखिभीमउर धर्मपु
त्रदैसैन ॥ बरज्योकेहरिक्षुधितज्यों युक्तकछूयहसैन ८३
दोधकछंद ॥ उत्तरगृहतबहींचलिआयो । भूपतिकोयहबै
नसुनायो ॥ आजुबृहन्नलहीदलजीत्यो । कौरवकोबहु
धाबलरीत्यो ८४ शूरभगाइदयेसबरेयों । पौनबिड़ा
रतमेघघनेज्यों ॥ मौनहिंभूपतिधामसिधायो । उत्तर
भीतरबोलिपठायो ८५ युद्धकथासबरीसुनिलीनी । सा
रथिकीशरजालप्रबीनी ॥ अर्जुनहैजिहिकौरवमारे । यों
सइतेइहिठामनिवारे ८६ ॥ दोहा ॥ धर्मपुत्रनरनाहसों
अर्जुनबोल्योबैन ॥ जानेहमसबकौरवन अबकछुचिन्ता
हैन ८७ तेरहबर्षैंद्योसदशबीतिगयेइहिठाम ॥ अबबै
ठोशिरछत्रधरि गुप्तकरौंकतनाम ८८ ॥ सवैया ॥ पाइ
कैत्रासअवासतजै बनबासजेदुःखनसाधनासाधी । भू
खनप्यासउदासमहागति योगकेयोगिनिकीअवराधी ॥
नेकहुशोचसकोचकरयोनहिं कानिसबैकुरुनन्दनबाधी ।
आयसुदीजिये कोपिमहीपति लेहिं भुजाबलसों भुव

आधी ८९ ॥ दोहा ॥ प्रातहोतशिरछत्रधरि धर्मपुत्रसु
खपाय ॥ दानदयेकविछत्रकहि बिप्रहिबिप्रबुलाइ ९०
बन्धवचारोंजोरिकर ठाढ़ेभयेसुजान ॥ कारणसबहीका
जकै कीजैकाहिसमान ९१ नाहिंनबाहनउपनह्यो उत्तर
सहितबिराट ॥ नृपतियुधिष्ठिरचरणपर राख्योआनि
ललाट ९२ (बिराटउवाच) सोरठा ॥ ढिठयभईजोहो
य सोछमियेकरिकैकृपा ॥ भूपबड़ोजोहोय चूकनमानतज
नकी ९३ ॥ चौपाई ॥ धोखेतुमपैसेवकराई । सोस
बचूककहीनाहिंजाई ॥ ओछीपूरीमननहिंधरिये । ईशअ
नुग्रहहमपरकरिये ९४ (युधिष्ठिरउवाच) दोहा ॥ तुम
सेतुमहिंनदूसरो जगमण्डलमेंआन ॥ बिपतिहमारीस
बहरी राखेपुत्रसमान ९५ ॥ चौपाई ॥ तुमपटुतरको
दीजैआन । सुरनरनाहींअपनेजान ॥ तुमहमकोसब
कीनीभली । तवकीरतिसबभूतलचली ९६ नितनि
तनेहदीसिहैंनये । अबतुमभुजाहमारीभये ॥ जीतिसमर
सुरभीजेआनी । जितनीजितनीजाकीजानी ९७ तेसबजा
कीताकोदीनी । सबकीबिदामहीपतिकीनी ॥ दुर्योधनसं
देशपठायो । भूपयुधिष्ठिरपैचलिआयो ९८ ॥ दोहा ॥
प्रकटेभीतरअवधितुम फेरिकरौबनबास ॥ मितिसोंपूर
णकीजिये तबतुमकरौप्रकास ९९ कहिसबबिधिमलमा
सकी समझायोसोदूत ॥ समदिशहीबढ्योतहां ज्योंसुर
पुरपुरहूत १०० ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्ता
वल्यांकबिछत्रसिंहविरचितायां अर्जुनविजयवर्णनोनाम
चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

दोहा ॥ उत्तरसोंकीनोमतो नृपबिराटतिहिबार ॥ दु

हितादीजैअर्जुनहि करिबिवाहशुभचार ॥ १ ॥ दोधकछं
द ॥ अर्जुनताकोनृत्यसिखायो । द्योसनिशागुणतासुप
ठायो ॥ ताकहँसोदुहिताअबदीजे । जियमेंऔरबिचारन
कीजै २ योंकहिकैतिनदूतपठायो । अर्जुनकोयहबैनसु
नायो ॥ तोहिंसुतानृपअपनीदीनी । हेतुबिवाहसबैबिधि
कीनी ३ (अर्जुनउवाच) मैंदुहितासमजानिपठाई ।
लाजतुम्हैंनहिंभाषतआई ॥ मोसुतकोदुहिताअबदीजै ।
आनँदसोंसबकारजकीजै ४ भूपतियोंसुनिकैसुखपायो ।
बूझिमुहूरतमंगलगायो ॥ गावतआनँदसोंनरनारी । भूप
युधिष्ठिरकोसुखभारी ५ ॥ दोहा ॥ दूतद्वारकानगरको
पठयोबहुसुखपाय ॥ बारनलागीबाटमें कहीकृष्णसोंजा
य ६ (दूतउवाच) दण्डकछन्द ॥ दीननकेनेहसोंनडो
लतहोगहेगहे द्रौपदीकीलाजबहेऐसीकौनबाहतो । ता
तमातपासप्रहलादह्वैनिरासरहे जोनहोतीतेरीआसत्रा
सकैसेसहतो ॥ ओकछांड़िआपनोसुलोककियोलोकलो
क कौनभांतिथिरथोकध्रुवलोकलहतो । त्रिभुवनरायजो
पैहोतेनसहायआपु कैसेकैधौंमेरोकाजओरलौंनिबाहतो
७ ॥ दोहा ॥ करिआयेहौकरतहौ करियोसदासहाइ ॥ स
हितमातुअभिमन्युलै आपुपहूँच्योआइ ८ चलेकृष्णभ
गिनीसहित लैअभिमन्युहिसाथ ॥ चलेतुरतसुखपाइकै
धर्मसुवननरनाथ ९ मिलिकैशारँगपाणिको लैआये नि
जगेह ॥ अस्तुतिबन्दनयुतकरी मनबचक्रमकरिनेह १०
(युधिष्ठिरउवाच) छन्द ॥ श्रीयदुनन्दनमुनिजनबन्दन ।
कल्मषहरसबदुष्टनिकन्दन ॥ जगतारणबकबदनबिदा
रण । दुखदारणगजराजउधारण ११ जगपावनसन्तन

मनभावन । ब्रजछावनगिरिवरनखलावन ॥ जनमनरं
जनभवभयभंजन । दनुजनिमर्दनभवधनुगंजन १२
कंसबिनाशनप्रभुगरुड़ासन । यदुबंशीअवतंसप्रकाशन ॥
असुरनिवारणमुनिजनपारण । कुंजबिहारणगणिकातार
ण १३ जगधरनगधरपीताम्बरधर । हरिदामोदरहलधर
सोदर ॥ सिंधुसुतावरश्रीराधाबर । नरकनिहरबररदन
धरणिधर १४ जनकसुताभूषणभुवभूषण । सुरारिपुदूष
णतलतलपूषण ॥ भक्तनहितकारीहरिनिशिचारी । भक्ति
तिहारीसबभयहारी १५ ॥ दोहा ॥ करिअस्तुतिश्रीकृष्ण
की भूपतिपुनिशिरनाइ ॥ नगरकंपिलाद्रुपदगृह दीनो
दूतपठाइ १६ ॥ चौपाई ॥ सुनतसँदेशोफूल्योहियो ।
भूपतिद्रुपदपयानोकियो ॥ गजरथबाहनतुरीतुषार । स
बदलयुतसाहनभंडार १७ पंचालीसुतपांचौसाथ । पहुँ
चेपुरबिराटनरनाथ ॥ बिदुरगेहतेकुंतीआई । मिलीसुत
नअतिआनँदछाई १८ द्रुपदसुताताकेपदबन्दे । सबबिधि
कैसबजनआनन्दे ॥ बनतेचलीघरूकाआयो मायावी
मायामगछायो १९ नगरराजगिरितैंचलिआयो । दुरा
संधभूपतिमनभायो ॥ धर्मपुत्रसुरराजसमाना । बिबुध
अनुजसबबुद्धिनिधाना २० ॥ दोहा ॥ शुभघटिकाशुभ
लग्नगनि शुभबासरहिसुधाइ ॥ रच्योब्याहअभिमन्यु
कोमंगलचारकराइ २१ दोऊकुलकीरीतिज्यों करिबिवा
हसुखदानि । बाजीगजरथछत्रकहि दीनोआनँदमानि
२२ ॥ सुंदरीछन्द ॥ भाटभलेबिरदावलिगावत । सिंधुर
बाजिनकेगणपावत नृत्यगुणीजननर्तनसाजत । ताल
पखावजसाजतबाजत २३ कोबरणैसबआनँदसंयुत ।

बासरहूनिशिकौतुकअद्‌भुत ॥ भांवरिपारतबेदनिउच्चरि द्वौकुलकीऋषिरीतितबैकरि २४ ॥ दोहा ॥ दैसोवोसम दीसुता हरषेभूपबिराट ॥ धर्मपुत्रसुखपाइकै लसतअ नंदितपाट २५ (युधिष्ठिरउवाच) सोरठा ॥ सुनिअ र्जुनगुणग्राम बेगिबुलावोमयसुतहि ॥ धवलसँवारहुधा म खचिखचिरचिरचिजालमणि २६ ॥ तोटकछन्द ॥ त बपार्थमयासुरबोलिलयो । बहुभांतिनकेसुखसद्मठयो ॥ प्रतिधामनिचित्रबिचित्रकरयो । रँगरंगनिहीगुरुवानढ रयो ॥ अतिदीसतसुंदरश्वेतअटा । इकनीलबनेजनुमेघ घटा २७ उपमाकबिकौनबखानिकहैं । निरखैंनरकौतुकम लिरहैं २८ इकअद्भुतबाहिरशोभसने । नृपकेरहिबेकहँ धामबने ॥ तहँबैठतभूपतिनित्यसभा । अमरावतिमोह तिदेखिप्रभा २९ पुरअंतरधामसुशोभगहैं । रनिवासज हांसबबामरहैं ॥ हयहींसतवारनगाजतहैं । निशिबासर दुंदुभिबाजतहैं ३० भुवभूपसभासुखसाजतहैं ॥ द्विजबृं दतहांबहुराजतहैं ॥ बहुभीरतहांदरबाररहैं । कहिकोक बिताहिबखानिकहैं ३१ ॥ इति श्रीमहाभरतपुराणेविज मुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां अभिमन्युबिवाह वर्णनोनामपञ्चविंसोऽध्यायः ॥ २५ ॥

(भुजंगप्रयातछन्द) सोमबंशधर्मपुत्रसक्रसोसभा लसै । चारिबंधुदेवसेबिलोकिदुःखसोनसै ॥ अंजलीनजो रिजोरिकृष्णपैबिनयकरी । शोधिकैजहांतहांबिपत्तिजी वकीहरी १ अर्द्धदेशपाइयेविचारआपसोकरौ ज्योंहरे अशेषशोकत्योंकलेशयेहरौ ॥ देशतेनिकारिअंधपुत्रका निनाकरी । धामग्रामछीनिछीनिसंपदासबैहरी २ ॥

दो० ॥ करिआयेहौंकरतहौं सेवकसदासहाय॥करीबंदना कृष्णकी धर्मसुवनभुवराय ३ (युधिष्ठिरउवाच) चौपाई ॥ छन्द ॥ कच्छपबपुधरिसागरथाहन । मत्स्यरूपशंखा सुरदाहन ॥ बन्दतमुनिजनसनकसनन्दन । जैजैजै तुमजैजगबन्दन ॥ ४ ॥ सूकररूपरदनधरनीधर । बरहि रण्याचपतितप्राणनिहर ॥ भूतलखलदलदुष्टनिकन्द न । जैजैजैतुमजैजगबन्दन ५ नरहरिबपुधरिभक्तसँवार ण । हिरणाकुशनखउदरबिदारण ॥ कोटिककष्टहरणज गफन्दन । जैजैजैतुमजैजगबन्दन ॥६॥ छलबलबलिपा तालपठावन । बावनबपुधरिभूतलआवन ॥ काटतसब मायादुखदन्दन । जैजैजैतुमजैजगबन्दन ७ परशुपाणि क्षत्रियमदनाशन । रघुकुलकमलदिनेशप्रकाशन ॥ राम चन्द्रदशरथनृपनन्दन । जैजैजैतुमजैजगबन्दन ॥८॥ कं सकठोरअसुरभयकारी । केशीमर्दनअजिरबिहारी ॥ पीतबसनतनचर्च्चितचन्दन । जैजैजैतुमजैजगबन्दन ६ बोधस्वरूपपुहुमिपरधरिहौ । कलकीह्वैदुष्टनिसंहारिहौ ॥ बरणतबिदितछत्रबहुबन्दन । जैजैजैतुमजैजगबन्दन १० ॥ दोहा ॥ बिनयमानिकैकरिकृपा दुर्योधनपैजाउ ॥ समभ्कावोबहुबिधिनकै बचैगोतकोघाउ ११ ॥ चौपाई ॥ बिहँसिकृष्णतबहींउठिधाये । नगरहस्तिनापुरचलिआ ये ॥ सुनिकुरुनन्दनअनुजपठाये । सभामध्यश्रीकृष्ण हिलाये ॥१२॥ (श्रीकृष्णउवाच) धर्मपुत्रतुमपासपठा ये । गोतबिरोधहिमेटनआये ॥ भूपतिजगमेंयहयश लीजै । आधोदेशबांटिकैदीजै ॥१३॥ अपनेकुलहिकलङ्क नलावो । कलहगोतकोभूपबचावो ॥ दुर्योधनबोल्योअ

कुलाई। कैसेसकोंकलेशबचाई ॥ १४ ॥ देशबांटिजोउन
कोदेहौं । योगीह्वैकपालकरलेहौं ॥ भूमिबांटिकतमोपै
पावैं। जोवेनभभूतलफिरिआवैं १५ (श्रीकृष्णउवाच)
औरभूमिभूपतिजिनिदेहु। पंचग्रामदीजैकरिनेहु ॥ ति
लपथनागइन्द्रपथलीजै। अरुसुनिपथ रानीपथदीजै १६
(दुर्योधनउवाच) ॥ दोहा ॥ सूचिअग्रजितनीकढ़ै सोक
बहूंनहिंदेहुँ॥ पीछेभुववेईलहैं प्रथमयुद्धकरिलेहुँ ॥१७॥
चौपाई ॥ तुमहिंकहतयहकैसेआवै । जीवतमोहिंको
धरनीपावै ॥ सुनिमुनिबचनजरतहैगात । जियतसुनै
यहअद्भुतबात १८ (श्रीकृष्णउवाच) ॥ सवैया ॥ लो
कमेंशोकसमूहबिनै अपलोकमहाअपनेशिरलैहौ । के
लिसकेलिमहादुखमेंलिहौ यौंयशपेलिकैअपयशपैहौ ॥
उपायकैब्याधिनलीजियेराय सुआयपरेतोहियेपछितैहौ।
सूझिपरीयहकृष्णकही तबआपुमहीसबदैहौजुदेहौ १९
कोपिकैलेइगदाकरभीम सुपार्थधनुर्द्धरबाणनिबाहै । बं
धुसमेततहांसहदेव सुसाइरसंग्रमकोअवगाहै ॥ बैठिध्व
जाहनुमन्तबलीरणगाजिउठै यहतूमनचाहै। ऐसोइभाव
तुहैजियतोहिं सुजानैकोतेरीकहामनसाहै ॥२०॥ दोहा॥
कृष्णउठेयेबचनकहि तिनकोयहसमझाय ॥ भावीसो
कैसेमिटै कोकहिसकैबचाय ॥ २१ ॥ नगरहस्तिनापुरतबै
कुन्तीपहुँचीआय ॥ समाचारश्रीकृष्णजू कहेसकलस
मझाय ॥ २२ ॥ दुर्योधनमतिपरिहरी देतनपांचौग्राम ॥
देबेकोकहिकाचली श्रवणसुनतनाहिंनाम ॥२३॥ एक
बातकोभयभयो कर्णहिंबाढ्योगर्ब ॥ मारिलेहुँयहकह
तहै जीतौंभारतसर्ब ॥२४॥ जाहुआपतुमकर्णपैलाउआ

पनेगेह ॥ कुशलहोइतुमसुतनको बाढ़ै अद्भुतनेह २५
कर्णपासकुन्तीगई उनउठिबन्देपाय । करिआदरआसन
दयो बैठेसबसुखपाय २६ (कुंत्युवाच) चौपाई ॥ जे
ठोसुततूतेरोराज । लेहुसकलगृहचलियेआज ॥ हँस्यो
करणमातामुखचाहि । यहसबबातअबूझतआहि २७
तबतुमराजहमारोटारयो । घालिमंजूषाजलमेंडारयो ॥
तनपोष्योदुर्योधनछांह । अबकतडारतनरकनमांह २८
(कुंत्युवाच) जोनचलोसुतकरिकेनेहु । एकबाततोमांगे
देहु ॥ मोपुत्रनकोकरिनप्रहार । यहसबकरौदयाकोसार
२९ सुनिसुतमेरोबचनबिलास । पांचबाणजोतेरेपास ॥
जननीकोकरिकैहितदेहु । यामेंजगतबिदितयशलेहु ३०
(कर्णउबाच) चारिपुत्रतुवहितपरिहरौं । एकपार्थसों
तोरणकरौं ॥ औरनिकोनहिंघालोंघाउ । अबमाताअप
नेगृहजाउ ३१ दोहा ॥ दीनेपांचौबाणकर कुन्तीकोतिहि
काल ॥ बिदाकरीपगबन्दिकै तबैकर्णभुवपाल ३२ ॥
चौपाई ॥ यहसुनिकुन्तीआईतहां । त्रिभुवननाथकृष्णहैं
जहां ॥ कहीकर्ण सोबरणिसुनाई । यहिबिधिवैसबनि
शासिराई ३३ ॥ दोहा ॥ प्रातहोतश्रीकृष्णजी दुर्योधन
केपास ॥ गयेफेरिहितसंधिके छत्रसुबुद्धिअवास ३४ ॥
(श्रीकृष्णउबाच) कह्योहमारोकीजिये पंचग्रामकिनदेहु ॥
बन्धुएकसौपांचसौ निशिदिनबढ़ैसनेहु ॥ ३५ ॥
(दुर्योधनउवाच) नितउठिउसलेसालहरिकतहिंसलावत
आनि ॥ करोंअपांडवभूमिसब करोंनकुलकीकानि ३६ ॥
(श्रीकृष्णउवाच) घनाक्षरी ॥ कोपिकोपिभीमभुजारोपि
रोपिरणमांझ ओपिओपिमुखगदालीनेगलगाजिहै ।

रोषहियेश्रानिश्रानिक्रोधधनुतानितानि लैकैपार्थपानि
धनुबाणसूधोसाजिहै ॥ अश्विनीकुमारकेकुमारिनकीहांक
सुने धीरनधरोगेबलपौरुषसोभाजिहै । गर्ब्बहीश्ररू
ढ़मन्त्रमूढ़तूनजानैकछू चेतिहैतूमूढ़जबश्रायमूड़बाजिहै
३७ ॥ दोहा ॥ यहसुनिशकुनिसरोषह्वै कहीनृपतिसों
जाय ॥ कहाकानियाकीकरो बांधिलेहुसुखपाय ३८ सब
मिलिकैचाहतकियो बनैनहीं कछुबात ॥ बिलखेभीषम
बिदुरतब बिह्वलह्वैगयोगात ३९ ॥ चौपाई ॥ भीषम
बिदुरबिलोकतजानि । बदनपसास्योशारँगपानि ॥
मुखभीतरदेख्योब्रह्मण्ड ॥ रुंश्रमपायोचित्तश्रखण्ड४०
छप्पै ॥ देख्योगगनसुसूर्य्य चन्द्रतारागणदेखे ।
देखीपुहुमिसुनीर भूरिभूधरसुबिशेखे ॥ देखेसरितास
लिल सिन्धुसरवरजलसंयुत । देखेतरुवरबिपिनसघ
नद्रुमउपबनश्रद्भुत ॥ मृगराजमत्तमातंगलखि श्रव
लोकेऋषिराजगन ॥ भ्रमभूलिबिदुरभीषमरहे शि
थिलबिकलह्वैसकलतन ४१ (भीष्मउवाच) चौपाई ॥
खलदुर्योधनमर्मनजानत ॥ सिखात्रिभुवनपतिकीनहिं
मानत ॥ भूल्योमूरखनृपतागर्ब । कुलकेकर्मतजेतिन
सर्ब ४२ ह्वैहैसोजुरचीकरतार। भीषमकहतबारहीबार॥
चलेकृष्णनृपकोसमभ्काइ । पहुँचेधर्मपुत्रपैजाइ ॥
४३ (श्रीकृष्णउवाच) सूच्चममहितुमकोनहिंदेत । उ
द्यमलीनोभारतहेत ॥ बिनायुद्धवहकछूनदैहै ॥ जोरणजी
तैसोभुवलेहै ४४ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्ता
वल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां श्रीकृष्णदुर्योधनसंवादो
नामषड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

अथ उद्योगपर्व्व कथनम्॥

सुन्दरीछन्द॥ बैठिसभासुतधर्ममहीपति। बोलिलये तहँकृष्णमहामति॥ बंधवचारिबिराजततायल। कौन बखानिकहैंतिनकेबल १ (राजोवाच) चौपाई॥ युद्ध बचैहरिसोकछुकीजै। भूतलमेंबहुधायशलीजै॥ मोहिं महाउरमेंडरुआवत। बिग्रहहौंनिशिद्योसबचावत २॥ दोहा॥ बनिआई सबकेमतै लीनेद्रुपदबुलाइ॥ संधि काजकुरुराजपै दीनेतुरतपठाइ ३ गयेद्रुपदनरनाहतब भूपतिकौरवपास॥ आदरकरिआसनदयो बोल्यो बचन प्रकास ४ (दुर्य्योधनउवाच) गीतिकाछन्द॥ कौन हेतमहीपआये सोकहौसमझायकै। पावनभयेतुम दरशते बहुसुःखदीनोआयकै॥ द्रुपदभूपतियोंकह्यो जगमें महायशलीजिये। नृपयुधिष्ठिरकोधरा नृपबांटिकै कछु दीजिये ५ नेहकरिकुलकलहनाशो लेहु तिनहिंबुलाइ कै। सबआपनीमर्य्यादसों रहिहैंसदासुखपाइकै॥ लगीशरसीबातयह सोचित्तनहिं कछुलावही। कहतबिनु रणकौनमोपै भूमिरञ्चकपावही ६ कोयुधिष्ठिर भीमकोहै बचनकोटिनपावही। तौनछांड़ौंबरुणसुरपति आपआय बचावही॥ द्रुपदसुनिकैशीशढोर्‌यो रचीसोईह्वैरहै। सोबचाईक्योंबचै भुकिक्रोधसोंतबयोंकहै ७॥ सवैया॥ लोकमेंआपकलूअपलोक नलीजै नलीजै न लीजिये जू। चाहतभूमियुधिष्ठिरसूक्षम दीजिये दीजिये दीजियेजू॥ योंकरिराजनिकंटकआपन कीजिये कीजिये कीजियेजू। छत्रमहाहितकैतुमबैन पतीजै पतीजै पतीजियेजू ८ दीजिये पञ्चउन्हेंअबग्राम नहींनृपकीनृपताघटि

जैहै। बैठिरहैंतिनमेंअबजाययुधिष्ठिरआपमहासुखपैहै॥
जानिअजानप्रमानकेमान किभूमिअबैअपनेबललैहै।
बाणकिधारमेंस्योपरवारहि तोहिंबहायधनंजयदैहै ६॥
दोहा॥ फिरिआयेतबद्रुपदनृप नृपतियुधिष्ठिरपास॥ दु
र्योधनकीकुमतिके कीनेबचनप्रकास १० (द्रुपदउवा
च) बुधिकैके बहुचातुरी अरुकैकैउनमान॥ समझायो
समझैनहीं करिदेखैसबश्वान ११ हरि बिराटपठयेतहीं
नृपतितीसरीबार॥ समझाओदुर्योधनै बाचैकलहअपा
र १२॥ चौपाई॥ नृपबिराटबहुबिधिकैकही। सूत्तम
सीकछुदीजैमही॥ वैसन्तुष्टबैठितहँरहैं। फेरिकछूनहिं
तुमसोंकहैं १३ (दुर्योधनउवाच) दोहा॥ ह्वैह्वैकेज
गबावरो मांगतधरणीआय॥ हनौं पाण्डुसुतक्षणएकमें
कोअबसकैबचाय १४ हमसोंराखौहेततुम मतिभाषौबै
बैन॥ जौलौंजियमेंजीवधर कहौंनतिलभरिदैन १५ (बि
राटउवाच) सवैया॥ आपुबरावहुगोतकोघाउउतैउनि
बारहीबारबराई। देनकहौनहिंचारिकग्राम कहामतिधौं
तुमकोबनिआई॥ होनीजोहोइसोहोइरहै नमिटैयहभूप
तिमैंमतिपाई। नीकीयोऔरबुरीबुधिकोसबकोकरताहर
ताकरताई १६॥ चौपाई॥ इनकहिबेमेंकछूनराखी। जो
मुखआईसोसबभाखी॥ कहाकहेकाहूकेहोई। होनीमेंटि
सकैनहिंकोई १७ आयेनृपबिराटउठिधाम। कियेकृष्ण
को अकितप्रणाम॥ कहेनमानतखलकछुबात। सुनिसुनि
बैनजरतहैंगात १८ यहसुनिकृष्णबिदातबभयो। चलिकै
नगरद्वारकागयो॥ नृपतियुधिष्ठिरमनदुचिताई। बाचत
सभीनहींलराई १९॥ दोहा॥ उतदुर्योधनअनजयतकी

नाचित्तविचार ॥ भीषमअरुआयेबिदुरबैठ्यो सबपरिवा
र २० (दुर्योधनउवाच) भुजंगप्रयातछन्द ॥ बड़ोशोच
तौआपनेचित्तकीजै। मतोह्वोयपूरोपितामोहिंदीजै ॥ सदा
पांडुकेपुत्रहैंशालमेरे। तिन्हैंनाशकेयत्नकीनेघनेरे २१ क
हौमंत्रजोजासुकेचित्तआवै। हितूहोयसोहित्तहीकीबता
वै ॥ गईतेरहौंवर्षयोंसुःखमाहीं। रहैशालजाको सुजीवै
बृथाहीं २२ (बिदुरउवाच) करोमंत्रसोईतुम्हैंचित्तआवै।
हमारोकह्योक्योंहियेमाहिंभावै ॥ तजोबिग्रहैसंग्रहौबात
ऐसी। सबैभूतलीमेंकहीवेदजैसी २३ (भीष्मउवाच)
सवैया ॥ एकसुनैनहिंभाषीअनेक सुटेकसबैहैकुटेककी
टेकी। ताकोभलोसभयोकबहूं जिहिपैजतजीनहिं आपुक
हेकी ॥ योंसमझौअपनेमनमेंहठभूंठकीनाहिंनबानिभले
की। छांड़िदईकुलकीकरनीयहरीतिलईहठिकैअविवेकी
२४ ॥ चौपाई ॥ भुवपैरहतनदीसैकोई। अमरएकयश
अपयशहोई ॥ हिरणाकुशअरुरावणगयो। यहधननहिं
काहूकोभयो २५ कतअभिलाषतासुकोकीजै। लोकबि
लोकअलोकनलीजै ॥ हानिहोइजीतेअरुहारे। यमरहि
हैंनितबदनपसारे २६ सुनतबचननहिंभूपहिभायो। तब
तिननियरोशकुनिबुलायो ॥ सोईकरो जुमंत्रबिचारो।
मोउरभावतबचनतिहारो २७ (शकुनिउवाच)मेरोमतौम
हीपतिकीजै। नगरबिराटवेगिलैलीजै ॥ जौलौंउनकोन
हींसहाउ। लैसबसेनातिहिथलजाउ २८ पांचौबंधुनमारौ
आज। सीझिजायतौसगरौकाज ॥ उपजतहीजोकाटि
यव्याधि। फिरिकितमारियऔषधसाधि २९ ॥ दोहा ॥
अंकुरनिरखिकरेछको कपितोरेतिहिकाल ॥ त्योंअपनेअ

रिमेटिये कुटुँबसहितभुवपाल ३० ॥ चौपाई ॥ सुनिमत
मानिभूपदलसाजा । सकलबुलायेभुवकेराजा ॥ सिमटे
दलपुहुमीनसमाय । छारभयेसबगिरिवरजाय ३१ आ
येसोमदत्तभुवराय । अरुभगदत्तसबलदललाय ॥
तिनकेदलकीसंख्यानाहीं । रथहयहाथीगनेनजाहीं ३२
सेनाशल्यक्षोहिणीतीन । कोरथबाजीगनैकरीन ॥
कर्णमहारथवन्तपलान्यो । अगणितदलकलिंगतहँआ
न्यो ३३ कोपिचढ्योरणआपसुशर्मा । कौनगनैरणअ
द्भुतकर्मा ॥ दुर्योधनद्वारावतिआये । आवतश्रीहरिदर्श
नपाये ३४ (दुर्योधनउवाच) करौसहायहमारोआप ।
तौजगमेंअतिहोयप्रताप ॥ दलसजिचलौहमारेसाथ ।
बारबारबिनवैंनरनाथ ३५ (श्रीकृष्णउवाच) दोहा ॥
मैंतोसबआयुधतजे अस्त्रगहौंनहिंहाथ ॥ कृतवर्मीया
दवदयो दलयुतताकेसाथ ३६ यादवदलसजिकैचल्यो
सुभटचमूचतुरंग ॥ अस्त्रशस्त्रतनुत्राणकसि कसेचर्म्म
सबअंग ३७ तीनक्षोहिणीशकुनिदल नीरदघोरसमा
न ॥ चपलाचंचलचलध्वजा धनुषहिंधनुषबखान ३८
दलएकादशक्षोहिणी सिमिटिचल्योकुरुखेत ॥ महार
थीअरुअतिरथी बलकतहैंरणहेत ३९ ॥ सवैया ॥ को
पिचल्योदुर्योधनकोदल कोपिचलेसबशूरबलीहैं । कुंज
रपुंजनिपायकजाल सुभारपरैभुवभूरिहलीहैं ॥ छायरह्यो
तमलोपिदिवाकर लोपिगईसबव्योमथलीहैं । बाजिन
कीखुरतारनिसोंउठिकैधरधूरिअकाशचलीहैं ४० ॥ सुन्द
रीछन्द ॥ कुंजरपुंजनिपुंजनिसोहत । लालध्वजातिनपैम
नमोहत ॥ दीरघशब्दमहाधुनिगाजत । ज्योंतड़ितायुत

बारिदराजत ॥ ४१ ॥ हैयहचंचलकैखगखंजन । पौनकुरं
गनकीगतिगंजन ॥ शङ्खघनेबहुदुन्दुभिबाजत । बन्दिस
बैंबिरदावलिसाजत ॥४२॥ मधुभारछन्द ॥ सुपर्व्वतचूरि ।
भयेसबधूरि ॥ गयेमिटिनीर । हुतेजुगँभीर ॥४३॥ गयेकु
रुखेत । सजेरणहेत ॥ परयोदलजाय । धरानसमाय
॥४४॥ दोहा ॥ इतदलसाज्योसबलअति नृपतियुधिष्ठिरना
ह ॥ चढ्योबीररससबनिको सबहीकेउत्साह ॥४५॥ साज्यो
बहुरिबिराटदलरथीअतिरथीशूर ॥ चलतद्विरदबाजी
चपलफूटिहोतगिरिचूर ॥४६॥ साज्योद्रुपदबिराटदल दु
रासंधसुखपाइ ॥ चलेपाण्डुसुतसाजिकै गर्जिनिशानब
जाइ ॥४७॥ अर्जुनसमदेद्वारका त्रिभुवनपतिकेहेत ॥ हम
सोंअरुकुलकौरवनि युद्धहोयकुरुखेत ४८ (अर्जुनउवा
च) चौपाई ॥ हेरतबाटयुधिष्ठिरराइ । चलियेसाईंकरो
सहाइ ॥ जैसेकाजसदाकरिआये । सोनकछूअबजातग
नाये ४९ (श्रीकृष्णउवाच) दुर्योधनबहुदललैगयो ।
तजेअस्त्रयहमैंपनुलयो ॥ जोजियमेंयहभावैतोहिं ।
तौअर्जुनलैचलियेमोहिं ५० (अर्जुनउवाच) दलदुर्यो
धनकोसबदीजै । हमबिनवैंसोपूरणकीजै ॥ आपचलौ
नितदर्शनपावैं । कल्मषऔरकलेशनशावैं ॥५१॥ दोहा ॥
आपहमारेपगुधरो दलकोऊलैजाहु ॥ पार्थसाथश्रीहरि
चले जहांहुतेनरनाहु ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ आवतधर्म
पुत्रसुखपाये । हरषिहरषिहरिकेगुणगाये ॥ सिमिट्यो
सेनच्चोहिणीसात । उद्यतरणकोप्रफुलितगात ॥ ५३ ॥
॥ दोहा ॥ उमड्योघुमड्योजलदसो कीनोकटकपयान ॥
तड़ितपताकागरजघन गरजनिसिन्धुरजान ॥ सोरठा ॥

चलिआयकुरुखत जितँतितदीसतघोरदल ॥ बलकत भटरणहेत सजेकवचसेनाहतन ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ जुरिअष्टादशअक्षोहिणी दोऊदलइकठौर ॥ महारथीअरुअतिरथी शूरसुभटशिरमौर ॥ ५५ ॥ अथ अक्षौहिणीसंख्या ॥ दोहा ॥ एकद्विरदरथएककहै तीनअश्वअसवार ॥ जमले दशसंख्याकहे पायकपांचविचार ॥५६॥ हाथी १ रथ १ असवार ३ पयादे ५ जमले १० ॥ दोहा ॥ तीनपंक्तिको होयइक सेनामुखतानाम । अपनेअपनेबुद्धिबल समुझिलेयँगुणग्राम ५७ हाथी ३ रथ ३ असवार ९ पयादे १५ जमले ३० इति सेनामुखतासंख्या ॥ तातेतिगुणीगुल्म इकजानिजानिउरलेहु ॥ ताकीसंख्याछत्रकविबुधिबलसबकरिदेहु ५८ हाथी ९ रथ ९ असवार २७ पयादे ४५ इतिगुल्मसंख्या ॥ दोहा ॥ फेरिगुल्मतिगुणीकरो जो कछुसंख्याहोय ॥ छत्रकहौसोबाहिनी कहैजगतसबकोय ५९ हाथी २७ रथ २७ असवार ८१ पयादे १३५ इतिबाहिनीसंख्या ॥ दोहा ॥ कीजैतिगुणीबाहिनी ताही पृतनाजानि ॥ हयहाथीपायकरथी कहिकविछत्रबखानि ६० हाथी ८१ रथ ८१ असवार २४३ पयादे ४०५ इति पृतनासंख्या ॥ तीनोंपृतनाजोरिकै एकचमूतबहोय ॥ अपनेअपनेचित्तमें समुझिलेहुसबकोय ६१ हाथी २४३ रथ २४३ असवार ७२९ पयादे १२१५ इतिचमूसंख्या ॥ दोहा ॥ एकचमूकोजोरिकै त्रिगुणीकरौजोकोइ । छत्रसकलसमझौअबै अनीकिनीसोहोय ६२ हाथी ७२९ रथ ७२९ असवार २१८७ पयादे ३६४५ इति अनीकिनीसंख्या ॥ दोहा ॥ अनीकिनीसेनासकलतिगुणी

कीजैताहि ॥ सोईसंख्याछत्रकविअनीकिनीदशआहि ६३
हाथी २१८७ रथ २१८७ असवार ६५६१ पयादे
१०९३५ इति दशअनीकिनीसंख्या ॥ दोहा ॥ दशअ
नीकिनीदशगुणीसाजतपण्डितजानि ॥ ताहीसोंइकक्षो
हिणीकहिकविछत्रबखानि ॥ ६४ ॥ हाथी २१८७० रथ
२१८७० असवार ६५६१० पयादे १०९३५०
इति अक्षौहिणीसंख्या ॥ दोहा ॥ जुरेअठारहक्षोहि
णी कोकविकहैबखान ॥ छत्रसकलसंख्याकही जानि
लेहुसबजान ॥६५॥ हाथी ३९३६६० रथ ३९३६६०
असवार ११८०९८० पयादे १९६८३०० इति अष्टा
दशक्षोहिणीसंख्या ॥ दोहा ॥ दलएकादशक्षोहिणी कुरु
नन्दननरनाथ ॥ भीषमअरुभगदत्तनृप द्रोणकर्णसब
साथ ६६ हाथी २४०५७० रथ २४०५७० असवार
७२१७१० पयादे १२०२८५० इतिकौरवदलकीसंख्या
क्षोहिणी ॥ ११ ॥ दोहा ॥ सप्तक्षोहिणीपांडुसुत राजत
सेनसमाज ॥ द्रुपदबिराटनरेशतहँ शुभकारीब्रजराज ६७
हाथी १५३०९० रथ १५३०९० असवार ९५५९२७०
पयादे ७६५४५० इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्ता
वल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां राजादुर्योधनयुधिष्ठिर
कुरुक्षेत्रआगमनोनाम सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

दोहा ॥ कार्तिककोसितपक्षकी त्रयोदशीशुभजानि ॥
सन्मुखदलदोऊजुरे फिरितहँकियोमिलानि ॥१॥ सुन्दरी
छन्द ॥ भानुगयोछिपिरैनिभईतब । अपनेठौरबिराजत
हैंसब ॥ घोरघटासमसेनपरीतहँ । बंदिसबैकुलकेकिल
केजहँ ॥२॥ हैचपलाचलसीध्वजसोहति । सोबिदिशानि

दिशामनमोहति ॥ गाजतकुञ्जरज्योंघनगाजत । गोर
मदायनसेघनराजत ॥ ३ ॥ नादसजेसबठामगुणीजन।
बोलतज्योंपिकचातककेगन ॥ घोरघनेघनसोंउमड्योद
ल। द्वादशयोजनलोपिलियोथल ॥ ४ ॥ दोहा ॥ कार्तिक
शुक्लचतुर्दशी प्रातभयोसबजानि ॥ दुहूँ ओरकेसेनतब
ठाढ़ेभयोपलानि॥५॥ बुधिपूरोबिक्रमबली साधुसन्तसु
रज्ञान ॥ सुरसरिसुतदलपतिकियो कुरुनन्दनबलवान ६
अमितपराक्रममेरुसम सरवरकीजैताहि ॥ सेनभारभी
षमलयो समलज्जाउरजाहि ॥ ७ ॥ सुरसरिसुतदलपति
कर्यो सुन्योपांडुसुतकान ॥ बिलखिबदनदुचितेभये रहे
नघटमेंप्रान ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ जबयहभीषमकीसुधिपाई।
जनेजनेकेमनदुचिताई ॥ त्रिभुवनपतिअबरक्षाकरि हैं।
धर्मपुत्रकेसबदुखहरि हैं॥९॥ कृष्णहिपूछिमतोयहलीनो।
धृष्टद्युम्नचमूपतिकीनो ॥ महापराक्रमसंयुतशूरो । रण
मेंजोबलबिक्रमपूरो ॥ १० ॥ दोहा ॥ लयासेनआभार
शिर ह्वैकैप्रफुलितगात ॥ ताकोसाहसकोकहै कहत
नबनईबात ११ जुरिठाढ़ेह्वैदलभये रजछाईअसमान।
भईछपासीद्योसही भयेछपाकरभान ॥ १२ ॥ उतदलपति
भीषमलखे कहतपार्थभटराउ ॥ त्रिभुवनपतियहयुक्ति
नहिं क्योंकरिघालौंघाउ ॥ १३ ॥ नाराचछन्द ॥ बिनयक
रौंसुरारिजू सुमानिचित्तलीजिये। तजेकृपाणगोतघाउ
कौनभांतिकीजिये ॥ बिलोकिकैकुटुम्बबन्धु पुत्रमित्रको
गनै। अलोकहोइलोकलोक युद्धमेंतिन्हैंहनै ॥ १४ ॥
॥ दोधकछन्द ॥ इनभीषमकोटिकदुःखहरे । बहुभांतिन
केप्रतिपालकरे ॥ तिनकोक्यहिभांतिहथ्यारसजौं अप

कीरतिसोंबहुचित्तलजौं १५ यहकाजनहींहमतेसरि है। नहिंसन्मुखबाणधस्योपरिहै ॥ जबअर्ज्जुन ये बहु बैनसजे। अरुआतुरह्वैधनुबाणतजे १६ (श्रीकृष्ण उवाच) कहिक्योंयहकातरबुद्धिभई। शिशुतामनसे अजहूंनगई ॥ अबक्षत्रियधर्मबिचारिहिये। नहिंपाप कछूअबयुद्धकिये १७ ॥ दोहा ॥ समुझायेबहुज्ञानक थि भगवद्गीतागाइ ॥ अमरएकभुवयशरहै कह्योकृ ष्णसमुझाइ १८ ॥ सवैया ॥ तेजधराजलपौनअकाश मिलैकैबिरंचिशरीररच्योहै। क्रोधबिरोधसलोभसकाम सुगर्बसमोहसमूहरच्योहै ॥ एकरहैजगमेंयशऔयश कालबलीपैनकोऊबच्योहै। बंधुकुटुम्बक्षत्रियासुतहेतहि लीनभयोबहुनाचनच्योहै १९ ॥ दोहा ॥ बदनपसार्‍यो कृष्णतब पार्थलख्योअकुलाइ ॥ देख्योसबभारतभयो अद्भुतकह्योनजाइ २० (श्रीकृष्णउवाच) ॥ चौपाई ॥ कतअर्जुनतूसंशयकरै। यहदलसबयाथलसंहरै ॥ यामें सबबचिहैंदशजने। औरसकलतूजूझेगने २१ मैंयह सबभारतकरिराख्यों। यहतोसेमैंयशहितभाख्यों ॥ ते शोकस्योकहाअबहोई। करैकहाताकोअबकोई २२ अ र्जुनकोसुनिसंशयगयो। लयोधनुषहरिआयसुदयो ॥ संभ्रमकेवलकृष्णभगायो। उठ्योबीरतिनकोशिरनायो २३ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकवि छत्रसिंहविरचितायां श्रीकृष्णभगवद्गीताज्ञानउपदेशव र्णनोनामअष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥

अथ भीष्मपर्व्वकथनम्।

दोहा ॥ पाण्डुपुत्रकुरुराजरण कोपउठेदलदोइ ॥ चर्म

बर्मतनत्रानकासि बलकतभटसबकोइ १॥ दंडकछन्द॥ बीररसरसेशूरकवचसनाहकसे कोपिकोपियत्रतत्रपैज युद्धकीलई। चूरिचूरिबननीरसोखिसोखिभूरिभूरि पूरि पूरिब्योमधूरिद्योसहीनिशाभई॥ थरथरकंपिउठेभूतलके थलथलधरधरकूरमकीछातीमेंमहाठई। पायकअपारनि सों मत्तदंतीभारनिसों बाजिखुरतारिनिसों क्षितिछारह्वै गई २ (भीषमउवाच)॥ छप्पै॥ क्षत्रीकुलहिकहाय स कलकुलधर्मनशाऊं। पातकानिदैंनिगम औरहिजदोष निपाऊं॥ गुरुकेबचननिमेटि सर्वतीरथब्रतहारों। गुरु जनशासनभंग लोककीलीकहिटारों॥ बहुलाजहोयनृप शांतनुहिबाणकृपाननिपरिहरों। प्रतिद्योसदीहदुर्घटसु भट सोजोनसहसदशसंहारों ३॥ दोहा॥ शूरसंहारोंसह सदश दिनप्रतिकरिचितचाउ॥ नित्यकरोंजलपानतब इतनोंकरिभरिठाउ ४॥ चामरछन्द॥ ब्रह्मरुद्रइन्द्रजू सहायआयजोकरैं। कोपिकोपियुद्धबाण कोटिकोटिजो धरैं॥ लोकपालजोजुरैं तऊनपैजटारिहौं। आजुतेइतेक शूरनित्यनित्यमारिहौं ५ पार्थसोंजुरेकरालयुद्धभोमहाघ नो। लंकनाथसोंसक्रुद्ध रामचन्द्रहैंमनो। गङ्गपुत्रअस्त्र शस्त्रबाणवृष्टियोंकरै। सारथीरथीसमेत ठामठामसंह रै ६॥ दोहा॥ उत्तरभूम्योप्रथमही करिबहुधासंग्राम॥ एकअयुतभीषमहने गनेनपरईनाम ७ जूझेदोऊसेनके रथीद्विरदरणमांझ॥ भीषमपुजयोआपुब्रत बहुरिह्वैग ईसांझ ८ रैनिभयेसबशूरमा कियोनसरसंधान॥ सजे सकलभटसेनके प्रातउगतहीभान ९ मारुमारुदुहुंदल भई उठेबीररणगाजि॥ पायकरथीमतंगगण अरुजूझेब

हुबाजि १० मण्डलीककीनोधनुष शरछायोआकास॥
व्रतपाल्योदशसहसहति करिसेनाउस्त्राश ११॥ चौ
पाई॥ दिनप्रतिदशदशसहससँहारे। रथीअतिरथीग
जरथमारे॥ मारगकृष्णाषष्ठीभई। पांडुपुत्रउरचिंताठई
१२ भीषमअगणितशूरसँहारे। पांडुपुत्रसबहीहियहारे॥
रह्योयुद्धतहँनिशिह्वैगई। पांडुसुतनकेउरमातिभई १३॥
दोहा॥ अर्द्धरैनिजबहीगई आयेभीषमपास॥ बहुबिधि
कैअस्तुतिकरी कीन्हेबचनप्रकास १४॥ दोधकछन्द॥
आजुपिताकछुसोमतिदीजै। जाबिधिजीतिसबैदललीजै॥
ज्योंकुरुनन्दनकोदलछीजै। आयसुदेहुसुतो अब
कीजै १५ (भीषमउवाच)॥ छप्पै॥ जौलगमोघट
प्राणकहौकोसरवरपावै। चिरञ्जीवकुरुराज ताहिपद
ओछोआवै॥ विजयकरैकोशूर मोहिंदेखतरणमाहीं।
जोजितवैब्रजराजतोहिंतोअचरजनाहीं॥ सुनिधर्मपुत्र
सुखसोंवयह सत्यमानिचितलीजिये। जियतहमारे
समरकी कछुसन्देहनकीजिये १६॥ गीतिकाछन्द॥
मोहिंपितुबरदानदीनो परमउरसुखपायकै। बिनाबोले
कालनियरो क्योंसकैगोआयकै॥ मांगिहौंसुखमृत्युल
हिहौंनापराजयदेखिहौं। बाणजाकोसाधिहौं गतप्राण
ताकेलेखिहौं १७ मोहिंकोरणजीतिहै बिधिरुद्रसुरपति
रणकरैं। जाहिताकेहरौंप्राणनि बाणनिष्फलनापरैं॥
वृद्धशिशुअरुनारिको द्विजकोधनुषकरनागहौं। भजोदे
खिनताहिमारों सत्यतोसोंहौंकहौं १८ आपनीजयभूप
चाहौ तौकहौंसोकीजिये द्रुपदनृपकोसुतशिखण्डी ता
हिआगेदीजिये॥ नारितेवहपुरुषभो ताकीकथासुनिली

जिये । तुमयोगशिक्षाहौंकहौं नरनाथताहिपतीजिये १९ ॥ चौपाई ॥ काशिराजकीसुतादुलारी । करीशम्भु सेवातिहिभारी ॥ तियतेपुरुषभईबरपाई । लीनोजन्म द्रुपदगृहआई २० आगेदेउपदेशौंतोहिं । बाणनिपार्थ बेधिहैंमोहिं ॥ भीषमजबइहिबिधिकैकह्यो । पगबन्देन हिंसंशयरह्यो २१ अपनेठामधर्मसुतआये । सत्यबचन भीषमकेपाये ॥ सुःखसुतेभिनसारोभयो । उद्यममहायु द्धकोलयो २२ ॥ दोहा ॥ सुभटशिखण्डीअग्रकरि पांडु पुत्रबलबंड ॥ छायलयोशरजालनभ संग्रहकियोअखंड २३ मारुमारुह्वैदलरटैं होतअमितगलगाज ॥ उठतअ ग्निअसिवरबजतजूझतसुभटसमाज २४ बीतीमारग सप्तमी समरहोतअतिकाल ॥ रुधिरसलिलपूरीपुहुमि दीसैठामकराल २५ युद्धहोतादिननवगये कोकबिकहै बखानि ॥ दशवेंदिवसकरालरण पर्योभटनसोंआनि २६ बीत्योअसुरअलापसों अभिमन्युहिसंग्राम ॥ रण बिकर्णतासोंकर्यो जाहिघरूकानाम २७ भीमसेनसों तबजुरे दुश्शासनबलवान ॥ चित्रसेनसहदेवसों कीनो कोपिकृपान २८ नकुलसुशर्माद्रोणसों द्रुपदरायसोंयुद्ध धृष्टद्युम्नगुरुदोणसुत समरकर्योह्वैक्रुद्ध २९ जुर्योयुद्ध भूरिश्रवाद्रुपदसुतासुतसंग ॥ राउबिराटकलिंगसोंको पिकियोरणरंग ३० कृतबर्माअरुपार्थसों बाजीअसवर मारु ॥ पायकहयसारथिरथी भयेसकलसंहारु ३१ भूप युधिष्ठिरसोंकर्यो संग्रमशल्यअपार ॥ इतेसुभटरणभू मिमें जुरेएकहीबार ३२ ॥ सोरठा ॥ कोपिभीमतिहि बार हन्योदुश्शासनकोहिरद ॥ गिर्योपुहुमिबिकरार अं

जनकोसोगिरिपर्यो ३३ ॥ दोहा ॥ कृतबर्मायादवतहां करीवृष्टिशरजाल ॥ काट्योपञ्जरपार्थको कीनोरण बिकराल ३४ जेशरछांड़ेपार्थरण तेखंडेउनबान ॥ अंधकारधरउरधमें ह्वैहीगयोनिदान ३५ कौनगनेअबपार्थको भयकारीसंग्राम ॥ बाणनिसोंबेध्योकटक बरणिक हैकोनाम ३६ ॥ सवैया ॥ ज्योंमृगयूथनिऊपरकेहरि कोपिउठ्योरणपार्थबली । बाणचलेअसमानहुँलौं सुमनोंशलभाउठिब्योमथली ॥ खंडकरीध्वजचौंरपताक भईउपमायहछत्रभली । मानोंउड़ीतजिशैलकेशृंगनिहंसकेबंसनकीअबली ३७ ॥ दोधकछंद ॥ ठामहिंठामहिंशूरसंहारे । कोपिकितेहयसिंधुरमारे ॥ बाणबिशाल हत्योकृतबर्मा । मोहिगिर्योधरबर्मसुचर्मा ॥ यादव मोहिंपर्योजबदेख्यो । सेनसबैभयकालबिशेख्यो ॥ भागतयोंभटअर्जुनआगे । पौनबिडारतज्योंघनभागे ३८ ॥ दोहा ॥ आयोशकुनिसरोषह्वै कह्योपार्थकितजाइ ॥ यादवजानेमोहिंजनिडारोंगर्ब्बनशाइ ३९ आयोसन्मुख शक्तिगहिपार्थकरीद्वैखण्ड ॥ धायशरासनबाणकरतब दीनोबलबण्ड ४० सोऊकीनोखण्डद्वैअर्जुनपरमप्रवीण॥ रथकाट्योसारथिबध्यो करीपताकाछीण ४१ लज्जित खलथलतजिभज्यो तनकीनहींसम्हार ॥ लखिदुर्योधन आदिसब संशयकरोअपार ४२ ॥ दोधकछन्द ॥ रोष कियोशतबन्धवधाये । अर्जुनसोंसबजूझनआये ॥ घेरिलयोजबहींरथऐसे । घेरतपर्ब्बतइन्द्रहिजैसे ४३ त्योंचहुंघासबकौरवकोपे ॥ ज्योंमघवाघनसूरहिलोपे ॥ बाणनसोंरथछायलयोहै । सम्भ्रमकृष्णहिंचित्तभयोहै ४४ ॥

दोहा ॥सहदेवघायेनकुल भीमघरूकासाथ ॥ शोचगहेश शिराहुज्यों धर्मपुत्रनरनाथ ४५ ॥ चौपाई ॥ अर्जुनबाण वृष्टिजबकरी। कुरुनन्दनदलधीरनधरी ॥ उड़ीपताका बाणनसाथ। कटिगेधनुषरहेनहिंहाथ ४६ ज्योंबड़वानल पौनहिंपाई। कौरवसेनाचलीपराई ॥ मारुमारुदोऊदल गाजें। अतिगतिखड्गखड्गसोंबाजें ४७ पवनपुत्रसुतधर्म्म प्रचार्‌यो। लैकरगदाधनुषभुवडार्‌यो ॥ रथहयहस्तीतिहि दलमारे। बज्रपातजनुपर्वतफारे ४८ चलनिछायसट भ्यानकभेसू। यत्रतत्रजनुफूलेटेसू ॥ अद्भुतरणकोसकै बखानी। गिरिसेपरेकरीभुवआनी ४९ ॥ दोहा ॥ जूभेदु र्योधनअनुज हनेभीमपच्चीश॥ कहूंबाहुकहुंजंघहै कहूंपरे धरशीश ५० ॥ सवैया ॥ कोपिगदाकरलैतिहिखेतकियो दलदुर्गमदीहसँभार्‌यो । जूभेरथीकटिकुम्भनसिन्धुरशो णितपूरिप्रबाहप्रचार्‌यो ॥ ग्राहभसूंडदुकूलध्वजाभषचा मरकेशशिवारनिहार्‌यो । पौनकेपूतबलीरणजीतिकैसां चेहुयुद्धकोसिन्धुसुधार्‌यो ५१ दोहा ॥ राख्योभीम कलिंगतहँ द्वैघटिकाबिरमाय ॥ धनुषधरेभटराउतहँ भी षमपहुँचेआय ५२ बूड़तपाईथाहजिमि त्योंदलतिनको पाइ ॥ घरीघरीसाहसबढ्यो कोकबिकहैबनाइ ५३ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविर चितायां कौरववधभीमसेनविजयवर्णनोनामऊनत्रिंशो ऽध्यायः २९ ॥

(भीष्मउवाच) सवैया ॥ आजुहीचक्रगहाइकेकृष्ण हि आजुघनोदलदुन्दुबिदारों । आजुमहारथवन्तहतों सबआजुहीकुञ्जरबाजिसँहारों ॥ आजुअपाण्डवभूमि

करौंवरआजुहींकाजइतेसबसारों । जौनकरौंइतनोपुरुषारथ तौकुलक्षत्रियधर्मनिहारों १ ॥ दोहा ॥ भीषमकोप्यो देखिकै तबअर्जुनगुणग्राम ॥ द्रुपदकुँवरआगेकर्‍यो जाहिशिखण्डीनाम २ ॥ भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ हँस्यो गंगकोपुत्रसोनैनदेख्यो । तबैआपनोकालजीमाहिंलेख्यो ॥ महारोषसोंकोपिकैपार्थधायो । दियेबर्मआगेगहेखड्गआयो ३ महाकालकोकालसोंबाणलीनो । फरीखड्गसोंतोरिद्वैखण्डकीनो ॥ तबैगंगकेपुत्रलैशक्ति ऐसी । महामीचकेतेजहूतेंअनैसी ४ लखीपार्थद्वैखण्ड लैबाणकीनी । सबैदेखिसेनातबैत्रासभीनी ॥ महारोषसों गंगकोपुत्रछायो । धनुर्बाणलैसैनकेसौंहधायो ५ ॥दोहा॥ कोपिहतेद्वैअयुतरण रथीअतिरथीशूर । पायकहयगजछ तनछुटि चलेशोणकेपूर ६ ॥सवैया॥धीरधरैनचमूचतुरङ्ग सुभागतकोउनकाहुसम्हारो । थाकिरहेपुरुषारथकेअति पारथआपुहियेबहुहारो ॥ अश्वगिरेकहुँबीरगिरेकहुँमत्त गयंदनकोगणडारो । भूपयुधिष्ठिरकोतृणसोंदलकोपकी आगिमेंभीषमबारो ७॥ दोहा ॥ हतौपांडुसुतदलसबलबिचारिचल्योदिशिचारि ॥ भीषमसोंमनबचनक्रमसबहीमानीहारि ८ जबजानीसेनाचली भीषमसोंसबहारि ॥ धायेकरधरिचक्रप्रभु रक्षकभक्तमुरारि ९ ॥ सवैया ॥ चक्रगह्योकरिकोपमुरारि निहारितहांअपनोप्रणटार्‍यो । ज्योंरथतैंधसिधायेधरागजयूथनिऊपरसिंहप्रचार्‍यो ॥ देखतहीतिलकावलिशीश नहींचितओरबिचारबिचार्‍यो । पीठिदईकरुणामयताहिकृपाकरिकैजनकोपनपार्‍यो १०
(अर्जुनउवाच) दोहा ॥ सोईहारतपैजकत जीत्योयहसंग्रा

म॥द्रुपदपुत्रपहुँच्योतहांधृष्टद्युम्नतानाम ११॥चौपाई॥
कौरवकोदलकोपिसँहार्यो। यत्रतत्रहतिभूतलडार्यो ॥
पार्थशिखण्डीलैतबधायो। भीषमकेतबसन्मुखआयो१२
देखिशिखंडीबाणनुगह्यो। तिनकेसन्मुखठाढ़ोरह्यो॥ बा
णनिबेध्योपार्थशरीर तबहँसिबोलोभीषमबीर १३ अ
र्जुनइषुबेधतहैमेरे। बाणनहोयशिखंडीतेरे ॥ द्रुपदपुत्र
जेतेशरहये। लगेनतनमेंनिष्फलगये १४ अर्जुनबाणन
मोहेप्रान। भूमिगिर्योयोंकहिबलवान ॥ मारगकृष्णअ
ष्टमीभई। तबभीषमशरशय्यालई॥ १५॥ दोहा॥ भी
षमपौढ़ेसेजशर दशयेंदिनबरबीर ॥ पूरबशिरपश्चिम
चरण पर्योपुहुमिरणधीर १६ बरषैंसुमननस्वर्गतेसुरस
बचढ़ेबिमान ॥ आईकौतुकसुरतरुणिजिततितरूपनिधा
न १७ जैसेशब्दअकाशभो धनिभीषमभटराउ ॥ कौर
वकोअरुशकुनिको मिट्योचित्तकोचाउ १८ भयोकुला
हलकटकसब बिलखबदनदीसन्त ॥ जनजनउरआतङ्क
हैसम्भ्रमबढ़्योअनन्त १९ भीषमशरकीसेजलखिलटक
तशीशहिजानि ॥ पटभूषणकुरुराजतब दयेउसीसआनि
२० (भीष्मउवाच) तुमनहिंजानतयहसमौ लीनोपार्थबु
लाइ॥ बाणबेधिऊंचोकियो शीशसुभटतहँजाइ २१ ॥
चौपाई॥ भीषमकहैतजौंतबप्रान । जबउत्तरदिशिआवै
भान॥ काढ़ीगंगपार्थतिहिबाण । छायरह्योजलकितोप्र
माण २१ जहँशरशय्याभीषमपर्यो । बहुतयतनतहँम
न्दिरकर्यो ॥ आयसुबिनामीचनहिंआवै। कौनसुभटभी
षमसरिपावै २३ ॥दोहा॥ समरकरणकुरुराजसों पांडुपुत्र
सोंरैनि॥ भयोअमितगतिदानवनि सुरपतिकैसीऐनि२४

दण्डकछन्द॥ नेकहूनमानीदुर्योधनअठानठानीजायक्यों बखानीउनभूमिमांगीथोरीसी । गेहनिकोनेहमेटितेहई कीबानिलई सुखकेपियूषमाहिंबिषमूरिघोरीसी ॥ खोटो अतिजीकोनसुभावपरयोनीकोकछू आपनीकहीकोसबै कुलकानितोरीसी । कैकैहठशठभीषमादिसेनतृण सम मूरखबरायदयोतोरितोरिहोरीसी ॥ २५ ॥ दोहा ॥ लयो सेनकोभारुतब द्रोणाचारजशीश ॥ तिनहींकेसँगसब लदल चढ़ेशकलअवनीश २६ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायां भीष्मपितामहसंमोहनोनामत्रिंशोऽध्यायः ॥३०॥

अथ द्रोणपर्व्वकथनम्।

सोरठा ॥ दलपतिद्रोणबजाय चढ़्योकोपिरणरुद्रसो ॥ कटकसमुद्रहिपाय शोषतदेखतरोषकरि १ ॥ दोहा सज्योसेनइतपांडवनि पार्थचढ़्योरणकोपि ॥ निरखतही मृगराजज्यों जातकरीदललोपि २ घुमड़ैघनकनगाजज्यों ह्वैदलमाहिंनिशान ॥ चपलपताकादामिनी सिन्धुरघटा समान ॥ ३ ॥ द्रुपदरायगुरुद्रोणसों भयोयुद्धअतिकाल ॥ दोऊबीरसमानही बृष्टिकरतशरजाल ॥ ४ ॥ प्रथमभ्योसरणकरिरहेदोऊबीरसमान ॥ कवचसनाहकसेसबनि प्रात उगतहीभान ५ जुरेबीरदोउओरके रजछाईअसमान ॥ भईनिशासीछायतम लसेन्नपाकरभान ६ ॥ त्रिभङ्गीछंद ॥ सजिचर्मसबर्माअद्भुतकर्माकोपिसुशर्माआयगयो। जगमेंयशलीजैबिरमुनकीजै पार्थहियहसन्देशदयो ॥ जुरिहमसोंन्यारोयुद्धसँवारो अतिभारोआनन्दकरो । बिरमुनलावहुसन्मुखआवहु धनुषचढ़ावहुबाणधरो ७ ॥ दोहा ॥

अर्जुनकेउरबीररस अतिबाढ़्योसुनिबैन ॥ दोऊसमरप्र
वीणअति क्योंहूँरणउसरैन ॥८॥ आयोतहँभगदत्तनृप ब
लकोकछूनअन्त ॥ अञ्जनगिरिपरसूरसो गजऊपरसोह
न्त ॥ ९ ॥ ताकेसिंधुरकेचले कोकबिकहैसुनाइ ॥ बाह
बातकेपरसही वारणगनउठिजाइ ॥ १० ॥ दोधकछंद ॥
भीमबलीभगदत्तबिलोक्यो । आवतसोभटकौरवरोक्यो ॥
नेकहुसोबरज्योनहिंमानै । भांतिनभांतिनकोरणठानै ११
अंकुशमारिकरीतिहिपेल्यो । भीमबलीनठिलैरणठेल्यो ॥
पौनकेपूतसोमुष्टिप्रहार्यो । सोगजनेकटरैनाहिंटार्यो ॥
१२ उद्यमकैबहुथाकिरह्योई । जातनहींमुखबैनकह्योई ॥
पौनकोपूतजितोबलठानै । कुञ्जरसोमननेकनआनै॥१३॥
॥ दोहा ॥ चतुरदन्तउनमत्तबल गरजतभीमहिपाइ ॥ चा
हतलयोलपेटिकै अबनहिंकछूबसाइ ॥ १४ ॥ त्रोटकछ
न्द ॥ भीमसेनबलकीनोसर्व्व । रोमनटूट्योभाज्योगर्व्व ॥
कुञ्जरपैनहिंपावैजान । कोभगदत्तनरेशसमान ॥ १५ ॥ प
र्योशब्दअर्जुनकेकान । वाहीदलकोछांड़ेबान ॥ कोक
हिसकैनसाहसरह्यो । तबहिंधायतिनअर्जुनलह्यो १६ अ
र्जुनभीमलख्योतृणतूल । लईशक्तिजैसोत्रिशूल ॥ रात्र
णज्योंलक्ष्मणपैछण्डी । बरुकरिइंद्रपूततबखण्डी १७ खं
डकरी द्वैबाणनिकाटि । औरलयोदलबाणनिपाटि ॥ तब
भगदत्तसम्हारोआप ॥ जाकोजगमेंबड़ोप्रताप ॥१८॥ पां
चबाणकरमेंतिनलये । तबअर्ज्जुनकेउरमेंहये ॥ लागत
उरमेंसोपरजर्यो । विषमबाणतिनधनुपरधर्यो ॥ १९ ॥
दोहा ॥ झुकिकुञ्जरकेसिरहयो डार्योशीशबिदारि ॥ पा
रभयोशरबेधितन कर्योफाँकद्वैफारि २० कुञ्जरसबल फँ

काकस्यो दाबिगह्योभगदन्त ॥ गिरननपावतभूमिमेंसा
जतयतनअनन्त २१ जीत्योचाहतपार्थको पेलतवारंवा
र ॥ पगदेसकतनद्विरदसो अंकुशहनेअपार २२ ॥ सवै
या ॥ दाबिगह्योयुगजानुमेंसिंधुर पौरुषकोकविकौनब
खाने। युद्धजुरैनमुरैबरबीर सोभांतिअनेकनिकेरणठाने ॥
पेलतक्रोधकियेभगदत्त नकुंजरनेकहुअंकुशमाने। निर्द्ध
नकीत्रियआयसुज्यों अपनेपतिकीकछुचित्तनआने २३ ॥
दोहा ॥ युगलजंघमेंमृतकगज बारबारभ्कभ्कोरि ॥ हा
स्योदैदैअंकुशै नहींसकतअँगमोरि २४ बीतेएकमुहूरते
भूमिगिस्योगजराज ॥ प्यादोह्वैभगदत्ततब धायोभटशि
रताज २५ ॥ सोरठा ॥ कोपिखड्गलैधाय क्रोधितअ
तिरातेनयन ॥ मघवाचढ्योबजाय चपलाअसिवरजल
दतन २६ ॥ दोहा ॥ दोशरलैदोऊहनी तबहीपारथबा
हु ॥ बिनभुजसन्मुखपार्थके चलोबलीनरनाहु २७ ॥ सो
रठा ॥ पार्थतीसरोबान हन्योशीशमेंक्रोधकरि ॥ मूर्च्छिगि
स्योबलवान उठिअर्जुनसन्मुखचल्यो २८ ॥चौपाई॥ तब
सोपंचपैड़चलिगयो। अर्द्धचन्द्रलैअर्जुनहयो ॥ काट्यो
जानुजंघधरपस्यो । यौंभगदत्तभूपसंहस्यो २९ हाहा
कारकटकमेंभयो। शूरनमनरबिसमआथयो ॥ कौरवनृ
पकेदुखअतिभारी सुखकीसकलबासनाजारी ३० ॥
दोहा ॥ लीनोअर्जुनलायउर भूपयुधिष्ठिरआप ॥ आजु
करीसंग्रामजय कीनोप्रकटप्रताप ३१ ॥ इति श्रीमहाभा
रतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायांभ
गदत्तबधवर्णनोनामएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥
सुन्दरीछन्द ॥ जूभ्किपस्योभगदत्तलख्योजब । कौ

रवसोदररोवतहैंसब ॥ शोचबढ़्योजियमेंअतिशोचत ।
नैननतेअँसुआबहुमोचत १ बन्दतहैंगुरुकेनृपपायन ।
दीनभयेबहुभाषतभायन ॥ आपनुहौसबकारजलायक ।
क्योंबिगरैंजहँहोउसहायक २ आजुभयोतुमयुद्धपराज
य । वेरणजीतिगयेसबनिर्भय ॥ आपुबिचारकछूअब
ठानहु । होयबिजयमतिसोउरआनहु ३ ॥ दोहा ॥ रा
च्योचक्रब्यूहगुरु सुनिअवनीपतिबैन ॥ दुर्गमदीरघदुस
हताजान्योकछूपरैन ४ (द्रोणउवाच) न्योतिपठावहु
पाण्डुसुत आवहिंरणकोआज ॥ कैजूझैंकैजाहिंबन सी
झिजायँसबकाज ५ ॥ त्रिभंगीछन्द ॥ सुनिगुरुबानी
सोसिखमानी उरआनीतबबुद्धियहै । तबदूतबुलायोसो
चलिआयोबेगिपठायोजायकहै ॥ तबआयसुपायोतुरत
सिधायोशीशनवायोभूपजहां । सोसबनिजुहार्योलैबैठा
र्योबंधवचार्योलसततहां ६ (दूतउवाच) ॥ सोरठा ॥
दीनोयहसंदेशचक्रब्यूहराच्योतहां ॥ रणहितचलहुनरे
श कैतजिविग्रहजाहुबन ७ (युधिष्ठिरउवाच) दोहा ॥
न्योतिपठायेआयहैं कहौजायसंदेश ॥ दूतसमदिकीनो
तहां भूपतिउरअंदेश ८ ॥ चौपाई ॥ जेतेभटहैंयादलमा
हीं । चक्रब्यूहसोजानतनाहीं ॥ अर्जुनश्रीहरिसंगसिधा
यो । तीरथतेचलिसोनहिंआयो ९ ताबिनयुद्धकौनयह
करिहै । चक्रब्यूहबैठिकैलरिहै ॥ अर्जुनबिनजानोदलही
नो । तातेन्योतोरणकोदीनो १० तीनोंबंधुनराजाबूझै ।
कहौमंत्रजोजाकोसूझै ॥ जोयहयुद्धनहींबनिआवै । राज
पाटक्षितिकोकोपावै ११ प्रथमहिभीमहिबूझैराजा । जो
रणजीतोंसीझैकाजा ॥ सुनिकैउत्तरभूपहिदीनो । ऐसोसु

न्योनमेंरणकीनो १२॥ छप्पै॥ जुरैंयुद्धगन्धर्वसर्वतिनकोब
लगारों। किन्नरनरअरुयक्षसबलबलदलसंहारों॥ बज्रपा
णिजोबज्रलेहिं तोचित्तनआनो। युद्धकरतदिनरैनि नहीं
हौंकछूअघानो॥ बहुशंकअंकनगपन्नगनि कोमोसोंसरव
रिकरै। सुनिभूपमोहिंयायुद्धकी सोनकछूबिधिजनिपरै
१३॥ दोहा॥ बूझैनृपसहदेवतब जोयहजानहुयुद्ध॥
जीतिलियेह्वैजायगो राजपाटसबशुद्ध १४ (सहदेवउवा
च) जीतौंदानवदेवहौं जुरैंयुद्धजोआय॥ पैबिधिचक्रब्यू
हकीकछूनजानीजाय १५ (राजोवाच) करौंनकुलसंग्राम
यहराखिकटककीलाज॥ नातरुभूमिगईसबै रणकीनोबि
नुकाज १६ (नकुलउवाच) छप्पै॥ आजुअमितसंग्राम
देवदानवसोंमंडों। जुरैयुद्धजोआय कालदंडहुकोकोदंडों
सबअवनीपतिजीति गर्बतिनकेबरगंजों। सकलशत्रुसंहा
रि बाहुबलसबदलभंजों॥ सुनिभूपपायतुवआयुसैहौं इ
तनोसंग्रमकरों॥ यहसौंहमोहिंनृपपांडुकी सोउलटिपुहु
मिऊपरधरों १७॥ दोहा॥ देख्योंसुन्योंनकानहू चक्रब्यू
हनरेश॥ सोनयुद्धकहुँमैंकियो यहजियमेंअंदेश १८॥ चौ
पाई॥ राजाबहुजियमेंपछिताइ। क्योंजीत्योअबसंग्रम
जाइ॥ बिनापार्थबहुभयोअकाज। पुहुमिनशाईबूड़चोरा
ज १९ सुरनरदलसबभीमहिंडरैं। ताहूतेकछुकाजनसरैं॥
सहदेवअरुनकुलबिचारि। तेऊगयेहियेअबहारि २० बै
ठ्योभूपतिनायेशीश। नहिंबोलतकोऊअवनीश॥ चा
ह्योबंधवमनमेंशोचैं॥ मनपछितायँनयनजलमोचैं २१
सकलकटकमेंबीत्योत्रास। अंतापुरसबपर्ख्योउपास॥
यहसबसाधुसुभद्रासुन्यो। हियेशोचकरिमाथोधुन्यो २२

पतिकीसूरतिचितमेंधरी । नैननिजलदेहीथरहरी ॥ कृ
ष्णसाथचलिअर्जुनगयो । बहुख्योनहींकहासोभयो २३
सुतअभिमन्युगोदमेंपस्यो । मातानैननिआंसूढख्यो ॥
पस्योपुत्रउरपैतिहिबार । चिन्ताकीनीचौंकिकुमार २४
(अभिमन्युरुवाच) दोहा ॥ कौनहेतुतुममलिनहौकहि
धौंसोसमुझाइ ॥ याजगमेंतोतैंसुखी औरनकोऊआइ
२५ ॥ सवैया ॥ जेठयुधिष्ठिरभीमबली जहँहैंजगबंदन
कृष्णसेभाई । धीरधनुर्द्धरअर्जुनसोपति युद्धजुरैयमहू
खमिखाई ॥ हैंबिबिबन्धुसहोदरदेवर कीरतिहैसबभू
तलछाई । मोसमपुत्रहिपायकैमाय कहाकहिधौंमुखपैम
लिनाई २६ ॥ दोहा ॥ रुदनकरनकोयासमय कहिधौं
कारणकौन ॥ काहूकेउरत्रासनहिं सम्पतिसंयुतभौन
२७ (सुभद्रोवाच) तुमपितुरणहितकृष्णसँग गयोक
सेतनत्राण ॥ आइसुधिनीकीनहीं कहौरहतक्योंप्राण
२८ ॥ चौपाई ॥ भूपयुधिष्ठिरदुःखनिदान । भोजनकरैं
नखंड्योपान ॥ तीनोंअनुजरुदनबहुकरैं । बैननहींमुखते
अनुसरैं २९ नहींपार्थकीसुधिकछुनीकी । यहैबातसुतहै
मोजीकी ॥ चलिअभिमन्युभूपपैगयो । जायसभामेंठाढ़ो
भयो३०बिलख्योसबपरिवारविलोक्यो । नैननितेजलरु
कैनरोक्यो ॥ माताबचनसत्यकैमान्यो । जूझ्योअर्जुन
निश्चयजान्यो ३१ ॥ दोहा ॥ उलटिचल्योतबगेहको नि
रखिभीमतबधाय ॥ बिलख्योदेख्योपार्थसुत लीनोअंक
लगाय ३२ (अभिमन्युरुबाच) क्योंभूपतिमनमलिन
हौ अरुदुचितेसबमौन ॥ हर्षनकाहूउरलख्यो कहियेका
रणकौन ३३ (भीमसेनउवाच) छलकीनोइकद्रोणगुरु

चक्राव्यूहबनाइ ॥ ताहितन्योत्योयुद्धको दीनोयहांपठाइ
३४ कहिपठईकुरुराजनृप कैरणराच्योआय ॥ कैतजि
कैसंग्रामथल रहौंबिपिनमेंजाय ३५ ॥ गीतिकाछन्द ॥
नहींहमसोसमरजानैं श्रवणहूंनसुन्योंकहूं । देवपुरपाता
लजीत्यो नहींदेख्योसतेहूं ॥ औरभूपनताहिजानत पा
र्थकोधोखोरह्यो । सुनतहीअभिमन्युउठिकै पवनसुतसोंयों
कह्यो ३६ यहकाजहौंसबसारिहौंकहचित्तमेंसंशोकियो ।
जायभूपतिनिकटतबही युद्धहितबीरालियो ॥ आजुकौर
वकुलसँहारों द्रोणकर्णहिसंहरों । हतोंबरदुश्शासनै यह
समरकीजयहौंकरों ३७ ॥ सवैया ॥ काहेकोशोचकरोजु
इतौयहकाजकितौअबहींसबसारों । आजुहतोंक्षणमेंरण
में सबकौरवकोकुलकोपिसंहारों ॥ देखतहीदलद्रोणको
दारिसुखर्गदवागिनिसोंपरजारों । बाजिबिरद्धगरद्धकरों
सबभीड़महारथवंतनिमारों ३८ ॥ दोहा ॥ अद्भुतगति
भूपतिगनी लखिशिशुसाहसधीर ॥ शूरनिमनिकेहरिक
लित शीलसिंधुसोबीर ३९ (राजोवाच) नहिंगुरुढि
गविद्यापढ़ी समरनदेख्योनैन ॥ करिसाहसबीरालयो
जानीकछूपरैन ४० मोहिंअचंभोपुत्रसुनि कोतुवदानवदे
व॥ गंध्रबकिन्नरयक्षतू कहिसबअपनोभेव४१(अभिमन्यु
रुवाच) ॥ छप्पै ॥ सेवकसोईधन्य स्वासिकारजमेंशूरो ।
धन्यधन्यसोइपुत्र मातपितुआयसुपूरो ॥ धन्यधन्यवह
दास भंगनहिंशासनकरई । धन्यधन्यसोइशूर समरप
गउलटिनधरई ॥ धनिबोलिसत्यकविछत्रकहि सुयशरस
कलजगलीजिये । बहुराजकाजमनलाजधरि जन्मसुफ
लअबकीजिये ४२ ॥ दोहा ॥ नहींभूपसंशयकरोशोचन

शावहुचित्त॥करौंविजयभटसबहनोंआजुरावरेहित्त ४३॥
इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंह
विरचितायांचक्रब्यूहरचनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥३२॥
(युधिष्ठिरउवाच)॥ दोहा ॥ पढ़्योनगुरुढिगतैंक
हूं लख्योननैननयुद्ध ॥ क्योंकांध्योतैंभारसुत सोमोसों
कहिशुद्ध १ (अभिमन्युरुवाच) सुनिनृपपूरबजन्मकी
कथाकहौंसमभाय ॥ मथुरापुरउत्तमअवनि शोभाकही
न जाय २ ॥ सुन्दरीछंद ॥ भारभयोउपजेबहुदानव। चै
ननहींबहुधामुनिमानव ॥ होमघनेतपयज्ञनशावत ।
होननहींव्रतसंयमपावत ३ भारतविप्रनिदेखितपोथल।
दीरघदीरघदानवकेदल ॥ ह्वैबहुतैबसुधाजियब्याकुल ।
जातभईतबब्रह्मपुरीथल ४ तामुखबातसुनोजगबंदन।
भूमिभयेतबहींनँदनंदन ॥ भारउतारिदलेदलदानव ।
ठावहिंठांवथपेमुनिमानव ५ ॥ सवैया ॥ भूतलभारउता
रनको जगमें अवतारमुरारिधस्यो। मारिबकीबककोमुख
फारिअघासुरकोउनप्राणहस्यो॥ तोरिलयेरदधायभुशुंडि
तेकोपिकरीजबआनिअस्यो । कंसकोहंसबिध्वंसितहांस
बदानवबंसनिबंसकस्यो ६ ॥ चौपाई ॥ तबश्रीकृष्णपै
जउरधरी। सकलभूमिबिनुदानवकरी ॥ छोटेबड़ेअसुर
जेभये। तेबरबिक्रमकेसबहये ७ मारेसबबहुत्रासदिखा
ई। मोमातातबबचीपराई ॥ गर्भवतीपितुगृहसोगई ।
ऐसीगतिबिधिनानिर्मई ८ ताकेगर्भजन्ममैंलयो । कछू
ज्ञानतबमोउरभयो॥ खेलनजाउँशिशुनकेसंग । नाना
बिधिसबराचतरंग ९ यकशिशुयोंकहिगारीदई सुनत
मोहिंबहुलज्जाभई ॥ तबउनकहेनज्ञातिनगोत । तोहिं

हनैंतिरोकोहोत १० चलितबमातापैहौंआयो । तबहीं सबबृत्तांतबतायो ॥ कोकुलकौनपिताकहुमाता। कहा कुटुंबबंधुनिजभ्राता ११ (मातोवाच) पुत्रपिताकी जोगतिसुनिहौ। बहुपछितैहौमाथोधुनिहौ॥ कुटुंबतुम्हारोश्रीहरिहन्यो। बालकबृद्धतरुणनहिंगन्यो १२॥ दोहा कोऊउबस्योअसुरनहिं पुरुषनकोऊबाम ॥ कीर्नाअपुवशपुहुमिसब निर्भयमथुराधाम १३ लाजभईयह बातसुनि क्रोधभयोबहुचित्त॥ सुनिपितुकीवैसीदशा कियोयतनताहित्त १४ धूमघूंटिह्वैऔंधमुख नींदभूखसब साधि॥ तनमनसबएकांतकरि शिवसोंलगीसमाधि १५ दंडकछन्द ॥ नीचोराखिमूरधचरणकियेऊरधमें धूमघूंटि घूंटितपकीनोत्रासनाकछवै । सूखिगईत्वचासबआमिष बिलायगयो शोणक्रोसलिलचल्योकेतिकबखानिच्वै ॥ एकचित्तसाधिकैसमाधिमहाकष्टसाधि कीनोनबिरामकबहूंनघटिकाहूह्वै। तत्रकहिंशंभुनाथभूतनाथभवनाथ शङ्करप्रसन्नभयेमोपरदयाजह्वै १६॥ दोहा॥ हौंप्रसन्नतोसों भयों मांगुमांगुउत्ताल ॥ जोइच्छातुममनरहै सोपुरवों इहिकाल १७॥ चौपाई॥ तबमैंतिनसोंबिनयीसेव। न मोदेवदेवनकेदेव ॥ वृत्तिभूमिमोंमथुरागाउँ । तीनिहुंभुवनप्रगटतानाउँ १८ बासुदेवभूतलअवतस्यो। दानवकोकुलतिनसंहस्यो॥ लघुबालककहुंरहननपायो । सोहरितहँअवनीशकहायो १९ भागीगर्भवतीमोमाता। नैहरगईजहांनिजभ्राता॥ ताकेगर्भभयोताठाउँ। धरो मातुअहिदानवनाउँ २० अबस्वामीसोकरोउपाउ। अपनेकुलकोपाऊँदाउ॥ लगैनआयुधहोयनघाउ। दैकछुए

सोकरोसहाउ २१ ॥ दोहा ॥ जाकेबलहरिकोहतौं कुलको बदलोलेहुँ लहौंबिरतबरआपनी जननीकोसुखदेहुं २२ दीनोंएकमँजूषतब ह्वैशिवपरमदयाल ॥ तुवरच्छाह्वैहैस मर सबभाष्योतिहिकाल २३ (शिवउवाच) मधुभार छन्द ॥ जबरणजैहै । जययशपैहै ॥ अरिकुलगंजे । पर दलभंजे २४ जबरणजानै । अरिनपरानै ॥ बहुबल कीनो । करिबललीनो २५ ॥ दोहा ॥ रहियेबैठमंजूष में तोहिंनलखिहैकोइ ॥ तुमतनकीरच्छामहा याहीते सबहोइ २६ आयोगेहमँजूषलै बीतेकेतिककाल ॥ मथुरापुरकोउठिचल्यो जीतनश्रीगोपाल २७ जबकछु चलिमारगगयो लयेमँजूषाशीश ॥ विप्ररूपमोकोमिले तीनभुवनकेईश २८ ॥ गीतिकाछन्द ॥ जरायुतसबदेह निर्बललकुटकरमैंलेखिये । चल्योआवतकष्टसोंबिचबाट केशवदेखिये ॥ दयाउपजीमोंहिंदेखत कहीयहगतिहेरि कै । कहोबिप्रचलेकहां वाणीसुनाई टेरिकै २९ रदन दाबीअंगुली द्विजकहीमोढिगआयकै । सुनतआवेकृष्ण योंकहि क्योंबचैभगिजायकै ॥ शब्दऊंचोक्योंकरै· स्वर दीनक्योंनहिंबोलई ताबिप्रकीसुखसुनतबाणी मोहिंचि तचिंताभई ३० ॥ दोहा ॥ मैंबिनयोताविप्रसों कृष्ण हिकहाडराउ ॥ क्योंबोलैस्वरदीनतू सोकहिमोसोंभाउ ॥ ३१ बिरतिभूमिमथुरापुरी तहँअसुरनकोबास ॥ कृष्ण मारिकैबैरचित कीनोसबकोनास ३२ हौंप्रोहिततिनको सदातिनबिनुह्वैगयोहीन ॥ नहींबच्योयजमानजग अब सबसोंआधीन ३३ ॥ चौपाई ॥ कृष्णसँहारेअसुरअनेक ॥ भागिबचीतरुणीतहँएक ॥ गर्भवती पितुकेगृहगई

ऐसीगतिबिधनानिर्मई ३४ ताकेपुत्रभयोमैंसुन्यो।
चलितहँजाउँचित्तमेंगुन्यो ॥ वहसुतह्वैहैबहुबलवान।
अवशिराखिहैमेरोमान ३५ हतिकृष्णहिमथुरापुरलेहै।
धामश्रामहमकोलैदेहै॥ यहसुनिकैमेरोमनमान्यो। वह
मैंनिजप्रोहितकरिजान्यो ३६ तबमैंसोद्विजनिकटबुला
यो। सबबिधिअपनोभेदबतायो ॥ तूप्रोहितहौतुवयज
मान। रहुमोपासराखिहौमान ३७॥ दोहा॥ फूल्योद्वि
जयेबचनसुनि हर्षवन्तअकुलाइ ॥ मोसोंहितभाखेबचन
कहिधौंतूकितजाइ ३८ ॥ चौपाई ॥ तबमैंअपनोभे
दबतायों। कृष्णहिंहौंजीतनचलिआयों ॥ तबफिरिविप्र
कहैअकुलाय। तोपैक्योंरिपुजीत्योजाय ३९॥ दोहा॥
बलीनहींहैकृष्णसो तीनिलोकमेंकोय ॥ तासोंतोसोंयुद्ध
में कैसेसरवरहोय ४० तोहिंदेखिधीरजभयो जान्योजी
वनआज ॥ अबमथुराजनिजायतू ह्वैहैमहाअकाज ४१
तबमैंकह्योमंजूषको भेदसबैसमुझाय॥ दीनोशम्भुकृपालु
ह्वै प्राणनरक्षकआय ४२ सकलनिपातोंअरिचमू कौ
नसकैरणजीति ॥ हारतजानिमँजूषमें पैठिरहौंयहरीति
४३ सोरहसहसकरीलगी तेसबलेहुँलगाइ ॥ मोहिंलखै
नहिंशंभुबिनु दूजोकोऊआइ ४४ ॥ चित्रपदाछन्द ॥ वि
प्रकहैतबऐसे। तूरणजीतिहिकैसे ॥ जानतहौंछलकीनो।
तोकहँहैयहदीनो ४५ सोनकछूकहिजाई। तूकहिमोसों
समुझाई ॥ मैंसबबातबताई। बातसबैद्विजपाई ४६ ॥
दोहा ॥ सीखलराईसबलई छलिकरिद्विजबपुमंडि ॥ बै
ठ्योमाहिंमँजूषहौं सकलकपटकोछंडि ४७॥ चौपाई ॥ वि
कटकरीडनसबैलगाईं जेमैंहुतीवाहिसमुझाई ॥ तामेंमो

हिंमूँदिसोगयो। बुद्धिनशाईपरवशभयो ४८ थाक्योब
लसबपौरुषभाग्यो। कीनोसोकछुकाजनलाग्यो॥ शिव
शिवकहततजेमैंप्रान। फिरितबप्रगटभयेभगवान ४९॥
दोहा॥ एककुपीमेंमूँदियो श्रीहरिमेरेप्रान॥ होनीहोई
ह्वैरहे जोरचैभगवान ५० चौकसकैतबसोकुपीदईसु
भद्राहाथ॥बिनुबूझेखोलोनतुम योंबिनयोयदुनाथ ५१॥
चौपाई॥ पतिकेगेहसुभद्राआई। तबसोकुपीहाथहीला
ई॥ न्हाईऋतुवन्तीह्वैनारि। जानिसुगंधसुलखीउघारि
५२ सूंघततताकोबहुसुखपायो। ताकेउदरपैठिहौंआयो॥
दिनदिनबाढ़तबिकटशरीर। व्यथासुभद्रहिंधरतिनधी
र ५३ दशौद्वारकीरूँधीश्वास। ताहिगईजीवनकीआस॥
सहसबाहुअहिदानवभयो। सह्योनभारमातुपैगयो ५४॥
दोहा॥ दिनदिनदेहीथरहरी कृशह्वैरह्योशरीर॥ देखन
आयेसुनिब्यथा भगनीकोयदुबीर ५५ (श्रीकृष्णउ
वाच) कहातोहिंमनकामना कहाबसैतुवचित्त॥ सोमो
सोंसमुझायकहि आनौंतेरेहित्त ५६ (सुभद्रोवाच)
पैरौंरुधिरप्रबाहमें यहभैयाचितमोहिं॥ नित्यनित्यइहि
बिधिकरौं अथवामारौंतोहिं ५७॥ त्रोटकछन्द॥ अमश्री
हरचित्तभयोतबहीं। भगनीमुखबैनसुन्योजबहीं॥ बहु
संभ्रमचितहिछायरह्यो। कछुजायनहींमुखबैनकह्यो ५८
जबसूरछिप्योकछुरैनिगई। तबव्याकुलताभगिनीहिभई॥
हरिसोंयहबैनाबिचारिकह्यो। कहिएककथानसिचित्तर
ह्यो ५९॥ दोहा॥ श्रीहरिचक्रब्यूहकी कीनीकथाप्रका
श॥ चमाभईसुनिकैकछू मिट्योकछूमनत्राश ६०॥ चौ
पाई॥ यहिबिधिकथातहांसुनिलई। सुनतसुनतआधी

निशिगई ॥ दैत्यनहूँकोनिद्राछई । कछूक्तमाताकेउरभ
ई ६१ कथारहीयहमोचितश्राई । हूँकादैतबकथाकहाई ॥
तबहींहरिभाषापहिचानी । कहीनतबसोंफेरिकहानी
६२ ॥ कुंडलिया ॥ कीनोसंभ्रमचित्तमें कृष्णकमलदल
नैन । उत्तरकाहूश्रसुरकोनरकीभाषाहैन ॥ नरकीभाषाहैन
उदरमें हौंतिनजान्यो । सहसबाहुकोशत्रु श्रापनोतबपहिं
चान्यो ॥ पहिंचान्योतिहिबारसज्योतबयतननवीनो । कोक
बिसकैबखानिचित्तजेतोभ्रमकीनो ६३ ॥ दोहा ॥ सहसबाहु
कोकृष्णतब पुतरारच्योबनाइ ॥ करकुशलेश्रभिषेककरि
मन्त्रजप्योश्रकुलाइ ६४ तासोंसकलभुजानशी द्वैभुजर
हींशरीर ॥ तबहौंप्रकट्योभूमिपर भईसुभद्रहिधीर ६५
चक्रब्यूहकथासुनी सुन्योगेहकोभाउ ॥ भीमपैजकरिता
हिबर तोरिलेइकरिचाउ ६६ जितीकथासबमैंसुनी सो
बरणीतोजाइ ॥ रह्योसुनेबिनु भीमसो तोरिदेहिसुनिश
इ ६७ ॥ छप्पै ॥ भीमसेनकीपैजकरतकोशङ्कनकरई ।
मुनिगणतजतसमाधिशंभुकोश्रासनटरई ॥ भूतलव्यो
मपतालतङ्कपतिकम्पतथरथर । गदालेतकरकोपिश्रन्त
श्रातङ्कसकलनर ॥ कोनकँपहिकबिछत्रकहिडरिडरिक
रिवरपरिहरत । जोभहोतसुरश्रसुरकोसुपवनपुत्रक्रोध
हिकरत ६८ ॥ दोहा ॥ जीत्योचक्रब्यूहरण कौनसकैश्रब
राखि ॥ नहिंनरेन्द्रचिन्ताकरो बचनकहेइमिभाखि ६९ ॥
दण्डकछन्द ॥ दृढ़दलपारोंरोरिसुभटसंहारौंदौरि पौ
रिपौरिगर्बसबशूरनकेगारिहौं । शोणहूँमैंबोरोंद्रोणरथ
तेबिरत्थकरों कर्णहूँबिकर्णहूँकोश्राजुरणमारिहौं ॥ शास
नदुशासनकोचैनदहबैनहूँको भूधरसेदूधरकोभूतलप

छारिहौं । बाणनिकीबायुसौंउड़ायदेहुँशकुनिहिंक्रोधदु
र्योधनकेशीशहीसोंसारिहौं ७० ॥ दोहा ॥ ह्वैसुचित्तबी
रादयो धर्मसुवननरनाह ॥ पांचत्तोहिणीसबलदल दी
नोकरिउत्साह ७१ सहदेवअरुनकुलसँग चलेद्रुपदनर
नाथ ॥ चलेबिराटचमूलिये औरघरूकासाथ ७२ भूप
तिकोशिरनाइकै चल्योनिशानबजाय ॥ गेहआयजन
नीचरणबन्देबहुसुखपाय ७३ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे
विजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंहाविरचितायां अभिमन्युउ
त्साहवर्णनोनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

(सुभद्रोवाच) चौपाई ॥ देखततोकोमनुगहव
र्यो । धनिधनिकुत्तिमौंअवतर्यो ॥ अपनेकुलकोश
र्योपान्यो । धन्यधन्यसुतमैंपहिचान्यो १ ॥ दोहा ॥
मुक्ताचौकपुरायकै वेदउचारतविप्र ॥ चल्योबीररसमों
सुभट शत्रुहिंजीतनछिप्र २ मंगलगायेसखिनमिलि बा
जनबिदितबजाइ ॥ न्योछावरिमणिमुक्तकरि नीरजचीर
लुटाइ ३ बन्दिनमिलिबोल्योबिरद रथआरूढ़कुमार ॥
चल्योसबलदलसाजिकै कोपिकर्योकिरवार ४ ॥ सुन्द
रीछन्द ॥ कुञ्जरपुञ्जनिपुञ्जनिसोहत । बैरखजालमहाम
नमोहत ॥ देखतयोंकबिताछबिसाजत ॥ ज्योंउतदामि
निबारिदराजत ५ चञ्चलबाजिकिधौंखगखञ्जन । पौन
कुरंगनिकीगतिगञ्जन ॥ ज्योंशलभागणपायकराजत ।
शोभनदीरघदुन्दुभिबाजत ६ ॥ दोहा ॥ रजउड़िलो
प्योब्योमरवि रह्योघोरतमछाइ ॥ कमठकसमस्योशे
षको लचकिलचकिशिरजाइ ७ ॥ दण्डकछन्द ॥ छाती
होतधरधरशेषकीधराधरते कूरमकलमलातभूरितलात

लतल । टूटिटूटिद्रुमद्विविछूटिछूटिनीरगयेखूदिखुरतार
मुकैंसरितासकलजल ॥ चहूँओरचकितचवाइससवाइ
गयेअरिअवनीशकंपिकंपिउठेहलहल । सुरअवतंसपण्डु
बंसअंसअर्जुनकेसेनचलेहालिउठेभूतलकेथलथल ॥८॥
दोहा ॥ चलतकटकपहुँच्योतहाँ जहँबिराटकोधाम ॥ दि
योसोधुइकसहचरी जगीउत्तराबाम ॥९॥ (सख्युवाच)
जीतनचक्रब्यूहको कोपिचढ़्योतवकंत ॥ चढ़योबीररस
कटकमें हर्षवन्तदीसन्त १० अतिआतुरयेबचनसुनि उ
ठीउत्तराबाम ॥ निरख्योप्रीतमप्राणपति सबसाहसको
धाम ॥११॥ चौपाई ॥ कीन्हीकुवँरिमोहुअधिकाई । नहीं
करीकछुकृष्णभलाई ॥ अबहौंसत्यबचनइमिभाख्यो ।
जातकुवँरकोअबहूँराख्यो ॥ १२ ॥ उपज्योमोहकृष्णपहिं
चान्यो । तबबिचारउरमेंयहआन्यो ॥ परमनिठुरतात
बउपजाई । मोहकाटिकैरचीरुखाई ॥१३॥ तबअभिमन्यु
लखीतियऐसी । चन्द्रबदनरतिकमलाजैसी ॥ सूक्ष्मसुभ
गसकलअँगबनी दीनीबिधिशोभाअतिघनी १४ दोहा॥
बरणिकहांलौंकहिकहौं रूपबहिक्रमबाल ॥ निरखिकुवँर
कोमनमथ्यो मन्मथतेहीकाल ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ तब
उपायश्रीहरिजूकर्‌यो । सबतनमथिमनसिजजलढर्‌यो ॥
पानमांभसोजलधरिलयो । कुवँरिउत्तराकेकरदयो ॥१६॥
भवतबगरिगयोतनुमाहीं । यहसँयोगकोउजान्योनाहीं ॥
ह्वै सन्तुष्टसुबीरजलयो । चलि अभिमन्युअगाड़ी
गयो ॥ १७ ॥ निशिकोकीनीजायमिलान । भईनिशा
तबअथयोभान सूनीसेजउत्तरानारि । जागीस्वप्नअरि
ष्टनिहारि ॥१८॥ (उत्तरोवाच) ॥ दोहा ॥ देख्योस्वप्न

अरिष्टमैं यातेमनअकुलाइ ॥ जानौंकुशलनकुवँरकी प्राण उठ्योसोजाय ॥ १६ ॥ सवैया ॥ जातिग्निवाहनकोअभिमन्यु भयेसपनेकपरीछबराती । गावतजम्बुकबाघसोगीतनि मण्डपछावतगिद्धसँघाती ॥ रातइभूषणरातइमालसो पागबनीगहरेरँगराती । पांचसखीमिलितेलचढ़ावति याडरतेधरकीबहुछाती ॥ २० ॥ दोहा ॥ कह्योबिप्रसोदानकरि बैठिरहोसोबाल ॥ बीराजलसन्तुष्टह्वै गर्भधस्योतिहिकाल ॥२१॥ चलिपहुँच्योअभिमन्युरण चक्रब्यूहनिकेत ॥ खबरिभईकुरुराजको पठयोनरसुधिहेत २२॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकबिछत्रसिंहविरचितायां अभिमन्युपयानबर्णनोनाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३४ ॥

अथ दोधकछन्द ॥ बंदितबैनरनाथपठायो । नामलसैबिदवन्तसुहायो ॥ कोसजिकैरणकोचढ़िआयो । सोहठिसेनकितोसँगलायो ॥ १ ॥ जायबसीठतहांइमि देख्यो । घोरघनोघनसोंदललेख्यो ॥ बूझतलोगनिकोसजिआयो । भीमयुधिष्ठिररोषनिछायो ॥२॥ कैसहदेवकिअर्जुनसोहै । शूरकहोअबकोदलमेंहै ॥ जातकहांछितितेंदलआयो । भेदकछूअबमैंनहिंपायो ॥ ३ ॥ (सेनउवाच) ॥ दोहा ॥ अर्जुनसुतअभिमन्युयह चढ़्योनिशानबजाय ॥ जीतनचक्रब्यूहको कोअबसकैबचाय॥४॥ चलिबसीठपहुँच्योतहां पारथसुतकेपास ॥ बैठ्योदेख्योकुवँरतहँ साहसयुतसुबिलास ॥५॥ दैअशीशठाढ़ोभयो आदरकियोकुमार ॥ कुशलप्रश्नकोबूझिकै बैठकरदईअगार ॥६॥ (अभिमन्युरुवाच) कैसोचक्रब्यूह

नृप रच्यो कहो किहिरीति। सोईघटिका एकमें पैठिलेहुंस
बजीति ७ (बसीठउवाच) कोटरचेइकईसगुरु संघट
करोनजाय ॥ पैठिकौनकइनीकिरै बंकटदुर्गमँझाय ८
बिकटदर्रामारगबिकट सागरसमगंभीर ॥ ताकेअमितप्र
बाहधसि कौनलहिसकैतीर ९ दुर्योधनबलबंडसुत ल
खनीनामदहाइ ॥ प्रथमकोटआभारशिर लयोभुजाबर
आइ १० कोटदूसरेबिकटमें बिदुरबीरकोबास ॥ तीजे
शल्यकह्योबली तीजैकोटनिवास ११ कोटचतुर्थमेंद्रोण
सुतरह्योबलीदलगाजि ॥ कोटपांचवेंशकुनिदलराख्योब
हुदलसाजि १२ छठेंसुशर्मासातमें साज्योसबलसवाह ॥
अष्टमबिश्वासेनतहँ सजेकवचसन्नाह १३ नवमाबिषम
भूरिश्रवा दशमेंकौसबभार ॥ एकादश अरुद्वादशैं ताही
कोबिस्तार १४ कोटितेरहेंद्रोणगुरु सकलसेनकीलाज ॥
चतुर्दशेंगांगेयतहँ राजतबड़ोसमाज १५ हैकलिंगगढ़
पन्द्रहें जिहिबहुजीतेयुद्ध ॥ दुश्शासनगढ़षोड़शें सेना
सहितसक्रुद्ध १६ ॥ चौपाई ॥ सप्तदशैंकृतबर्म्मादेख्यो।
ताकोमहागर्बमेंलेख्यो ॥ अष्टादशैंलसैमदबाहु। नवद
शसेनायुतउत्साहु १७ ॥ दोहा ॥ कोटबीसमेंकरणनृप
ताकेबलनहिंअंत ॥ एकबीसमहँजयद्रथ साज्योदुसहदु
रंत १८ दुर्योधनसबअनुजसुतसाजिसेनचतुरंग ॥ न्या
रोलसैमहीपतहँ सुभटबिकटसबअंग १९ यहाविधिचक्र
ब्यूहकी सुनिअभिमन्युकुमार ॥ करौंबिदाचलिजाउँहौं
दुर्योधनकेद्वार २० (अभिमन्युरुवाच) साजेनृपतिम
हारथी सकलसजेतनत्राण ॥ यहसंदेशोदेहुतुम करबर
गहोकृपाण २१ पहुँच्योदूतमहीपपै कहीसकलबिधिजा

य ॥ नृपतियुधिष्ठिरकीचमू तुमपरपहुँचीआय २२ सा
ज्योचक्रव्यूहपै पारथसुतबलबंड ॥ नामबेषलघुजानिये
पौरुषपरमप्रचंड २३ ताकोसाहसमैंलख्यो कहतन
बनईबात ॥ कहतलेहुंहौंजीतिकै चक्रव्यूहकोजात २४
करोउताइलकटकमैंसाजोराजाराय ॥ सावधानसबहोहु
भट गरजिनिशानबजाय २५ ॥ त्रोटकछंद ॥ प्रतिहार
नरेशतबैपठयो। अवनीशनिसोधुसोदैनगयो ॥ सुनिता
मुखबैनसबैसजिकै। तनत्राणकसेबहुधागजिकै २६ च
हुँओरनिघोरनिशानबजे। कहुँकुञ्जरबाजिसमूहसजे ॥
रथवंतमहारथसाजितहाँ। लखियेनहिंपौनप्रवेशजहां
२७ अभिमन्युजबैतहँसाजिचल्यो। बहुबीरनकोहियदे
खिहल्यो २८ पहिलेग्रहमध्यप्रवेशकस्यो। तबलाखनकेम
नशोचपस्यो ॥ लखिबालकसोंनकरैरणको। यहशोकभ
योअतिहीमनको।नगहैधनुबाणसोशीशधुनै। पलहीपल
हीहियमाहिंगुनै २९ (लखनउवाच) दोहा ॥ अतिअपरा
धीमोपितापांडुसुतननहिंखोरि ॥ उननधरीजियमांझइन
औगुणकियेकरोरि ३० प्रथमबरुणमंदिररच्यो तामें दि
येजराय ॥ भजिउबरेदावाग्निते श्रीहरिकियोसहाय ३१
पांसेकपटबनाइकै छलकरिलियेहराइ ॥ राजपाटसबछी
निकै दीनोबिपिनपठाइ ३२ खैंचतलज्जानाकरी द्रुपद
सुताकोचीर ॥ हरिसहायउघस्योनहीं कितहूंतनकशरीर
३३ ऐसेकोरिबिचारिकै समरनआपअँग्याइ ॥ जानदयो
सुतपार्थको नहिंराख्योबिरमाइ ३४ गयोपैठिग्रहदूसरे
पार्थपुत्रबरबीर ॥ निरखतधनुगुणयुतकस्यो बिदुरउठे
रणधीर ३५ निरखतहीअभिमन्युको बिदुरडुलायोशी

श ॥ रक्षाबालककीकरो ह्वैकृपालुजगदीश ३६ आपु
नकांधोयुद्धनहिंधनुषदियोभुवडारि ॥ पापीबैठेगेहकत
पांडुपुत्रतुमचारि ३७ पौरुषतजिलज्जातजी तजीसक
लकुलकानि ॥ बालकरणहिंपठाइकै आपुरहेसुखमानि
३८ दीरघतनुदीरघभुजा दीरघपौरुषपाइ ॥ कातरह्वै
बैठेसदनबहुबलवन्तकहाइ ३९ बिदुरसाथबरजोसबै
कोऊजुरैनयुद्ध ॥ चल्योतीसरीपौरिको पार्थपुत्रह्वैसुद्ध
४० पैठिगयोगढ़तीसरे पार्थपुत्रतबधाइ ॥ सहितशल्य
भटसकलमिलिलीनोधनुषचढ़ाइ ४१ सन्मुखसमरस
रोषह्वै जुरेबीरबीबियुद्ध ॥ तबहिंपार्थसुनशल्यउर ह
नीशक्तिह्वैक्रुद्ध ४२ बिषमचोटनहिंसहिसक्यो भज्योबे
गिदैपीठि ॥ पारथसुतकीनीतबै चौथेगृहपरदीठि ४३ ॥
चौपाई ॥ तहांद्रोणसुतहैबलबंड। जाकोपौरुषलसैअखं
ड ॥ तहँअभिमन्युबेगिदैगयो। तासोंमहायुद्धतबभयो
४४ अग्निबाणउनलीनेतीनि। डारेपार्थपुत्रतेछीनि ॥
बाणबीससोंगुरुसुतहयो। ताकेपरमक्रोधउरछयो ४५
तबअभिमन्युहन्योशतबान। उनशरकियोसहससंधा
न ॥ दोऊसमरकरतबलबंड। दोऊबरषतबाणअखंड
४६ ॥ दोहा ॥ एकैबिद्यादुहुँनकी संग्रमकरतसमान ॥
ऐसेवेईऔरको पटतरदीजैआन ४७ क्रोधकरयोतबपा
र्थसुत रिसकैछांड़ेबान ॥ द्रोणपुत्रमूर्छितभयो आगेक
ह्योपयान ४८ तबहींपारथसुतगयो कोटपाँचवेंकोपि ॥
शकुनिरह्योतहँक्रोधकरि अंगदज्योंपगरोपि ४९ (श
कुनिरुवाच) बांधौजीवतबालकै भागिनपावैजान ॥ मा
रिलेहुतिनकोअबै जोकोउसजैकृपान ५० छेक्योचहुँदि

शितेकुँवरबाणअनेकचलाइ ॥ घोरकर्मकीनोमहा रह्यो
व्योमशरछाइ ५१ रणकरालअभिमन्युको सक्योनखल
पैजाइ ॥ जितहिदवागिनिसोउठैतृणज्योंदलभहराइ ५२
भजेलजेनहिंशकुनिउर सबदलगयोपराइ ॥ बहुतबीर
अभिमन्युसों उबरेहाहाखाइ ५३ छठेसातवेंआठवें नव
मेंकोटमेंभाय ॥ दसएकादशद्वादशे पहुँच्योबलहीजाय
५४ सबहीकोशरशेलसों हतिकैगर्बनशाइ ॥ गयोतेर
हेंकोटधसि द्रोणउठेअकुलाइ ५५ (द्रोणउवाच) चौ
पाई ॥ बालकतूरणमेंकितआयो । हौंनसुन्योगृहतेकितधा
यो ॥ तोसँगसंग्रमहौंकतमंडौं । बालकजानिहियेअबछंडौं
५६ जानतहूँअबक्योंभगिजैहै । क्योंकरिकैइषुतीक्षणसै
है ॥ कालबलीबरतोकहँलायो । बालकभूलिइहांकतआयो
५७ पारथभीमयुधिष्ठिरआवै । सोकछुनेकप्रवेशहिपावै ॥
तूकतपैठिसकैगढ़माहीं । तोअवगाहनकीयहनाहीं ५८ ॥
दोहा ॥ सुनतकुँवरयहपरजस्यो भुकिबोल्योयेबैन ॥
धनुगहिकरगुरुविप्रतू क्षणएकयुद्धकरैन ५९ ॥ सवैया ॥
बालकमोंहिगनोजिनद्रोण सुक्योंनहिंबाणशरासनसाज
त जानतहौंशशिबंशकिरीति नहींलखिकैकोउयुद्धहिभा
जत ॥ मोसँगजौलगिआपुजुरैनहिं तौलगिहौंइहिमंडल
गाजत । तौलगिआपुनचित्तनआनत जौलगिबाणनशी
शबिराजत ६० ॥ दोहा ॥ कौनहमारेबंशमेंभाग्योदेखि
जुझार ॥ तातेद्रोणबिचारिकै करटेकोकरवार ६१ कृपा
करोजोआपउर प्रथमहिकरोंप्रहार ॥ रह्योनधोखेचित्तमें
धरियेआपहथ्यार६२॥ गितिकाछन्द॥ बाणद्रोणतजैनहीं
इनबचनकोटिकभाषियो । जानिबालकवेषकरुणाहृदयमें

बहुराखियो ॥ कोपकरिअभिमन्युअंडेकालसेशरलेखि
कै। सहजहीतिनश्रीनिडारे उरधआवतदेखिकै ६३ ॥
दोहा ॥ खुरपबाणअभिमन्युलै ध्वजापताकाकाटि ॥
डारेभूतलशरनसों सबदललीन्योपाटि ६४ ॥ सवैया ॥
जेबहुकालहुनेजितबार सोतेउजरेनहिंयुद्धअनैसे। बाण
बिधेसबकेतनयोंजिमिरोषितब्यालबिलेमहँपैसे ॥ शूरस
नद्धभयेअधअंधक मध्यगिरायदयेसबऐसे। ज्योंउनमत्त
मतंगसरोवरपैठि विदारतबारिजजैसे ६५ ॥ दोहा ॥
ह्योद्रोणहैलक्षशर कह्यो न संग्रमजाइ ॥ शलभागण
ज्योंब्योमधर रहेबाणतहँछाइ ६६ ॥ सवैया ॥ कोटिनको
टिहुतेबहुयोधा सुकाहु न द्वैघटिकाबिरमायो। पौनकेगौ
नतेबाढ़िउठ्योदलनीरदसंघटसोबिचरायो ॥ भूतलब्योम
दिशाबिदिशा सुतपारथकेशरपंजरछायो । ह्वैभयभीत
सशोकितअंगन कौरवजानतअर्जुनआयो ६७॥ दोहा॥
मंडलीककीनोधनुष पारथसुतबलबण्ड ॥ बेध्योगुरुहै
लक्षसों जीत्यो समर अखण्ड ६८ समरसह्योनहिंद्रोण
गुरु रह्योमानिहियहारि ॥ पैठ्योअगिलेकोटमें पारथसुत
भटभारि ६९ औरसबलथलजीतिकै पहुँच्योकर्णनिकेत॥
तबहींउठिठाढ़ोभयो सोईरणकेहेत ७० (कर्णउवाच)
दोधकछंद ॥ जानतहौं शिशुमीच बुलायो । ढीठभयोच
लिमोढिगआयो ॥ वृद्धहुतो द्विजद्रोण पुरानो । हौंतिनु
काकरितोकहँजानो ७१ जीवत क्यों न बचैभजिमोपै।
होयकहाअबमोढिगतोपै ॥ पारथकोसुतयोंतबभाखै । क
र्णबुलाउजोतोकहँराखै ७२ ॥ सवैया ॥ बीरअबीरमहा
भठभीर सोतीरहितीरखरेसबहेरे । आजुसबैतवगर्वहरों

अबपायोहैमैंकरिआपनेनेरे ॥ जीवतजायनसन्मुखआय
कै तोसोंमूढ़कहोंयहटेरे । भूपयुधिष्ठिरकीजयको कुरुनंद
नबांधहुँदेखततेरे ७३ ॥ दोहा ॥ आपधनुर्द्धरधीरतुमरहे
कहाइकहाइ ॥ तौबलदार्याजानिहौंयुद्धजीतिजोजाइ ७४
दुर्योधनबांधौंजियततेरेदेखतआज । नृपतामहिमंडलकरैं
युधिष्ठिरमहराज ७५ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ कर्णमहीपतिको
पकियोजब । ऊरधमेंशरछायदयेतब ॥ तेअभिमन्युबली
रणतोरत । सन्मुखतेअँगनेकनमोरत ७६ आहिधनुर्द्धर
धीरमहावर । व्योमहिछावतुहै शरहीशर ॥ अद्भुतयुद्ध
नहींकहिआवत । कोउपमाकहिताहिबतावत ७७ ॥ दो
हा ॥ लख्योकर्णअभिमन्युसों जबहिंजयद्रथयुद्ध ॥ बल
सोंरोंकैपांडुसुत तिरछोपैठिसक्रुद्ध ७८ ॥ चौपाई ॥ भूप
युधिष्ठिरभीमप्रचाख्यो । तोपहँजायनसोअरिमाख्यो ॥
पांडुमहीपतिकेसुतरोके । बैठिरहेसुसवाइसशोके ७९ ॥
दोहा ॥ भयोसहायीईशवर रोकेपांडवचारि ॥ रह्योजयद्रथ
रोपिपगुअंगदकीउनहारि ८०॥चौपाई॥ चलिअभिमन्यु
गेहमेंगयो । पारथकुँवरअकेलोभयो ॥ भयोकरणसोंयुद्ध
कराल । छप्योअकाशधराशरजाल ८१ तबअभिमन्यु
बढ़्योबहुक्रुद्ध । रविनन्दनसहिसक्योनयुद्ध ॥ बिचलि
भग्योनहिंरोप्योपांउ । उरपारथसुतकेभोचाउ ८२ ॥ सुं
दरीछन्द ॥ बाणनसाथउड़ायदयेभट । पौनचलैजिमि
नीरदसंघट ॥ कौरवयोंलखिकैउरआनत । आयगयोर
णपारथजानत ८३ ॥ दोहा ॥ पाछेदेख्योपार्थसुत साथ
नपांडवचारि ॥ बिलखिबदनबिस्मयकियो रह्योबिचारि
बिचारि ८४ (अभिमन्युरुवाच) गीतिका छन्द ॥

आजुजोरणभीमहोतो युद्धमेरोदेखतो । ह्वैपराजयकरण भाग्योसकलकौतुकलेखतो ॥ लखैपौरुषकौनमेरो कियो इहिथलआयकै । जानिकेउतपातकौरव कुँवरद्वैवयोजा यकै ८५ दीपऊपरज्योंपतंगै योंपरेभटधायकै । मेघझर ज्योंबृष्टिशायक करीचहुंदिशिजायकै ॥ जुरेरणभूरिश्रवा दहवैनदुश्शासनबली । जुरेकौरवयुतकलिंगहि शोभिजै रणअस्थली ८६ ॥ दोहा ॥ चहुँदिशिसे अभिमन्युतब ह्वेकिलयोबलबंड ॥ घेर्योसुरपति गिरिन्ज्यों करिकरि कोपअखंड ८७ बढ़्योकोप अभिमन्युउर तबमुकुराये बाण ॥ कटेपताकाचौंरध्वज कटिगयेकरणकृपाण ८८ ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ चलेभागिचौहूं दिशारावशाने । निषं गीचलेचर्मबर्मापराने ॥ रथीसारथीअश्वहस्तीभगे हैं । नहींयुद्धमेंबीरकोऊखँगेहैं ८९ पताका ध्वजा काटिद्वैखंड कीने । तजेअस्त्रकाहूनहींहाथलीने ॥ तहांकोपिकैकर्णको पुत्रआयो । मनोदंडधारीमहारोषछायो ९० तबैपार्थके पुत्रसोंयुद्धठान्यो । नहींचित्तमें नेकहूत्रासआन्यो ॥ कटे बाणहीबाणसोंअंगताके । करैंबीरदोऊदुहूंयुद्धथाके ९१ ॥ दोहा ॥ रविनन्दनकोपुत्रतहँ बीरनिर्माणबृषकेतु ॥ पार्थ पुत्रकोजोरही जाननभीतरदेतु ९२ अर्द्धचन्द्रअभिमन्यु लै हयोहियोबलबीर ॥ मोहितह्वै भूतलगिर्यो अति थरहर्योशरीर ९३ ॥ चौपाई ॥ दुर्योधनसुत लक्ष्मण आयो । पारथसुतसों रणकोधायो ॥ दोऊभिरतनमाने हारि । सकैनकोऊकाहूमारि ९४ दिशिदिशितेमिलिकौर वआये । चहुंदिशितेतिनशरमुकुराये ॥ मुद्गरकाहूशक्ति प्रहारी । बलकरिपारथसुततनडारी ९५ मूर्च्छितगिरेध

रणिअकुलाई। दुर्योधनसुततबउठिधाई ॥ दोहथगदासु लच्चणहयो। बिनाजीव पारथसुतभयो ९६ धर्मयुद्धनहिं हियेबिचार्यो। पर्योकुँवरतिहिदुष्टसँहार्यो ॥ सुनतयुधि ष्ठिरबहुदुखपायो। अतिआनंदकटकमेंछायो ९७॥दोहा॥ कृष्णपच्छएकादशी मारगमासबखानि ॥ प्राणतजेतबपार्थ सुत कटकरह्योभयमानि ९८॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायांअभिमन्युविमो हनोनामपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

दोहा ॥ अर्जुनआयोजीतिरण पश्चिमदिशिअवगा हि॥निरखिसशोक्योकटकसब अतिभयउपजीताहि १॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ सशोकेबिलोकेसबैरावराने। महादुः खसंयुक्ततेकोबखाने॥ न गावैंगुणी ना कहूंबन्दि गाजैं। बुधीशोनहींवेदविद्यासमाजैं २ मशालैंनदीसें नहींदीप देखैं। सबैशूरआतंकसोंचित्तलेखैं ॥ तबैपार्थजीमेंमहा त्रासआयो। तहांबैनश्रीकृष्णजूकोसुनायो ३ (अर्जुनउ वाच) दोहा ॥ बिलख्योदेख्योकटकसब अरुबिलख्यो सबसाथ ॥ जानतुहोंजूझ्योयहां धर्मपुत्रनरनाथ४कैरणजू झ्योभीमअब सबबिधिभयोअकाज ॥ पुरुषारथसबबलग यो गयोहाथतेराज ५ नृपतियुधिष्ठिरपैगये देख्योसब परिवार॥ पगबंदेकरजोरिकै अरुबूझ्योव्योहार ६ (अर्जु नउवाच) देखतसबहींकुशलसों कुशलसकलअवनीश॥ कौनहेत बिलखेसबै सोमोसोंकहिईश ७ लाज महा उर नृपतिके कह्योकछूनहिंजाइ॥ हरुवेंनृपबोल्योतबैबिलखि बदन अकुलाइ ८ (राजोवाच) कहों कहा कहत न ब नै भईअनैसीबात ॥ जूझिपर्योअभिमन्युरण दुखनज

रतसबगात ॥९॥ कपटयुद्धरचिद्रोणगुरु चक्रब्यूहबनाय ।
ताहितहमकोपार्थसुनि न्योतोदियोपठाय ॥१०॥ सोरणह
मजानैंनहीं रहेचकितनरनाथ । साहसकैअभिमन्युतब
बीरालीनोहाथ ११ पैठ्योबङ्कटकोटमें भीमआदिदैसाथ ।
द्रोणकरणकोदेखिकै धीरजुरह्योनहाथ १२ नकुलसहदे
वभीमको रह्योजयद्रथरोंकि । भयोसहायीईशबर रहेबि
लोकि बिलोकि ॥१३॥ कुँवरकरणसोंयुद्धकरि फेरिगिर्‌योमु
रझाय । लक्षिमनकोपिगदालई परेसुमार्‌योआय ॥१४॥
हाहाकरिसुनिकैगिर्‌यो तबहींपारथबीर । बीतएकमुहूरते
सुधिमेंभयोशरीर ॥१५॥ (अर्जुनउवाच) सहेबाणक्यों
द्रोणके क्योंकरिअँगयोयुद्ध । मुखचाह्योसुतकौनको कर
णभयोजबक्रुद्ध ॥१६॥ रोकिरह्योमगुजयद्रथ भीमनपायो
जान । निपटअकेलोपुत्रतव तिहिथलछांड़योप्रान ॥१७॥
चौपाई ॥ भीमसेनजोपावैजान । क्योंजूझनपावैसुनि
दान ॥ कह्योजयद्रथकोयहमायो । तातेमैंअबयहब्रत
लायो॥१८॥ आजुबैरुसुतकोहौंसारौं । अथवतभानु जयद्र
थमारौं ॥ जोपौरुषइतनोनहिंसाजौं । मातपितापांडुहि
हौंलाजौं ॥१९॥ सवैया ॥ मातपिताहिलजाउँमहा अरु
तीरथधर्मसबैब्रतहारौं । दोष बिनातरुणीहिंतजैं तिनकी
गतिपायनिरैपगधारौं॥ विप्रनकोअपमानकियेपातिसों त्रि
यबीचबिछोहाहिपारौं । एतिकपातकमोहिंलगैं पुनिजोन
हिंआजुजयद्रथमारौं २० हेमहरेद्विजदोषकरेअतिगर्वभ
रेगुरुमाननपावैं । मित्रकोद्रोहलयेपरचित्तसोंचित्तकुकर्म
निकेमगलावैं ॥ झूठियेसाखिजेआवतभाखि निएजक
हाअपस्वारथभावैं । जोनबधौंवरआजुजयद्रथ एतिक

पातकमोराशिरआवैं ॥ २१ ॥ दोहा ॥ करीपैंजहतिपार्थय
ह बहुदुखकरिरणधीर ॥ जबजान्योबिस्मयकरत चरित
रच्योयदुबीर ॥२२॥ मायाबपुअभिमन्युतब अर्जुनकोदर
शाइ ॥ सपनोसांचोजानिचित सम्भ्रमरह्योभुलाइ ॥२३॥
शिवपुरदेख्योपुत्रतब सपनेखेलतसारि ॥ चितयोसोइ
तमेंनहीं रह्योपार्थमनमारि ॥२४॥ रुदनकस्योसुतइन्द्रके
आंसूचलेअपार ॥ परेपुत्रकीपीठिपर चितैकह्योतिहि
बार ॥ २५ ॥ (अभिमन्युरुवाच) ॥ सोरठा ॥ कौनकौन
कोभाय तूमूरुखरोवैकहा ॥ सबजगआवतजाय कर्म
फांसबन्धनबँध्यो ॥ २६ ॥ कोमाताकोपूत कौनकहोकाको
पिता । बरधूतेंजगधूत कितयाकोसंशयकरो ॥ २७ ॥
॥दोहा॥ भग्योशोकतबपार्थको सुनतपुत्रमुखबैन ॥ इतने
निरखिचरित्रको उघरिगयेफिरिनैन ॥ २८ ॥ नाराच छ
न्द ॥ कह्योचरित्रकृष्णसों जोपार्थआपुदेखियो । रह्योभु
लायचित्तमें कछूबिषादनाकियो ॥ उठ्योसमर्थगाजिकै
बढ़्योसरोषचापसों । कस्योनिषङ्गकोपिकै करालकाल
भालसों ॥२९॥ त्रोटकछन्द ॥ कुरुराजसुनीयहबातजहीं ।
प्रकट्योगुरुसोंसबभेदतहीं ॥ कछुआपुनआजुबिचारक
रो । यहमोबिनतीचितमाहिंधरो ३० दिनएकजयद्रथरा
खिअबै । मगपूजहितोमनकाजसबै ॥ ब्रतआजुधनंजय
कोटरिहै । नरहैजगजीवतसोमरिहै ॥३१॥ कुरुराजकहैय
हमानिअबै । सुतपांडुअनाथबिचारिसबै ॥ तबहींनृपसों
गुरुद्रोणकहै । बलजाकहँराखहुकौनलहै ॥ ३२ ॥ दोहा ॥
द्रोणाचारजतबरच्यो शकटब्यूहबनाइ ॥ भेदभावजाको
कछू कहँनजान्योजाइ ॥ ३३ ॥ आगेसूचीअग्रसम रच्यो

विकटअतिब्यूह ॥ आसपासहाथीरथी राखेशूरसमूह
३४ यमहूँकोनप्रवेशजहँ दुर्गमदुसहसँवारि । नगकिन्नर
नहिंलहिसकैं रहैंसुरेशौंहारि ॥३५॥ भाग्योचाहतजयद्र
थ पैनहिंपावतजान ॥ राख्योशकटव्यूहमें तजौंअथाव
तभान ॥३६॥ चौपाई ॥ राख्योब्यूहमांझसोलाय । यम
हूँपैसोलख्योनजाय ॥ आसपासगजरथकीपांति । दुर्ग
मदुसहरच्योबहुभांति ॥३७॥ रचकद्रोणचमूपतिबीर । अ
तुलपराक्रमसाहसधीर ॥ गाज्योपार्थधनुषलैबान । सा
रथकीनोतबभगवान ॥३८॥ दोहा ॥ बाजेमारूजूझकै
अतिगतितबलनिशान ॥ भेरिशङ्खबहुध्वनिभई । करवर
गहेकृपान ॥३९॥ प्रथमयुद्धगुरुद्रोणसों असिबरबाजीमा
र ॥ नहिंप्रवेशअर्जुनलहै करतअमितसंहार ॥४०॥ मा
ख्योपरैनपार्थपै द्रोणविप्रबलबण्ड ॥ शरसमूहनभछायत
हँ संग्रमकियोअखण्ड ४१ ॥ गीतिकाछन्द ॥ पार्थकेरथकै
तुरङ्गनिछतनतिलतिलकैछये । दैसकेनहिंअग्रको पगुप
रमबिह्वलह्वैगये ॥ चाहिमुखश्रीकृष्णबोले बीरयहसुनि
लीजिये । अम्बुपीवैबाजिजैसेसोकछूबिधिकीजिये ॥४२॥
बाणछायअकाशअर्जुनगेहसोतबकरिलयो । मारिशर
सोंगंगकाढ़ीनीरअश्वनकोदयो ॥ फेरिकरिश्रीकृष्णजू
रथपैचढ़ेअकुलायकै । पांडुकोसुतद्रोणसों तबहींजुख्यो
रणआयकै ॥४३॥ दोहा ॥ बलकरिकैद्विजद्रोणके शरहति
चित्तभ्रमाय ॥ गयोपंथदैदाहिनो दलमेंपहुँच्योजाय ४४
भयोसमरनृपकर्णसों तिनहूँरणअघवाइ ॥ पेलिगयोचलि
अगमनो जयकोशंखबजाइ ४५ योजनतीनिगयोबली च
लहीकटकमँझार ॥ तहांजुख्योरणशकुनिसों संग्रमभयोअ

पार ॥४६॥ भयोकुलाहलशोरहै सुन्योकछूनहिंजाय। सु
न्योशंखनहिंपार्थको धर्मपुत्रबिलखाय ॥४७॥ चौपाई॥
पांचजन्यशब्दसुनिराई। मनहीमनबिलखैअकुलाई॥
सात्यकियादवपठयोतहां। संग्रमकरतपार्थहोजहां ॥४८॥
रथचढ़िधनुषबाणतिनलयो। प्रथमद्रोणगुरुआड़ोभयो॥
कह्योआदियादवरणआयो। मैंहीतुवगुरुपार्थपठायो॥
॥४९॥ घटिकाचारिकसंग्रमभयो। भूतलब्योमशरन
सोंछयो॥ दिशिबिदिशासूझैनहिंनैन। सात्यकिकहैवि
प्रसोंबैन ५० (सात्यकिउवाच) दोहा॥ जाहुविप्रअबभा
गिकै समरकरतबेकाज॥ जोनभगाऊँतोहिहौं तौगुरुपार्थ
हिलाज॥५१ बिषमबाणउरलगतही द्रोणगिर्‍योअकुला
इ॥ जहांहुतोभूरिश्रवा ताढिगपहुँच्योजाइ॥५२॥ का
प्योलखिभूरिश्रवा करलीन्हेदशबान॥ सात्यकिकेतिन
उरहये सुरपतिबज्रसमान॥५३॥ बहुतयुद्धतिनसोंभयो
कोकहिसकैसुनाइ॥ तबसात्यकिमोहितभयो धरणि
गिर्‍योअकुलाइ॥५४॥ गीतिकाछन्द॥ धायकैभूरि
श्रवा करकेशयादवकेगहे। क्रोधसोंझकझोरिकै बहुब
चनइहिबिधिकेकहे॥ आजुहीशठतोहिंमारौं तोहिंकौन
बचावई। आयकैअबनोहिंराखे ताहिक्योंनबुलावई॥
॥५५॥ दोहा॥ ताकबधहितखड्गलै भुजाउठाईबीर। नि
रखिपार्थबहुक्रोधकरि बाणहन्योरणधीर॥५६॥ दोधक
छन्द॥ दक्षिणबाहुसखड्गउड़ानी। टूटिपरीसबरेदलजा
नी॥ छूटिगयोतबयादवऐसे। केहरितेमृगछूटतजैसे॥५७॥
यादवकोपि कृपाणसम्हार्‍यो। को बरणैबलहीअरिमा
र्‍यो॥ काटितबैशिरभूतलडार्‍यो। ज्योंद्विजयज्ञनमेंपशु

मास्यो ॥ ५८ ॥ नगस्वरूपिणीछंद ॥ नधीरसेनमेंरहौ। नजायसोकछूकही ॥ सशोकवंतह्वैगये । नरेशदुःखसोंछ ये ५९ ॥ दोहा ॥ पहुँच्योअर्जुनपासतबसात्यकियादवजा य॥हत्योबलीभूरिश्रवाकुरुनंदनपछिताय ६० ॥ सोरठा॥ कह्योयुधिष्ठिरराय भीमसेनकोबोलिकै ॥ सुधिल्यावहुतहँ जाय जहांपार्थसंग्रमकरै ६१ त्रोटकछंद ॥ करबाणश रासनभीमलयो। तबपारथकीसुधिलेनगयो ॥ तहँमारग मेंद्विजद्रोणलह्यो। तिनदेखतहीइमिबैनकह्यो ६२ फिरि जाहुघरैनहिंबाटलहौ । ममबाणनहींक्षणएकसहौ ॥ सु निकैदुहुँबीरनयुद्धकियो । धरभूतलबाणनछाइलियो ६३ तबहींरणभीमहिंक्रोधभयो। गुरुकोरथबीरउठायलयो॥प टक्योधरणीथलमेंजबहीं।नरह्योभगिविप्रगयोतबहीं ६४ दोहा ॥ रथकेबाजीभीमतब क्षणहीमेंसंहारि ॥ बढ़्यो क्रोधषोड़शकुँवर तबहींडारेमारि ६५ कोपेदूधरदुष्टबल सुबलसुबाहुप्रचंड ॥ सोमकलिंगअशेषरण जिनजीतेब लबंड ६६ भीमसेनरणकोपिकै इकइकशरसबमारि ॥ औररथीरणधीररण डारेबहुतसँहारि ६७ चल्योपूररण शोणको कोकबिकहैबखानि ॥ भागिचलेबहुशूरगण जुरे नक्षणभरिआनि ६८ ॥ दंडकछंद ॥ शोणितसलिलमा हिंकीनेकेकरासेशीश श्यामश्यामकेशतेसिवारऐसेलेखि ये । व्यालह्वैविशालशुंडदंडनिकेजालजहांग्राहकेकरीन के कलेवरबिशेखिये ॥ कच्छपतिरतचर्मचक्रवाकच क्ररथ चामरपताकागणमीनअवरेखिये । पवनपूतक्रोध ह्वैसमरसिंधुसांच्योरच्यो फूलनमरालबगमालाद्विजदे खिये ॥ ६९ दोहा ॥ भूतलडारेमहारथी आगेपहुँच्यो

जाय ॥ निरखिशगसनबाणलै करणउठ्यो अकुलाय ७०
(कर्णउवाच) जीतेकेतकसमरतैं भीमकहांअबजाय ॥
जीवनदुर्लभजानिबश पर्योहमारेआय ७१ भीमकरण
केउरहये सप्तबाणकरिक्रुद्ध ॥ धनुषकाटिरबिपुत्रतब हद
यहन्योशरशुद्ध ७२ ॥ चौपाई ॥ फेरिक्रोधरबिनंदनभ
यो । कवचभीमकोतबकाटिगयो ॥ धायोभीमउघारेअंग।
कीनोजायतहांरणरंग ७३ रथआरूढ़पवनसुतभयो ।
रबिसुतकेउरमुठिकादयो ॥ भूतलगिरिसोउठिअकुला
ई। मेल्योधनुषभीमशिरआई ७४ बारबाररिसमोंझक
झोरयो । ऐंच्योकइथोबारकढ़ोरयो ॥ भीमसेनकोपौरुष
गयो । करणशक्तिअतिब्याकुलभयो ७५ दोहा ॥
करिसुधिकुंतीबचनकी भीमदयोनुकुराय ॥ बिलखिबद
नचलिपार्थपै तबहीं रहुँच्यो जाय ७६ देख्योपौरुषपार्थ
को तबकुरुनंदनराय ॥ सोलहसहसमतंगतहँदीनेतुरतप
ठाय ७७ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ चलेमत्तमातंगतेअग्र
आये । मनोभूतलीमेंमहामेघछाये ॥ तहांपांडुकेपुत्रचिं
ताभ्रमाये । सखीकेहियेमेंमहात्रासलाये ७८ हियेशोच
शोचैगयोनेममेरो । रह्योआसराहैदयासिंधुतेरो ॥ सदा
आपहोदीनहीकेसहाई । परीभीरभारीसबैसोनशाई ७९॥
दोहा ॥ कहीभीमसोंपार्थतबअबबलवंतसम्हारि ॥ कातर
लोंअतिशिथिलतनु कहारह्योहियहारि ८० योंसुनि
गाज्योसिंहज्यों आकंपेमातंग ॥ बिचलिचलेमृगयूथ
ज्योंसूखिगयेसबअंग ८१ उठ्योभीमबलबंडतब कह्यो
नपौरुषजाय ॥ एकबारदशसहसगज ऊरधदयेचलाय
८२॥ सवैया ॥ एकरथीरथमंतमहा इकएकहतेबरबीर

निखंगी । तेउजुरेनहिंआयुधलै जुहतेवलाबिक्रमसत्रके भंगी ॥ मत्तमतंगतजेनभक्षोविरच्योरण भीमसदारण रंगी । पौनकेचक्रमेंजायपरे सबद्वैगहेअंगत्रिशंकुकेसं गी ८३ दोहा ॥ जेतिकगजऊरधतजे फिरिभुवगिरेन आय ॥ सहसपंचगजदूसरे ऊरधदयेचलाय ८४ लंक पौरिपरतेगिरे कछुककन्दरनमांझ ॥ सहसमतंगगदाह ने जानिनीयरगिसांझ ८५ दुर्योधनकेअनुजतहँ तीसहने बलबीर ॥ पैरतरथजलजन्तुसे शोणितसलिलगँभीर ८६ हयहस्तीरथभंजिकै दीनेदलबिचलाय ॥ निकटज यद्रथपार्थतब पहुंच्योबलहीजाय ८७ सूक्षमनिरख्यो द्योसतब बारबारअकुलाय ॥ उतहिजयद्रथनिशिचहैं निरखिनिरखिरबिजाय ८८ ॥ दोधकछंद ॥ द्यौजनको मनशोचतऐसे । हैतरुणीचकईमनजैसे ॥ रैनिचहैवह द्योसहिचाहै । योंतिनकेमनमेंमनसाहै ८९ ताकतभानु जयद्रथदेख्यो ॥ पार्थतबैनिजकाजबिशेख्यो ॥ अंजलि बाणधनंजयलीनो । ताक्षणहींअरिकेशिरदीनो ९० ॥ दोहा ॥ उठ्योबाणकेसंगशिर कोकबिकहैबनाय ॥ पख्यो तासुपितुअंजली निरखिगिख्योअकुलाय ९१ ॥ चौपाई ॥ जबहींशिरअंजुलिमेंगयो । निरखतशोकवन्तसोभयो ॥ कौरवदलमेंअतिभायभारी । परेऔंधमुखनरअरुनारी ९२ हाहाकुरुनन्दनअनुसरै । कोऊकाहूधीरनधरै ॥ पू रिपैजपारथकीभई । हरिअर्जुनशंखध्वनिठई ९३ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविर चितायांजयद्रथवधनअर्जुनविजयवर्णनो नामषटत्रिंशो ऽध्यायः ३६ ॥

दोहा ॥ जूझ्योजनिजयद्रथै दुर्योधनह्वैक्रुद्ध ॥ तुरत हिरथऊपरचढ़्यो चल्योयुद्धकोक्रुद्ध १ ॥ सुन्दरीछंद ॥ सूर्यछिप्योतमरैनिभईतब । गाजिमहारथमंतउठेसब ॥ देखिघरूकाहिक्रोधबढ़्योअति । व्योमगयोबहुशूरनकोहति २ रैनिभईनतहांकछुसूझत । आपनेबाणनलैभट जूझत ॥ युद्धभयोकबिकौनबखानहि । द्वैदलमेंकोउहारिनमानहि ३ ॥ दोहा ॥ तजतघरूकाऊर्ध्वते गिरिवरशिखरअपार ॥ शरतरफरसाशक्तिसों करतअमितसंहार ४ ॥ चौपाई ॥ भयोअंधेरोनाकछुसूझत । जलथलकौरवकोदलजूझत ॥ नारदमुनिमशालदरशावैं । दलसंहरतमहासुखपावैं ५ अर्द्धरैनिलौंबीतीमार । द्वैक्षोहणिदलकियेसँहार ॥ दलकोनाशजानिकुरुराय । कह्योकरणसोंतबअकुलाय ६ (दुर्योधनउवाच) ॥ दोहा ॥ ह्वैअदृश्ययहव्योमते बरषतगिरितरुजाल ॥ प्रलयकरतसबदलहन्यो कीनोकर्मकराल ७ आनीशक्तिजोपार्थहित तासोंताहिसंहारु ॥ बूड़तरणकीधारमें यहदलबीरउबारु ८ शक्तिप्रहारकियोकरण जानिकटककोनाश ॥ गिरोऊर्ध्वतेबीरधर भयोसकलदलत्राश ९ बज्रपातसोंधरपर्‌योगिरिसेसुभटगिराइ ॥ हन्योखूंदिइकक्षोहिणीदलसबचल्योपराइ १० जूझिघरूकाधरपर्‌यो पांडुपुत्रदुखपाइ ॥ रुदनकरततबहँसिउठे श्रीहरिबहुसुखपाइ ११ समाधानकरियोंकही पार्थजियोहैआज ॥ गईजुशेखीकर्णकीअबसीझ्योसबकाज १२ भयोद्योसतबत्रयोदशिजबबीत्योइकयाम ॥ उठ्योद्रोणतबगाजिकै कियोअमितसंग्राम १३ चौपाई ॥ पांडवसेनचल्यो

अकुलाय। काहूपासनराख्योजाय॥ नृपतिविराटतीस
शरहयो। इनकरिक्रोधशरासनलयो १४ तीनबाणगुरु
केउरमारे। काटिपताका औध्वजडारे॥ एकबाणउरमें
तबहयो। लागतद्विजब्याकुलह्वैगयो १५॥ दोहा॥ बहुरि
सम्हारोद्रोणगुरु शायकहन्योललाट॥ बासलियोहरि
लोकतब जूझ्योभूपविराट १६ जबहींभुकिधरणीगि
स्यो करबरगहेकृपान॥ रोक्योद्रुपदनरेशगुरु लहैनआ
गेजान १७ सहदेवधायोनकुल पार्थयुधिष्ठिरआप॥ ज
गमंडलनवखंडमें जाकोअमितप्रताप १८॥ त्रोटकछं
द॥ चहुंओरानितेगुरुघेरिलयो। तबदेखतहीबहुरोषभ
यो॥ सबकेउरमेंबहुबाणहने। मुरझायगिरेकबिकौनभ
ने १९ (अर्जुनउवाच) जगबंदनदैशिषमोहिंअबै। र
णजीतहिंज्योंबरआजुसबै॥ तुमहींबिपदासबठामहरी।
मनकीबहुपूरणआशकरी २०॥ कवित्त॥ त्रिभुवनईश
जगदीशसोंकरनजोरि नायनायशीशपार्थबंदनामहाक
री। काटिकाटिकोटिकोटिसंकटअनेकभांतिभांतिभांतिज
ननकीआपदासबैहरी॥ भारीभारीभीरभवजहांजहांजा
नीभयतहांतहांपैजकहूंसेवककीनाटरी। अमितअपारब
लसंतनकेरखवार गावतनिगमनवकीरतिघरीघरी २१
(श्रीकृष्णउवाच) नाराचछन्द॥ तजैकृपाणबाणद्रो
ण पुत्रजोमस्योसुन्यो। कोटिधौंकरालशोक दुःखह्वैहि
सौगुन्यो॥ सरोषभीमसेनआज हाथजोगदाधरै।
तुरंतद्रोणपुत्रनामकोमतंगसंहरै २२॥ दोहा॥ अश्व
त्थामानामगज हन्योभीमकरिकोह द्रोणहोइबिह्वलसु
नतबढ़ैहियेबहुछोह २३ बैनयुधिष्ठिरनृपकहै तबहिंवि

प्रपतिआइ॥ तजैसकलआयुधसुनत अतिबिह्वलह्वैजाइ २४ द्रुपदपुत्रधृष्टद्युमन तबहींकाटैशीश॥ यहउपायकरिजीतिहौ बोलेत्रिभुवनईश २५ द्विरदअश्वत्थामाहन्यो भीमसेनतिहिबार॥ हन्योद्रोणतबपत्रमैं अबतकगहैहथ्यार २६ द्रोणनहींरणकोतजै बैनसुनैनपत्याय॥ तौमानैं मनबचनक्रम कहैंयुधिष्ठिरराय २७ तबैप्रचाख्योधर्मसुत कहिगुरुतजेकृपान॥ बंधुनहितबोल्योतबै भूपतिबुद्धिनिधान २८ (युधिष्ठिरउवाच) समरअश्वत्थामाहन्यो भीमसेनसुनविप्र॥ नरनारीकुंजरहत्यो कहीनृपतियहछिप्र २९ (त्रोटकछंद) यहबैनसुन्योगुरुद्रोणजहीं। बहुब्याकुलह्वैगिख्योभूमितहीं॥ समुभावतकौरवसोनसुनै। बहुब्याकुलह्वैद्विजशीशधुनै ३० ॥ सोरठा ॥ तबगुरुतजेकृपाण धृष्टद्युम्नअवलोकिकै॥ शिरकाट्योतिहिबाण धर्मपुत्रकीजयकरी ३१ ॥ दोधकछंद॥ दुर्योधनकेदलदुचिताई। मोपैछत्रकहीनहिंजाई॥ बुद्धिथकीसुधिकीगतिथाकी। आशथकीमनमैंनृपताकी ३२ दोहा॥ धर्मपुत्रजयरणभई गहरेबजेनिशान॥ कख्योचमूपतिकरणतब दुर्योधनमैमान ३३॥ इतिश्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंहविरचितायांद्रोणगुरुबधोनामसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ इति॥

अथकर्णपर्व्वकथनम्॥

सोरठा॥ दलपतिकीनोकर्ण दुर्योधनअपनेसुप्रण॥ जनजनकोदुखहर्ण षटदरशनकोकलपतरु १॥ दोहा॥ चढ्योकर्णरणधीरतबकरलीनेधनुबान सुरनरगणकेतासुकी पटतरनाहींआन २ शल्यकियोरथसारथी पारथ

जीतनकाज ॥ कृतवर्मालिन्हिमनचढ़े लेसँगशकुनिसमाज
३ दुश्शासनरत्तकभयो कर्णसंगसुखपाइ ॥ यूथयूथ से
नाचली गरजिनिशानबजाइ ४ अर्जुनअर्जुनकहतभट
आयेरणगलगाजि ॥ बांधिलेउबरआजुही जाननपावैंभा
जि ५ सजेकवचसन्नाहतनु बाणशरासनहाथ ॥ बीरदु
शासनआदिदै सबधायेइकसाथ ६ भीमदुशासनदेखि
कै परमक्रोधसोंधाय ॥ धरिकैपटक्योभूमिपर दैग्रीवापर
पाय ७ (भीमसेनउवाच) सवैया ॥ हैकोउकौरवमेंस
मरत्थदुशासनकोबरआनिछुड़ावै । रेकुरुनन्दनरेरबिनंद
नसोकरुजोतोपैबनिआवै ॥ शूरघनेरणरोवतदेखतजूझ
करैसबयोंमनभावै । कालहुतेउबरैभजिजीवतजीवतसों
भजिजाननपावै ८ ॥ दोहा ॥ द्रौदलमेंसमरत्थजो या
कोलेहिछुड़ाइ ॥ पाछेकहिहौंबालकन देखतराजाराइ ९
शंखध्वनिहरितबकरी ततक्षणहीअकुलाय ॥ बचनभीम
कोपार्थसुनि तबहिंयुधिष्ठिरराय १० कौरवदलकछुना
कर्‍यो लीनीभुजाउखारि ॥ केहरिज्योंमृगकोउदर त्योंउ
रडार्‍योफारि ११ ॥ सवैया ॥ ज्योंरघुनाथहन्योरणराव
ण जंभकिधोंसुरराजपछार्‍यो । राघवबीरबध्योबाणासुर
तीक्षणबाणसमूलप्रहार्‍यो ॥ कैत्रिपुरारिहन्योबरराक्षस
एकहिबाणउरस्थलफार्‍यो । ऐसहिभीमदुशासनमारि
तबैमनकोवहरोषनिकार्‍यो १२ कोपिकैबीरबलीबलसों
दुश्शासनहैदलबीचसँहार्‍यो । केहरिज्योंमृगदौरिदल्यो
सुरराजकिधौंभुवपर्वतफार्‍यो ॥ ज्योंहनुमंतबलीबलसों
महिरावणकोभुजमूलउपार्‍यो । त्योंनरसिंहसक्रोधभयो
हरिणाकुशकोजोउरस्थलफार्‍यो १३ ॥ दोहा ॥ मनमा

योकरिफारिउररुधिरअञ्जलीचारि ॥ अँचैभीमप्रफुलितभ
यो मनकोरोषनिकारि १४ औररुधिरभरिअञ्जली लैकै
पहुँच्योधाम ॥ जायन्हवाईद्रौपदी सबपूजेमनकाम १५ ॥
सोरठा ॥ यशहैजीवनमूरि इहिपुरअरुवहिपुरसुखी ॥
तेसबह्वैहैंधूरि द्विजदोषीअरुअपयशी १६ ब्यालबसैजि
हिगेहपरदारारतजेपुरुष ॥ निश्चयजानोंयेह मृत्युमाहिं
संशयनहीं १७ छ्वैपरतरुणीचीरसबजगमेंअपयशलियो ।
मरयो दुशासनबीर देखतसकलमहारथी १८ ॥ चौपाई ॥
द्रुपदसुतातबरुधिरन्हवाई । रणमंडलसोपहुँच्योजाई ॥
नकुलशकुनिसोंरणभोघनो । जुरेअसुरअरुसुरपतिमनो
१९ बाणनमारिशकुनिबिचरायो । बेध्योउरवरभूमिगिरा
यो॥ जूझतशकुनिकुलाहलभयो । हाहाशब्दसकलदलछ
यो २० ॥ दोहा ॥ भयोद्रुपदअरुकरणसों अतिगतिकरिसं
ग्राम ॥ जूझेभटद्वैसेनके बरणिसकैकोनाम २१ कर्णद्रुपदन
रनाथकेउरमारेदशबाण ॥ कौनकहैतिनधरणिधुकिततत्क्ष
णछांड़ेप्राण २२ ॥ दण्डकछन्द ॥ धीरतजेबीरसबैब्याकु
लशरीरह्वैकै संग्रमगँभीरबीरकर्णसोमहारथी । शूरकहला
नेदहलानेदलदीरघजे हाथीहहलाने शंकजायकौनपै
कथी ॥ यत्रतत्रशत्रदाहदुर्घटबिकटभट काटिकाटिकीने
कालदण्डलोककेपथी । कहूंगिरेअश्वकहूंपायकपताका
रथकहूंगिरेरथीकहूंमहिगिरेसारथी २३ ॥ दोहा ॥ क
रणपराक्रमकैबढ़्यो नहींसुरोक्योजाय ॥ कटकत्रासउर
जानिकै रुप्योपार्थरणआय २४॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे
विजयमुक्तावल्यांछत्रसिंहविरचितायां दुश्शासनश
कुनिराजाद्रुपदवधवर्णनोनामअष्टत्रिंसोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

त्रोटकछन्द ॥ रविनंदनपार्थजुरेरनमें। बहुक्रोधदुहूं
जनकेमनमें॥ अतिसंग्रमभोकविकौनकहै । शरजालन
कोतहँपौनबहै १ धरऊरधबाणनछायलयो। छपिसूरत
हांतमछायगयो ॥ अतिअद्भुतविक्रमकौनकहै। सुरवेल
खिलाखनिभूलिरहै २ ॥ दोहा ॥ बाणचलेदुहुंबीरके
योजनएकप्रमान ॥ वैसेईयेयुद्धको पटपरनाहींआन ३
अस्त्रशस्त्रसोंपरस्पर समररचतदोउबीर ॥ जुरिजुरिक्यों
हूंसरसमहि दोऊरणरणधीर ४ आयोबासरतीसरो क्यों
हूंरणउसरैन ॥ सुरअसुरनयहकर्मकहुं सुन्योनदेख्योनै
न ५ कबछांड़्योकबशरलयो सोनपरैकहुंजानि ॥ मंड
लीककीनोधनुष थकेनक्योंहूंपानि ६ रह्योकरणकेतूण
में बाणह्वैगयोब्याल ॥ धर्योधनुषबलबंडसो छांड़ि
दियोउत्ताल ७॥ दोधकछंद ॥ आवतसोअहिश्रीहरि दे
ख्यो। पारथकालहियेमहँलेख्यो ॥ दाबिकियोतबहींरथ
नीचो । शीशबच्योलहिसूत्तमबीचो ८ काटिकीरीटहि
लैगयोसोई । सेनसमूहत्रसेसबकोई ॥ फेरिसोब्यालस
रोषितधायो। कर्णनिकेततबैचलिआयो ९ (सर्पउवाच)
दोहा ॥ निजअरिमोरोपार्थहै करणसोबुद्धिनिधान ॥
हनोंशत्रुतुममोहजो करिकैछोड़ोबान १० (कर्णउवाच)
हौंसमरथपार्थहिहतौं चाहौंनहींसहाय ॥ कह्योनमा
न्योसर्पको वहकरिथक्योउपाय ११ ॥ चौपाई ॥ कटक
सुकटपारथरिसभर्यो । खुरपबाणधनुयोजितकर्यो ॥
बलकरिरबिनन्दनशिरहयो । टोपाकाटिपारसोभयो ॥
१२ दोऊरोषवंतबरबीर । करतयुद्धनहिंश्रमितशरीर
तजततनरणशिरछूटेकेश । दोऊघोरअसुरकेवेश १३ ॥

गीतिकाछन्द ॥ शल्यसोंनृपकर्णभाष्यो क्योंनरथबरबाह
ई। सुनतसारथिरोषकीनो भूमिअबबैरिनिभई ॥ गिले
रथकेचक्रधरतीथकितह्वैचलिनासक्यो । बारबारअशे
षउद्यम कियेसोकरिकैथक्यो १४ शापपूरबजन्मदीनो
विप्रबहुदुखपायकै । गिलेरथकेचक्रधरणी रह्योसंभ्रम
छायकै ॥ कवचकुंडलइन्द्रलीने बाणकुंतीलैगई । भईबैरि
निभेदिनीचितकर्णकेचिंताभई १५ (कर्णउवाच) दोहा॥
क्षत्रीधर्मबिचारिउरक्षणइकसमरनिवारि ॥ सुन्योपार्थजो
लौंरथैभुवतेलेहुँनिकारि १६ (श्रीकृष्णउवाच) सवैया॥
पौनकोपूतबहायदियोजल भोजनमांझहलाहलडारयो।
गौवेंहरींजबभूपबिराटकि जायतहांबहुसांकरोपारयो ॥
करीनकछूमर्य्यादकिबात जबैसुतधर्मकोदेशनिकारयो ।
द्रौपदीकोखलचीरगह्यो तबपापकियोतुमधर्मबिचारो ॥
१७ ॥ दोहा ॥ करैनिहोरोक्योंजियो तातेकीजैयुद्ध ॥
ज्योंपावकमें घृतजलै भयोकरणअतिक्रुद्ध १८ कोपिश
रासनकरलयो चलेकरणकेबान ॥ हनतपार्थमोह्योमहा
भूतलपरयोनिदान १९ बलकरिकाढ्योकन्धदै भुवतेर
थसबिलास ॥ बहुरिबृष्टिशरकीकरी छायोधरआका
स २० ॥ दोधकछन्द॥ चेततहीउठिपारथधायो। करण
लख्योनियरोजबआयो ॥ सारथिसोंबिनवैतबऐसे । हां
कुरथैरणजीतहूंजैसे २१ फेरिधरारथचक्रगिल्योहै । सो
बरठेलतहूनठिल्योहै ॥बारहिंबारमहाझकझोरयो । भू
मिहलीअहिकोशिरटोरयो २२ पारथक्रोधकियोबहुधा
हीं । बाणहन्योरिपुकेउरमांहीं ॥ जूझिपरयोरविनन्दन
ऐसे । बज्रहन्योसुरनेगिरिजैसे २३ चामरछन्द ॥ हाय

हाययत्रतत्रह्वैरहीजहांतहां। देवलोकभूमिलोककर्णसो रथीकहां॥ सैनताबिनाभयोअशेषभांतिदीनसो। अन्ध पुत्रभोमहाविशेषदुःखलीनसो २४॥ दोहा॥ भागिच लेसबशूरगण कर्णपस्योरणदेखि॥ दुर्य्योधनतबआप नी मृत्युगिनीसुविशेखि २५ अहंकारयुतजबकस्यो द लपतिशल्यजुझार॥ पायरजायसुबेगिहीकोपिकस्यो किरवार २६ लोभिगयोदिनकरजहांकर्णपस्योरणदेखि॥ रुदनकरतगन्धर्वसबसुरशोकेसबिसेखि २७ नैनहीन अम्बुजबदनयौवनत्रियशृँगार॥ त्योंहींकौरवदीनदल कोकहिथम्भनहार २८॥ सवैया॥ चन्द्रबिनारजनीरज नीपति रैनिबिनाद्युतिमन्दअनैसो। नीरबिनासरनैनबि नानर धामधनौबिनदेखियजैसो॥ नीरबिनामुक्ताहल सो अरुदीपबिनारजनीतमजैसो। त्योंहींशृँगारबिना युवती नृपकर्णबिनादललागततैसो २९॥ दोहा॥ पस्योदेखिनृपकर्णको विप्ररूपधरिआय॥ दुर्बलअति ह्वैकैकह्यो नृपतिकर्णसोंजाय ३०॥ चौपाई॥ दारिद्र हिबहुभांतिसतायो। याचनतोहिंयहांहौंआयो॥ कर्ण सुन्योजगमेंबड़भागी। ताकोचित्तभयोअनुरागी ३१ (कर्णउवाच) पाहनलैकरविप्रसयाने। मोरदभंजनशं कनआने॥ बेगिकरहुयहबारनलावहु। लैसोइकञ्चन धामसिधावहु ३२ (श्रीकृष्णउवाच)॥ दोहा॥ साधु साधुतूकर्णनृप पटतरदीजैकाहि॥ तोसोंतुहीनदूसरो जगमेंकोऊआहि ३३ (कर्णउवाच) विप्रनहितकंचन दियो सुनियेविप्रसमान॥ निजत्रियरतियौवनगयो स्वामिकाजगेप्रान ३४ आदिअन्तजाकोनहीं सबज

गब्यापकश्राय ॥ भईसकलमनकामना तिनकोदरशन पाय ३५ ॥ श्लोक ॥ कृपायुक्तस्तदाकृष्णो यत्रकर्णोर णेहतः । जीवकर्णसहस्रेण योदतेकृष्णवोपुनः ३६ वृद्ध ब्रह्मणरूपेण कृष्णस्तुस्वयमागतः । विप्रोहंकर्णराजेन्द्र दारिद्रंबहुव्यापते ३७ पाषाणंगृहणेविप्र दन्तम्भञ्जयतेम म । सवाभारसुवर्णश्च यथात्वंरणउच्यते ३८ (श्रीकृ ष्णउवाच) साधुसाधुमहावाहो सर्वशास्त्रविशारद । दा तारसमकर्णस्य पृथिव्यांनप्रजायते ३९ (कर्णउवाच) विप्रार्थेनधनंक्षीणं स्वदारागतयौवनम् । स्वामिकार्य्यं गताप्राणा अन्तकालेजनार्द्दनम् ४० ॥ दोहा ॥ कर्णपर्‌यो दिनतीसरे जवबीतेद्वैयाम ॥ समरभूमिउद्यतभयो श ल्यकियोसंग्राम ४१ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमु क्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायांकर्णवीरसंमोहनोना मऊनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥ इति श्रीकर्णपर्व्वस माप्तम् ॥

अथ शल्यपर्व्वकथनम् ॥

दोहा ॥ शल्यशूररथश्रारुह्यो करलीनेधनुबान ॥ जीत्योचाहतशल्यको साजतसमरबिधान १ द्रोणकर्ण भीषमहते रणजितबारअनन्त ॥ जीत्योचाहतशल्यरण आशाबहुबलवन्त २ ॥ दोधकछन्द ॥ अर्जुनकोरथ बाणनछायो । सेनघनोबलकैबिचलायो ॥ धूरिउड़ीउ ठिअम्बरलोप्यो । शल्यतहांजभिकैपगरोप्यो ३ द्वैदल मेंनहिंसूभतकोऊ । सन्मुखयुद्धजुरेभटदोऊ ॥ शूरघनो करिपौरुषजूभत । काहूकीकोउबातनबूभत ४ ॥ दोहा ॥ जरासन्धकोपुत्रतब दुरासन्धतेहिनाम ॥ सहितआपने

सैनसों जूझिपस्योसंग्राम ५ दुरासन्धजूझोलख्यो नकु
लपरजख्योबीर ॥ हन्योसुशर्माक्रोधकरि जूझिपस्योरण
धीर ६ ॥ चौपाई ॥ नृपतियुधिष्ठिरकोप्योआप। जाको
जगमेंबड़ोप्रताप ॥ असुरहिडम्बआपकरहयो। बिना
जीवपरिभूतलगयो ७ एकघरीदिनलगिरणकस्यो। भूप
युधिष्ठिरसोसंहस्यो ॥ दौस्योपवनपूतबलबण्ड। कीनो
तिनसंग्राम अखण्ड ८ ॥ छप्पय ॥ शूरहनेरणधीरहनेरथ
वन्तबीरबर। कहूँहने गजराजगिरेकटिकुम्भचरणधर ॥
गिरेसारथी अश्व गिरे कहुँछत्र चमरधर। कहूँ गिरेध्वज
दण्ड कहूँथरहर पायकनर ॥ बीस कुँवर कौरव तहां भी
मसेनबरसंहरे। काटिदियो बनकदलिज्यों थलथलभट
दीसतपरे ९ ॥ दोहा ॥ सबकौरव निन्यानबे हनेभीम
बलबण्ड ॥ दुर्य्योधन एकैबच्यो भोसंग्राम अखण्ड १०
सहदेव अरुशल्यसों संग्रम भयो अपार ॥ को बरणै
बिधिपरस्पर करत अमित संहार ११ ॥ चौपाई ॥ सह
देवकर असिवरलयो। शल्यसारथी तब तिनहयो ॥ तो
स्योरथ अरुहने तुरंग। कीनोघावशल्यकेअंग १२ मा
स्योशीशटूटिधरपस्यो। दुर्योधन थरथरथरहस्यो ॥ भजे
शेषभटआयुधडारि। कितचले भटहियराहारि १३ ॥
दोहा ॥ कुरुनन्दनतेहिथलरह्यो निपटअकेलोआप॥हती
चमूचतुरंगसब जाको अमित प्रताप १४ ॥ छप्पय ॥
छप्पनयोजनछत्र छाहँजाकीधरमण्डहि। दुर्गमदुसहदु
रन्तअदण्डनिबलकरिदण्डहि॥ बन्धुकुटुम्बअशेषसकल
किंकरचहुँओरहि। सबजग अमितप्रताप तापत्तत्रिन
छितिछोरहि ॥ बहुछत्रचवँरगज बाजिरथदलवरदीरघ

पेखिये । सोइभूमिभूप कुरुराजरण निपटअकेलोदेखिये १५ ॥ सोरठा ॥ होनीहोय सो होय नहीं मिटावैईश सो ॥ ताते जगसब कोय संशय चित्त न आनिये १६ जोराचोकरतार सोईसोईह्वैरहै ॥ यहै बात सब सार मूरुखजोसंशयकरै १७ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यांकविछत्रसिंह विरचितायांसुशर्मा शल्यबधोनामचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥ इति श्रीशल्यपर्वसमाप्तम् ॥

अथ गदापर्व्वकथनम् ॥

चौपाई ॥ राजानिपटअकेलोभयो । मन्त्रजपनजलभीतरगयो ॥ जपनचारिघटिकाजोपावै । तो अपने सब सेनजियावै १ यहसुधिपाये पाण्डवधाये । जलमें भूपहुतोजहँआये ॥ कहौंकहांदुरिकुरुपतिगयो । सो नहिंहमैं सामुहेभयो २ (भीमसेनउवाच) दोधकछन्द ॥ तौलगिकेतिकभूपतिकाये । नामकछूनहिंजातगनाये ॥ ताथलजूझिपरेसबतेई । क्षत्रीजेबलवन्तहुतेई ३ तौउरहैइतनोडरुपैठ्यो । तूदुरिकैजलभीतरबैठ्यो ॥ क्षत्रियधर्मबिचारि हिये में । शोचकछू नहिं आपकिये में ४ जो भजिबीरपतालहिजाई । तौनबचै अब मोपहँ भाई ॥ भूमिपतालसँहारौंतोहीं । शपथमहीपति पाण्डुकिमोहीं ५ ॥ दोहा ॥ हनेबीर निन्यानबे तूकत उबरै भागि ॥ जौ लगितोहिंहनोंनहीं नवै न तामसआगि ६ ॥ चौपाई ॥ पाण्डुसुतनमें तोहिंजोभावै । सोईतोसों रणको आवै ॥ जोई आयुधतूकरधरिहै । ताहीसों सो तोसों लरिहै ७ अब जो क्षत्रिय धर्म न गहिहै । सब जगमें उपहासहि सहिहै ॥ सुनत बैन भूपति परजरयो । ज्यों घृतमांझ हुता

शनपर्यो ८ रोषवंतकेहरिसोकढ्यो । रोषदेखि भीमहिंउर
बढ्यो । बज्रपातसममुष्टिकमार्यो ॥ कौतुक देखत बंधव
चार्यो ॥ ९ ॥ नगस्वरूपिणीछन्द ॥ सरोषह्वैदुहूंजुरैं ।
न भांति भांति तेमुरैं ॥ अशेषयुद्धसाजहीं । न रोषछांड़ि
भाजहीं १० ॥ दोहा ॥ गिर्यो बार दश भीम धुकि मोहि
मोहिबलबंड ॥ सप्तबार भूपति गिर्यो करि संग्राम अखं
ड ११ कोऊ बीरकरै नहीं भूपरगिरे प्रहार ॥ भिग्तअ
मितगतिको कहै तारणको विस्तार १२ (दुर्योधन उवा
च) सुन्दरीछंद ॥ ढीठभयो तूकत रण ठानत । मोहिं न
तूअपनेउरआनत ॥ बालकमारिकितो बलबोलत । कै
यहबिक्रमफूल्योडोलत १३ जीवतक्यों उबरै अब मोपै ।
युद्धकरोबनिआवैतोपै ॥ बंधवतेरेइतोहिं सराहत ।
भांतिनभांतिनतौंमुखचाहत १४ डारिगदाभगिजायन
क्योंअब । जीवतछांड़ौंनतोहिंइहांजब ॥ द्वैमेंहारिन को
ऊमानत । भांतिअनेकनयुद्धहिठानत १५ ॥ दोहा ॥
हियहार्योतबपवनसुत बिलखेबन्धवचारि ॥ फेरिसम्हा
र्योदेहतिन जबभुकि कह्योमुरारि १६ (भीमसेन उ
वाच) सकलदेव नरदेवके जोपीछे दुरिजाय ॥ तऊ न
छांड़ौंतोहिंहौं कोटिककरौ उपाय १७ सैनदई श्रीकृष्ण
तब भीमहिं चितवत जानि ॥ तबरिसायकै उठिचल्यो
ठोंकिजंघसोंपानि १८ ॥ चामरछंद ॥ सैनजानि भीमसेन
जंघमेंगदाहनी । मोहिमोहिभूमिमें गिर्योसुभूमिकोध
नी ॥ बेगिदैमहीपधर्मपुत्रपास आइयो । देखिदेखिसोथ
लीअशेषदुःखपाइयो १९ (राजोवाच) ॥ छप्पय ॥ जा
भुजभीषम करण द्रोण भगदत्त सुशर्मा । दुश्शासनदै

आदिबंधुसबअद्भुतकर्मा ॥ देशदेशकेभूप द्योसनिशिशं कामानत। दुर्योधनपगपरसि आपनी जीवन जानत। निशिद्योसछत्रछायाचलै तेजअमितगतिपेखिये । रणभूमिभूमिभूपतिगिख्योसोकोउसाथनदेखिये २० ॥ दोहा ॥ श्वेतछत्रकविछत्रकहि तन्योयुधिष्ठिरशीश ॥ बहुतबिसूरेकृष्णको मुखचाह्यो अवनीश २१ (राजोवाच) चौपाई ॥ हुतोसकलदलसो कितगयो । भूपतिबिनवै बहुदुखछयो ॥ रथीअतिरथी शूरअपार । कितगयोसाहनसब परिवार २२ जिनतृणकरिमेरोदललेख्यो । क्षितिपर कोऊशत्रुनदेख्यो ॥ जाकेडरथरथरथरहस्यो । सोईभूपअकेलोपख्यो २३ जाकोक्षितिसबजोरैहाथ। सोभुजपख्यो न कोऊसाथ ॥ यहिबिधि धर्मपुत्र दुखछाये । भीमआदि सबबंधवआये २४ (भीमसेनउवाच) ॥ दोहा ॥ कत दुखकीजैभूपअब क्षत्रीधर्मविचारि ॥ पायपायतुवआयसुहि डाख्योकटकसँहारि २५ हमचूके सेवक नहीं आयसु मान्योशीश ॥ गुणऔगुणजोबनिगयो तवआज्ञाअवनीश २६ चित्तकख्यो फिरिचलनको भूपयुधिष्ठिरराय ॥ पहुंचेतहँबलभद्रतब भूपतिकेढिगजाय २७ ॥ गीतिकाछंद ॥ देखिदुर्योधनपख्यो भुवजंघघाउबिलोकिकै । जानि युद्धअधर्मकोबहुचित्तमांभसशोकिकै ॥ हैगदाके युद्धको यहधर्मचित्तबिचारितौ । अर्द्धतनकटिकैपख्योसोस्वप्नहू नहिंमारितौ २८ ब्योमभूमिपतालभीमहिंहौंनहीं अबछंडिहौं। आजुहीबलआपनेहठिसर्बगर्बनिखंडिहौं ॥ बाड़वानलसोउठ्योकरिक्रोधबहु दुखपायकै । अतिरोषवंत बिलोकिश्रीहरियों कह्योढिग आयकै २९ (श्रीकृष्णउ

वाच) द्रौपदीतबसभाआनीकर्मकर्कशनृपकियो। जंघ
तोख्योमारिकैयहनेमभीमतहांलियो॥ ताहेतुदुश्शासन
संहाख्योआपनोप्रणपारियो। इतिशत्रुबलहीजीत्येइन
सर्वशोकनिवारियो॥ ३०॥ दोहा॥ समझायेबहुभांति
करि सुनिबलभद्ररूोबात॥ कुरुनन्दनअपरात्र्की सुधि
करिकरिपछितात॥ ३१॥ करीबिदाबलभद्रकी उरको
क्रोधनिवार॥ बन्धवपांचौसंगलै निजथलचलेमुरारि
॥ ३२॥ एकदोहिणीदलबच्यो धर्मसुवनकेसाथ। रथच
ढ़िचारोंबंधुयुत तबैचलेनरनाथ॥३३॥ रैनिभयेधृष्टद्युमन
निशिसूत्योसुखबीर॥ द्रुपदसुताकेपांचसुत सूतेअमित
शरीर॥ ३४॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां
कविछत्रसिंह विरचितायांगदायुद्धदुर्योधनवधवर्णनोना
मएकचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४१॥

दोहा॥ सूत्योजान्योकटकदल नन्दिघोषरथलाय॥
दूरगयेलैकृष्णतब पांडुपुत्रसुखपाय॥१॥ उतरेरथतेअनु
जयुत तबहींभुवभरतार॥ धसतकृष्णरथतेतबै उठी
अगिनिकीधार॥ २॥ नन्दिघोषजरिभस्मभो कह्योनकौ
तुकजाय॥ यहलखिकैपांचौअनुज सम्भ्रमरहेभुलाय
॥ ३॥ (श्रीकृष्णउवाच) भीषमगुरुअरुकर्णके शरनद
योरथजारि॥ याकोअबपरभावसुनि प्रगट्योभेदमुरा
रि॥ ४॥ चौपाई॥ जौलगिहौंरथऊपररह्यो। तबलगि
सोबाणननहिंदह्यो॥ जबहौंधसिभुवऊपरआयो। नंदिघो
षतिनशरनजरायो॥५॥ हरिचरित्रतिनऐसोदेख्यो। बर
णयोजायनअद्भुतलेख्यो॥ दुर्योधनजहँरणमेंपख्यो। द्रो
णपुत्रतिहिथलपगुधख्यो ६ (अश्वत्थामाउवाच) दोध

कछन्द॥ आयसुदेकुरुनन्दनमोको। दुष्टहनौंबहुदैसुखतो
को॥ पैजकरीयहिभांतिभनैसो। पार्थयुधिष्ठिरकौनगनैसो
७॥ सेनरहीसोइआजसँहारों। बंधवपांचतुरंतहिमारों॥
जीवतमोहिंपरेसुखसोवैं। आजुसबैयमकोमुखजोवैं॥८॥
चामरछन्द॥ पंचबंधुमारिआजुपंचशीशलायहौं। तबैम
हीपतोहिंमुःखआयकैदेखायहौं॥ बेगिकैकृपालछैनरेश
भागिजोसकै। गाजिकैचल्योबलीसरोषचित्तमांभकै९॥कुं
डलिया॥ बैरपिताकोआजुहीलेहौंदलसंहारि। औरहनौंब
रपांडुसुतधृष्टद्युम्नकोमारि॥ धृष्टद्युम्नकोमारिसकलमन
भायोकरिहौं। बृद्धतरुणशिशुबालचित्तमेंएकनधरिहौं॥
धरिहौंशङ्कनअंककतौंउरसंशयजाको।सोईकरिहौंकाजमि
लाऊँबैरपिताको१०॥दोहा॥चलिसोपहुँच्योदलनिकटद्रो
णपुत्रयुतक्रुद्ध॥ पुरुषएकठाढ़ोभयो तासोंकीनोयुद्ध ११
द्रोणपुत्रकीन्होंतहां दोघटिकासंग्राम॥ बहुसन्तुष्टकियोसु
नर तबकीन्होंबिश्राम १२॥ चौपाई॥ तबतिहिपुरुषदया
बहुकरी। मांगुमागुयहिबिधिअनुसरी॥ जोईबरतेरेमन
भावै। मांगतहीसोमोपैपावै १३ (अश्वत्थामाउवाच)
बीरअबीरसबैअरिमारौं। पांडुसुतनयुतभटसंहारौं॥ य
हैदयाकरिकैबरदीजै। परमअनुग्रहमोपैकीजै १४ एव
मस्तुकरिदीनोजान। गयोकटकमेंगहेकृपान॥ सोतेकुँवर
शिखण्डीदेख्यो। भारतभयतेनिर्भयलेख्यो॥ १५॥दो
हा॥ प्रथमप्रहार्योसोकुँवर धृष्टद्युम्नकोजाय॥ ..मचर
णछातीहन्यो सोवतबीरजगाय १६ उठननपायोबीरसो
मार्योदुःखदिखाय॥ द्रुपदसुताकेपंचसुत तेऊमारेजा
य १७ अर्द्धरैनिलौंसबकटक ठामठामसंहारि॥ एकचो

हिणीदलहन्यो चल्योसकलभुवडारि १८ पंचालीकेसु
तनके शीशकाटिलैहाथ ॥ तबपहुंच्योतिहिठामजहँ दु
र्योधननरनाथ १९ (अश्वथामाउवाच) धर्मपुत्रकोआदि
दै शिरलैआयोंकाटि ॥ दुर्योधनउरसुखभयो ताकेकरते
डाटि २० ॥ त्रोटकछन्द ॥ सुखदुःखसमानभयोजबहीं।
नरनायकप्राणतजेतबहीं ॥ चलिभूपयुधिष्ठिरगेहगयो।
लखिकैदलतेभयभीतभयो २१ (राजोवाच) सुतद्रोणक
हायहकर्मकियो। शिशुमारिकहाअपराधकियो ॥ बहुदुः
खधनंजयचित्तधर्यो। अपनेउरमेंबहुक्रोधकर्यो २२ भ
गिकैअबसोअरिजायकहाँ। अबहींहतिहौंपुनिबेगितहाँ॥
रुकिकैतबहींरथऔरसज्यो। तिहिरोषनहींपलएकतज्यो
२३ सुनिकैगुरुपुत्रभज्योतबहीं। बहुपारथरोषकर्योजब
हीं ॥ तिनजायलयोनहिंभाजिसक्यो। अतिव्याकुलह्वैथह
रायथक्यो २४॥ दोहा॥ अर्जुनयोजनएकपैगुरुसुतलीनो
जाय ॥ जान्योनहींउबारतिन फिर्योसूरसमुहाय २५ उप
ज्योअद्भुतयुद्धतहँकोकाबिसकैबखानि ॥ शरहीशरनभछा
यगोथकेशूरनहिंपानि २६ काटतदोऊपरस्पर बाणसमू
हअनेक ॥ एकब्योममेंएकधर करनफटतहैएक २७ ॥
चौपाई ॥ हारिनमानतदोऊबीर। दोऊसमरबलीरण
धीर ॥ एकहिगुरुपैविद्यापाय। ब्योमथलीबाणनकरि
छाय ॥ २८ ॥ दोऊरणकोतबअलिबढ़े। एकसंगदोउ
विद्यापढ़े ॥ ब्रह्मअस्त्रकरपारथलीन्हो। वहीद्रोणसुतयो
जितकीन्हो २९ उपजीअगिनिदुहुनतेभारी। त्रिभुव
नकंपेनरअरुनारी ॥ हाहाशब्दसकलपुरठयो। महाता
पसुरअसुरनभयो ३० ॥ सोरठा ॥ आकंप्योसुरराज दे

खनबहुआतंकउर ॥ प्रलयहोतहैआज इहिबिधिजगज नउच्चरत ३१ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मबाणक्योंपार्थ सो रण में निष्फलजाय ॥ शीशफेरिकैमणिलई तबदीनोमुकुरा य ३२ गर्भउत्तराकोहन्यो गुरुसुतकैसंधान ॥ भयोमृत कसुततिहिसमै सबकुलदुःखनिदान ३३ कृष्णअनुग्रह सुतजियो भयोपरीक्षितनाम ॥ चलेपार्थगृहकोतबै र हितभयोसंग्राम ३४ ॥ चौपाई ॥ चलेहस्तिनापुरसब आये । नृपधृतराष्ट्रतबैसमुझाये ॥ भांतिभांतिबिनयोक रजोरि । मिटैनहोनीकियेकरोरि ३५ भयेशुद्धपानीतिन दियो । काजकर्मकृतिसबबिधिकियो ॥ रुदनकरैंकौरव कीनारी । दुखदाबागिनितैंपरजारी ३६ तबभीषमसब त्रियसमुझाई । होयरचैजेत्रिभुवनराई ॥ पांडुपुत्रसब पासबुलाये । दिनप्रतिराजनीतिसमुझाये ३७ (भीष्म उवाच) ॥ सवैया ॥ क्रोधवृथानकरौकबहूं न मतो क छुमूढ़नसोंकरियेजू । मित्रनकोअपमानरचो नदयाउर शत्रुनकीधरियेजू ॥ छत्रसदापरस्वारथकीजिय लोकअ लोकनतेडरियेजू । होउहठीनछलीनरनाथ नबित्तकहूं द्विजकोहरियेजू ३८ ॥ छप्पय ॥ दयाराखियेअंकभूलिव्रत हीमनकरिये । चुगलचोरकीसौंहचित्तमेंएकनधरिये ॥ सदारक्षियेताहिशरणशरणागतआवै । भूलिहुचित्तप्र बीणनहींकातरतालावै ॥ त्रियाकाजद्विजगायकेनिजका जनसबपरिहरत । कविछत्रचलतयहिरीतिजोसोनृपता महिमंडलकरत ३९ ॥ दोहा ॥ बिरदबड़ाईपायकै गर्ब्ब नकीजैचित्त ॥ नाबिसरहुहरिकोहिये बिसरायोजनिमि त्त ४० राजनीतितबसबकही भांतिभांतिसमुझाय ॥

छत्रकृपाकरिभक्तबश श्रीहरिपहुँचेआय ४१ (भीष्म उवाच) सकलभईमनकामना कलिमलगयेनशाइ ॥ अंतअवस्थामेंसुखद श्रीहरिदरशनपाइ ४२ ॥ सवैया ॥ लाजसदाबिरदावलिकी कबिछत्रसदाजनकोसुखकारी। धावनिचक्रगहेकरकी कहवानिकहूंबिसरैनबिसारी ॥ के हरिज्योंउतर्योगिरिते अवलोकतहीजिमिकुँजरभारी। वेदकीकानिनसाधतज्यों व्रतराखिकृपानिधिपैजहमारी ४३ ॥ दोहा ॥ करीबन्दनाकृष्णकी भीषमबुद्धिनिधान ॥ प्राणतजेभीषमतबै उत्तरआयेभान ४४ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणे विजयमुक्तावल्यां कविछत्रसिंहविरचितायां भीष्मपरमधामगमनो राजयुधिष्ठिर विजयदुर्योधनबध वर्णनोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

दोहा ॥ तबैराजअभिषेककरि भूपयुधिष्ठिरआप ॥ बैठ्योप्रफुलितपाटपर बाढ़्योअमितप्रताप १ करतानिकंटकराजघर नाशेशत्रुसमूल ॥ छत्रकहैसज्जननके बाढ़ीतनमनफूल २ ॥ दण्डकछन्द ॥ कर्महैंकुकर्मजेतेमिटेहैं अधर्मसब भूतलसकलधर्मसरसाइयतुहै। ठौरठौरदान सनमानघने विप्रनके आनँदनिधानभौनभौनगाइयतु है ॥ यत्रतत्रछत्रकबिकोउनाहींशत्रुरह्यो अस्त्रछांड़िछांड़िसोनढूंढेपाइयतुहै। भूपतियुधिष्ठिरकेराजमेंसुचैनजग मेटिकैअसत्यसत्यधराछाइयतुहै ३ ॥ दोहा ॥ चारि वरणतेस्वप्नहूं परतियरतनाहिंकोय ॥ परद्रोहीनरकृतघ्नी अयशनकाहूहोय ४ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ दरिद्रैदरिद्रीअधमैंअधर्मी। महाशोकशोकैकुकर्मैंकुकर्मी ॥ लसै इन्द्रकीसीपुरीराजधानी। सबैपद्मनीकेमहासुक्खदानी ५

सुहायेअटादेखियेधामधामा । पुरस्त्रीबिराजैंमनोकामका
मा ॥ कहांलौंकहौंतापुरीकीनिकाई । चहूँओरदीखैमहा
शोभछाई ॥६॥ सबैबागफूलेफलेचित्तमोहैं । मनोतेलता
कल्पकीछत्रसोहैं ॥ तहांधामहैंनारिसंयुक्तऐसे । मनोदेव
देवेशकेसद्मजैसे ७ छहूँकालकेवृक्षफूलेफलेहैं । तहांको
किलाआदिपक्षीभलेहैं ॥ कहांलौंबखानौंमहाशोभनीकी ।
तहांशोकशङ्कानशैसबजीकी ८ ॥ दोहा ॥ धर्मसुवनभूप
तिबने आगेबन्धवचारि ॥ सेवतमनबचकर्मसों सकतन
आयसुटारि ६ ॥ गीतिकाछन्द ॥ गोतघाउबिचारिकैऋषि
राजतहँबोलेघनै । व्यासऋषिदुर्वासयुतऋषिराजजोति
षकोगनै ॥ यज्ञतहँहयमेधकीनोसर्बबिधिनबनायकै ।
पार्थलेचतुरङ्गसेनाभूमिजीतीजायकै ॥१०॥ दोहा ॥ आ
थोदशदिशिजीतिकै आन्योबाजीधाम ॥ पूरणकीनोय
ज्ञतहँ सबपूजेमनकाम ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ यज्ञसिरायोसु
रसरितीर । धर्मधुरन्धरगुणगम्भीर ॥ समदेऋषिजेआये
भूप । भूपतिपहिरेबसनअनूप ॥१२॥ जितीहुतीकौरवकी
नारी । ग्रसींसकलदुःखनिसोंभारी ॥ तेसबव्यासमहाऋ
षिराई । लीनीअपनेपासबुलाई १३॥ दोहा ॥ मायावीति
नकेपुरुष दीनेऋषिदरशाय ॥ पतिलहिसबआनन्दयुत
पगनपरींसबजाय ॥ १४ ॥ धसींसुरसरीकेसलिल भईंसु
अन्तरधान ॥ ह्वैहैसोईजोकछू रचिराखीभगवान ॥१५॥
रहेतहांधृतराष्ट्रअरु गांधारीसँगनारि ॥ बहुतबिसूरैंरैनि
दिन सुतकोसोचबिचारि ॥१६॥ एकछत्रमहिभोगई भूप
युधिष्ठिरआप ॥ रामचन्द्रज्योंअवधमें दिनदिनबढ़्यो
प्रताप ॥१७॥ निशिदिनसेवामातकी करैंनशासनभङ्ग ॥

आज्ञाकारीसर्बथा चारोबन्धवसंग ॥१८॥ दृद्धिभईशशि
बंशकी अरुशाहनभण्डार ॥ बाढ्योछत्रबिशेषिकेयदुकुल
बहुपरिवार ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ करिभारतउबरेदशजने ।
अबकबितिनकेनामनिभने पांचौपांडुपुत्रबलवान । छठे
शोभिजैश्रीभगवान ॥ २० ॥ करणपुत्रशोभितबृषकेत ।
मेघबरणबहुबिधिसुखदेत ॥ कृतबर्मायादवबलिबण्ड ।
द्रोणपुत्रसंग्रामअखण्ड ॥ २१ ॥ दोहा ॥ उबरेभारतमेंइते
औररह्योनहिंकोय ॥ जोईचतुराननरची सोईसोईहोय
॥ २२ ॥ सोरठा ॥ करणपुत्रबृषकेतु सुतसरिवरभूपतिग
नो ॥ करिकुन्तीबहुहेतु जाननितांकहँप्राणसम ॥ २३ ॥
छप्पै ॥ नित्यनित्यऋषिराज भूरिभोजनतहँपावहिं । षट
दरशनरनिवास सकलमङ्गलउपजावहिं ॥ सप्तद्वीपनव
खण्ड सकलबन्दीगुणगावहिं । हरषिहरषिमणिमुक्त द्विर
दवाजीगणपावहिं ॥ कबिछत्रसकलभूपतिजपति दीन
ननरकोउदेखिये । भुवभूपयुधिष्ठिरराजमें सोथलथलआ
नँदलेखिये ॥ २४ ॥ दोहा ॥ द्वादशबर्षैबनरहे त्रयोद
शेअज्ञात ॥ मारिकीचकनयशलियो हर्षवन्तह्वैगात
॥ २५ ॥ सबकौरवपरिवारयुत मारेजगयशजीति ॥ रहेह
स्तिनापुरनृपति चारोंअनुजसमीति ॥ २६ ॥ छप्पै ॥ कू
लद्रोणगांगेयसकलकौरवतरुसाजै । बारिजयद्रथभयउ
लहरिरबिनन्दनराजै ॥ कच्छमच्छजलजंतुशल्यतहँभय
उसुशर्मा । भूरिश्रवाभगदत्तभयोतहँग्राहसुबर्मा ॥ क
रिनावधनञ्जयधीरको त्रिभुवनपतिकेवटभयउ । यशति
लकयुधिष्ठिरशीशकरिसोरणसरितातरिगयउ ॥२७॥ दो
हा ॥ जीत्योभारतकृष्णमत तिनहिंसहाईपाय ॥ एकछ

त्रमहिभोगई छत्रयुधिष्ठिरराय ॥ २८ ॥ भारतमुनिभाषा
कियो छत्रसुबुद्धिहिपाय ॥ कहतसुनतपातकनशत अ
घदीरघदुखजाय ॥२६॥ चरिबरणमेंजोसुनै तरुणीपुरुष
जोकोय ॥ प्रगटैहरिकीभक्तिउर मोचनअघकोहोय ३०॥
॥ सवैया ॥ जोफलतीरथबर्तकिये अरुजोफलषोड़शदा
नदियेते । ज्ञानकथानिसुनेफलजो कबिछत्रबढ़ैबहुबुद्धि
हियेते ॥ जोफलसंयमनेमरचे अरुजोफलहैशतयज्ञकि
येते । जोफलरुद्रप्रसन्नभये फलसोईयुधिष्ठिरनामलि
येते ॥ ३१ ॥ सेवतसाधकसिद्धिनको अरुईशप्रसन्नभये
बरपाये । तीरथराजप्रयागगये अरुसागरसंगमगंगअ
न्हाये ॥ योगकियेब्रतनेमलिये अरुऊखलसप्तपुरीनिशि
धाये । यज्ञजपेभगवन्तभजे जपजापसजेजुयुधिष्ठिरगा
ये ३२ ॥ दोहा ॥ अष्टादशौपुराणमें सुनैजगतमेंकोइ ॥
सुनतविजयमुक्तावली तैसोईफलहोइ ॥ ३३ ॥ बरणयोग्र
न्थसुछत्रकबि अपनीमतिअनुसार ॥ क्षमियोचूकबुधी
शसब कबितासमुझनहार ॥ ३४ ॥ छप्पै ॥ मधुकैटभक
लहन्यो हन्योहिरण्याक्षअघासुर । हरणाकशजिहि
हन्यो हन्योधेनुककेशीसुर ॥ बन्धुसहितदशकन्धहन्यो
बत्सासुरजिहिबर । नरकासुरतिहिहन्यो हन्योशिशुपा
लअधमधर ॥ सुतधर्म्मकर्म्मरक्षणकरन महिमानहिंजा
नीपरै । त्रैलोक्यनाथकबिछत्रकहि पढ़तसुनतरक्षाकरै
॥ ३५ ॥ सवैया ॥ ब्यालधरेशशिभालधरे गजखालधरे
तनभस्मचढ़ाये । ज्वालधरेशिरमालकपाल धरेविषकं
ठमहासुखपाये ॥ गङ्गधरेअर्द्धंगगिरिजाढिग भङ्गधरेगण
भतनछाये । ऐसेसदाशिवहोहिंप्रसन्नसो छत्रविजयमु

क्तावलिगाये ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ फौजसुदरबारीलसै भूप
तिसिंहकल्यान ॥ पूरणकीनीछत्रकवि ग्रन्थसुतिहिअस्था
न ॥ ३७ ॥ इति श्रीमहाभारतपुराणेविजयमुक्तावल्यां
कविछत्रसिंहविरचितायां राजयुधिष्ठिरराज्यवर्णनोनाम
त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

छप्पै ॥ तिलकभालबनमाल अधिकराजतरसालछ
वि । मोरमुकुटकीलटकचटक बरणतअटकतकबि ॥
पीताम्बरफहराय मधुरमुसक्यानिकपोलन । रच्योरु
चिरमुखपान तानगावतमृदुबोलन ॥ रतिकोटिकामअ
भिरामअति दुःखनिकन्दनगिरिधरन। आनन्दकन्दव्रज
चन्द्रप्रभु सुजयजयजयअशरनशरन ॥१॥ मोरमुकुटनग
जड़ित हेमकुण्डलश्रुतिभलकैं। मृगमदतिलकललाटक
मललोचनदलपलकैं ॥ घूँघरवारीअलक कौस्तुभकण्ठ
बिराजै । पीतबसनबनमाल मधुरमुरलीधुनिबाजै ॥
करतकोटिआभाबरण सुचन्द्रसूर्य्यदेखतलजत । ब्रह्मदे
वयेभक्तजन सुश्यामरूपप्रीतमसजत ॥ २ ॥ चतुराननस
मबुद्धिबिदित जोहोयँकोटिधर । एकएकधरप्रतिनशी
श जोहोयँकोटिबर ॥ शीशशीशप्रतिबदन कोटिकरता
रबनाबैं। एकएकमुखमाहिं रसनफिरकोटिलगावैं ॥ र
सनरसनप्रतिशारदा कोटिबैठिबानीबकहिं । माहिजन
अनाथकेनाथकी महिमातबहुँनकहिसकहिं ॥३॥ भूमिपर
तअवतरत करतबालकबिनोदरस। पुनियौबनमदमत्त
तरव इन्द्रीअनङ्गबस ॥ बिषयहेतुजड़फिरत बहुरिपहुँ
च्योबृद्धप्पन । गयोजन्मगुणगनत अन्तकछुभयानअ
प्पन ॥ थिररहतनकोउनरपतिनवल रहतएकचहुँयुग्ग

यस । सोइअजरअमरनरहरनिरखि जुपियतभक्तिभग
वन्तरस ॥ ४॥ बिमलचित्तकरिमित्र शत्रुछलबलबशाकि
ज्जिय । प्रभुसेवाबशकरिय लोभवन्तहिधनदिज्जिय ॥ यु
वतीप्रभुबशकरिय साधुआदरबशआनिय । महाराजगु
णकथन बन्धुसमरससममानिय ॥ गुरुनमितशीशरस
सोंरसिक विद्याबलबुधमनहरिय । मूरखबिनोदसुकथा
बचन शुभशुभायजगबसकरिय ॥५॥ सोयाचकलघुपद
लहै कामातुरजोकलङ्कपद । लोभीदुर्यशलहै अशनला
लचीलहैगद ॥ मूरखऔगुनलहै लहैपदिपदिगुणपण्डि
त । शूरसुरनयशलहैरहैरणमेंमहिमण्डित ॥ निर्वाणसुप
दयोगीलहै जोनगहैममतासुमति । सुखभगतजगतज
नलहै करैसुनोबिधिभक्तिअति ॥ ६ ॥ धिकमंगनबिनगुन
हिगुन सुधिकसनतनरीझै । रीझकधिकबिनमौजमौज
धिकदेतजोखीझै ॥ देवोधिकबिनसांचि सांचिधिकधर्म
नभावै । धर्मसुधिकबिनदत्त दयाधिकअरिकहँआवै ॥
अरिधिकचित्तनशालई चितधिकजहँनउबारमति । म
तिधिककेशवज्ञानबिन ज्ञानसुधिकबिनहरिभगति ॥ ७॥
॥ कवित्त ॥ नेहराजरूपराजरसिकरसराजनैन सूख
राजगहिकैउठायोगिरिराजहै । छोटेसेकरनबरअंगुरीपै
धरयोगिरि पूँभीकैसोछत्रहरिलियेगजराजहै ॥ हाथनल
लाईतामेंपहुँचिनछबिछाई ऊँचोकियोहाथसबछबिको
समाजहै । नैननिकीसैननिसोंकहैअलबेलीअलि चोर
चोरखायोदधिकामआयोआजहै ॥ नेकुतोनिहारोप्रिय
प्राणनकोप्यारोअति पङ्कजसेहाथलियेधारयोगिरिभारो
है । प्रेमसोंलपेटीकहैनेहभरीबातअलि लेहुगीलकुटिनेक

देहुरीसहारोहै ॥ कहैंअलिमिलिसबकामआयोआजुबलि खायोरुचिमाखनजोचोरकैहमारोहै। नेहभरीबातसुनिहियहुलसात मन्दमन्दमुसक्यातमुखरूपकोउधारोहै॥ सबहीकेग्वालबालसबहीकेगोधनहैं सबहीपैआनिपरीप्राणनकीभीरहै। सबहीपैमेघबरसतहैंगोलाधार सबहीकीछातीछेदकरतसमीरहै ॥ किधोंमेरोईअनोखोढोटाभागिआनो एरी बीरबोभलेपहारतरकोमलशरीरहै। नेकुयाकेहाथतेगिरीशलेहुक्योंनतुम सबहींअहीरपैनकाहूहियेपीरहै ॥

इति विजयमुक्तावली समाप्ता।
